

কলিকপুরাণান্তর্গত আক্রকানন্দ বোজারিত ভাদশধ্যারঃ হইতে সংগৃহীত। বক্ত্যা বেদব্যাস গোলানী জ্যোতা গৌরসুবাদি ঘ্রিগণ আযক্ত শিশুরাম দাসানুষত্যানুসারে

জীহুগাপ্রসাদ শর্মণ কর্তৃক

भन्नोन्नोनि नानाविध इटम्ब

বিশ্বচিত

প্রকাশক



ৰীবিশ্বস্থা লাহা কলিকাতা,

চিৎপুর বেক্তি বটভলা ১১৫ নমুর জবন। বন ১২৮৪ সালা। ভার ১১ ভারমারক।



| and the second s | ь, |
|--|------|
| | * |
| 2.5% | |
| मिर्वके क्रिकेट | |
| अथ यटणांचा क्रिक्फरक महानी थांख्यांन | . , |
| वर्ष वक्रवानकतन (तार्षा क्रिक्ट क्रिक्ट क्र फंट्रक | 2 |
| अथ जीकृष त्यार्थ गाहे ए संस्थान कार्य अपूर्ण ह | ;TA4 |
| कथ यरणामा क्रिक्ख:क लाएर्ड याहित्व वादन करत्रन | 9 |
| অংশ জীক্তক্ষের প্রতি জীদামের কাতরুতি | 8 |
| कथ अम्मतानी जिक्क्यादक मोजान | C- |
| काथ कीकृत्यकत त्रार्क तमन | • |
| অংখ সুক্তার কারণ তুব'লব জীমতীর নিকটে প্রমন | • |
| क्रव बिह्न यटमानात निक्छ प्रका कानिटल शान | 6 |
| অথ এইক্ষ মুক্ত' রুক্ষ স্থান স্তর্তংক্ষ বারা | _ |
| গোভূবণ করেন | • : |
| काथ ब्रीकृष निकानए। शंभन | ğ |
| क्रथ यरम्पान पुरस्ता प्रमादन विकास हरेया क्री क्रांस्थात मंती | ব্রে |
| ব্ৰহ্মাপ্ত দেখেন | 22 |
| অধ তৃতী জ্ঞীণার নিকটে জ্রিক্ষের সংবাদ দেন | 53 |
| অধ শ্রনিতা শ্রীমতীকে ভংসনা করেন | 3 4 |
| অথ স্থীগণের সম্ভ্রণ | 36 |
| व्यथं भूक वन दक्ति श्रीमाभाषित नियुक्त | 34 |
| काश मधी भारत मुख्याबान भागन अधी नारमा पर्न | 6,4 |
| অখ্ জ্ঞীক্লফ মিলনাদেশ গোপীগণের উপ স্থ চেষ্টাং | 34 |
| च्चच द्व रक द मरचा हेन क्य च द्रव | ÷ |
| জ্ঞ র ধার বেণ্ডে গমন | 34 |
| অথ রাধিকার কুঞ িরিহ | >> |
| ক্ষথ রাধার মে হ | ₹• |
| অধ রাধা কর্ত্ত্ব ক্লের স্তব | 5.5 |
| ज्यथं ब्रिह्म वाधात श्रांक मस्य | 54 |
| • জাথ রাধার স্থাপণ সহিত কুঞ্চলনে প্রমন | 24 |

ऋहि भव ।

| बिर्य क | পত্ৰান্ত । |
|--|-------------|
| অংখ নবনারীর কুঞ্জর বাপ খারণ | 3.0 |
| खर ब्रि क्टक व कुष्ठदम अभन | 5.60 |
| অথ একুমের তামতীর কুঞ্চে বিরহাবতা | २० |
| ख्य कूटक त नवनाती कुछ व नर्भन | ÷ 60 |
| ष्यथ वाथ कृरकः विक् षाः निकुक्षः दन विलाग | 90 |
| অংথ কলক্ষ ভঞ্জনারত | ૭૨ |
| भ्यथ कृत्यः त मृ ष् रि | " |
| व्यथ यटमानात द्वानन | e o |
| অথ নদের আংকেপ | 98 |
| অথ গ্রীদামাদির কাতরুক্তি | -08 |
| অথ বলরামের তাক্ষেপ | 103 |
| অথ বৈদ্যের আগমন | « ৮ |
| ७ थ रेवरमात नाना | 8.2 |
| অথ উগননদ কর্ত্তৃক নারীগণের আছোন ও নারীগ | বের |
| পরস্পাণ ভাষা করণ | 82 |
| ज्य दाहिनो कर्जुक नातीनरनत एक निवा तन | 8.4 |
| অংখ জটিলার নিকটে যশোদ'র গমন | 84 |
| জ্ঞস্ফটিলা কুটিলায় কথোপকথন | . 86 |
| জ্ঞাথ বৈদ্যের কেশ সেজু নির্মাণ | 89 |
| ভাগ জটিলার কে শ সেভু প ার হ ওন | 85- |
| অথ কুটিলার কেশ সেতু পার হওন | 4.8 |
| अथ्य म नाटक जन अ ! निष्ठ देवट । उत्र निष्य | æ3 |
| ष्यथ देव दभाव अनुमा | 42 |
| জ্ঞাইন্দ ভৌকে যুদ্ধামকীর বিনয় | 6-3 |
| অধ আনমতীর সেতু পরীকা স্বীকার ও যমুমার | |
| ं अवदनारमाश | 4.6 |
| জাধ ভাষিতীর যমুনার প্রমন | 69 |
| আৰু শ্ৰীমতীক কেই আছে ডিক বেম | 44- |

| ৰিৰ্ঘণ্ট | পত্ৰাস্ক |
|---|-----------|
| জ্বৰ জীমতী কুকের ছারা স্কুপ দশ্ৰ | 4; |
| নিৰ্ঘণ্ট | পত্ৰ গ্ |
| ভাথ শ্রীমতীর দেতু পার হওন | • |
| काथ 🕮 कृटचंडत (इंडन | 6 |
| च्यथ यटमानात दकादनदङ वनित्रा त्रांशाकूदकत सदस | 1 |
| ভোক্তন | • |
| ष्ट्रश्च रेवटमं त्र विषयंत्र | 64 |
| कनक उक्षनाट के इटका की पठीत कुरक्ष शमन | હ |
| गांचां द्यां कथन | 5 |
| मश्राम मार्क्त धामन | 6 |
| বিল পুত্রের চণ্ডালিনী দৃহ বিবাহ | 90 |
| माष्ट्रिवटकाव्रकार्थाचान | 93 |
| দিল পুত্রের বক্ষরালার সহিত সাক্ষাৎ | 98 |
| গৌরম্থ মুনির প্রশ্ন | 6-3 |
| গোলক ধামের বিবরণ | 60 |
| (भारताकनारथत क्रम वर्गक | 40 |
| গোলকনাথের বিহার | bt |
| विद्राव्यंत्र कुछ्य बौताधात शंभरनात्मान | b4 |
| ष्य श्रीत्राधात द्रथ वर्गन | ¢¢ |
| ब्रीदाधिकाद विद्राष्ट्रात छन्दन भवन ७ विद्राष्ट्री द | |
| नमाक्ता । । | 64 |
| শ্রীমতীর বিরাশার গৃহ হইতে নিজালয়ে গমন | 47 |
| अधिकात निकटि । शत्माकनार्थत भमन ६ | |
| র্যাধকার মান | 3. |
| व्यथ्या महोत राजाधिकाती स्वालीविद्यान वर्ण वर्णन | 22 |
| ব্রীর।ধার পুরে প্রবেদিতে কুক্তকে বারণ ও কুক্তের | |
| इ।वाक्ट⊲ शमन | 24 |
| कृत्यक श्रान खंद शमदन खोनांदयत ब्याय 4 खीनांदर | 13 |
| আও অন্ধনাপ | 38 |

| - " | |
|--|-----------|
| 精结 | Water to |
| শ্রীমতীর প্রতি প্রতিশ্বর ক্রিশাল | ** |
| क्षीशास्त्रत माटन कींचा स्टेश क्षीकचीर सुद्रकृत | [Not |
| श्रममं 🗷 त्रापा कृत्यन्त्र प्रतन्त्रत्र | 29 |
| वृत्यांबद्ध अक्षेत्रांबाकुदक्त विशास क मन्त्र अक्ष्म | 中 《特代明 |
| अहेश कालित बहन स्माहात करतन | ee |
| ক্ষাব্যিরবনে স্থামতীয় জাগানন | 46 |
| अपरी क्काटक महेत्रा शमन ও शांतमक पर्णन | 3*** |
| श्चित्रजी क्षीकृटकृत सब्दर्शनस सून मर्गम क्रांत्रन | 3.03 |
| 👼 ঘটীর গহিত ক্লুম্বের ক্রেণেকখন | 44 |
| व्यक्तिक रेक्ट्राट्ड बकात कानमन | 102 |
| ब्राधीकृटकृत विवास | >00 |
| नेवबाशास्त्र भीवांशाकृतकत्र विश्वांत्र | >-8 |
| रिश्कारक को करफाउ बाग क बाल बाउन क जीवर | ो बोक्कदर |
| क्षारम महेत्र। यक्षामात्रं निकटके स्म | 204 |
| बुक्षानाम्बद्ध विवयन । अभिन्दीत मान | 3.4 |
| श्चिमणीत भाग पक्षारम कृत्मत रहेंचा | F6 |
| we sta Biald sin sous acta | 207 |
| मात्रकक्षमांक हमा द्वार्यां क्यांन | ** |
| वादा इटक्स हु सन्बद्ध गमम | >-> |
| इकोर सूच पुनित्र भूनः कांच् | 4 |
| बुदेशाङ्कदक्त यूपान ज्ञान वर्गम | 3.03 |
| अक्षादबंद गाँउवम | 38 |

सूडी भव गर्नाखः।



श्रथ यरणाता क्रिक्टक जननी था अप्रान । धूत्रा । अप्र अप्र क्री नम्म नम्मन यरणाता कीवन धन, शाकृत ऐक्कलकाति शालीका महनात्रक्षन ॥

প্রার। মনিগণ প্রতি ব্যাসদেব মুনি কন। ছাপরেডে প্রভূষবে শ্রীনন্দনন্দন।। এক দিন প্রভাতে উঠিয়া নন্দরাণী कारण नरत नीलमान कतिरह निर्मान ।। ठाँनमूर्थ ननी सन्त আৰুর করিয়া। যত দেন তত খান নাচিয়াহ।। দেমা দেমা আর দেমা মুখে এই বোল। ভাবদেখে নন্দরাণী ভাবে উত্ত (तान ।) कीव गर नरनी (व नरेटा व्ह्छत । (गांभाटनं श्रास्थ त्मन जानम् ज्ञा । चर्त्र थाकि त्मवर्गन वर्तम ध्र**ण**। अन्य अन्यास्टरत कछ यटभागात पूर्णा। विधि छव व्यानि बाद्ये ধ্যানে নাহি পার। হেন প্রভু যশোদার আজিনে খেলার 🔢 **এই**क्टिश थिनिट्रन जननी महन। द्विकाल उथाय चाउँना (शांभीशन ।। नानजा विमया बन्हा विद्या जिल्लाहमा । हन्भक लिका हक्तावली हस्तानना ॥ वक्रपनी स्टापनी स्वान मिनी। श्रधाना क्षेत्रणी मनी क्षेत्रक त्याहिनी।। आह यह त्मां भी तमे काम कव कछ । गरव कुक्शवाबना कुक्कारव बडा । कीं व नवनी नहेंद्र कटनकन। मिथिए कहिन गट्द श्रेक्त नां हन ।। (तां भोटल दर्शतन आति यं उतां भीता। इहेन कांमहर्या त्नांका कि केंद्र कथन ।। नकत्न नवनी त्मन्न बीकृत्कद्र करत । हुई शंक शांकित्वक जानेमां अवदेत ।। शांति शांति सूर्व মেলি ছাই হাতে ধান। আর দে বলিয়া হরি বারে বারে চান यट्याचा बट्यम इट्ड यून वाश्यम् । शाशीता व्यक्ति छात् त्रिविटल नाहन । मशीमेंप माद्य हित्र नाह अक्रांत ॥ यख ननी ८९८७ शाह निर पनिताद ।। बाटहत्र वहदन कृष्ण स्टब

स्विष्ठ । नृष्ठा काविष्ठणा एटव कमनी विष्ठ ।। हाविष्ट्य मधीनार एवं काविष्ट्य निष्ठि । क्ष काविष्ट्य नार्ट्य अकृतन मधी किए कि कि कि विष्ये वाद्य हता मुश्रुत । (नानीन क्ष क्षण्या कि क्षण्या । काविष्य हें लि कि विष्ये वाद्य काविष्य निष्ये कि काविष्य काविष्य काविष्य निष्ये कि वाद्य वाद्य काविष्य वाद्य काविष्य वाद्य काविष्य काविष्य वाद्य वाद्य काविष्य वाद्य काविष्य वाद्य वाद्य काविष्य वाद्य व

অথ ব্ৰজ্বলৈকগণ গোষ্ঠে যাইতে জীকুষ্ণকে ডাকেন।

ধীৰ-ত্রিপদী। এই বুণে নন্দালয়, নাচেন আনন্দময়, ব্রজনার পুরাইতে ভাব। সন্দোদা রোহিনী ভার, আচেন পুলক কার, হ্নকালে দেখ আর ভাবা।। ইল গোষ্ঠের বেলি যতেক রাখাল মেলি, বলরাম শিক্ষায় দিল সান। বাজিল বলার বেণ্, বেরবে জীবন কানু, খুনি রাণীর কাঁপিল প্রাণ জীদাম স্থুদাম দাম, স্থুবলাদি বস্থুদাম, একত্র হইয়া স্থাগণ চূড়া বাক্ষি খড়া পরি, হাতেতে পাচন করি;বাহির হইল স্বর্জনা বহুসগণ লয়ে সজে, সকলে পরম রঙ্গে, উপনীত নন্দের জন। বহুসগণ লয়ে সজে, সকলে পরম রঙ্গে, উপনীত নন্দের ভবন। সাজিয়ে গোর্ফেরসাজ, বেরবেরাখালরাজ, ধায়ে আদি দিলা দর্শন। জীক্ষ মায়ের কাছে, স্কুড়ণে আনন্দে আছে দেখি ভাবা ক্রিল রাখাল। ক্রমণ্ড ইলিত ছলে, জীক্রগা প্রসাদ বলে, দয়াধার প্রাভু নন্দ্রাল।।

প্রীকৃষ্ণ গোর্ফে হাইতে যশোনার কাছে অনুমতি চান।

প্রার। জীদাম কহিছে ওরে শুনরে কানাই। গোঠে যাইবার বুঝি বেলা হয় নাই। মায়ের নিকটে আছু আদরে বিসিয়া। কভেক ছইল বেলা না দেখা চাহিয়া। এই প্রজবাল কের স্বারি মা আছে। কে থাকে ভোমার মত সদা মার কাছে। চিরকাল আমাদের কিনে রাথ নাই। নিভা নিভা ভাকিকে আসিব ভোরে ভাই।। কিসের লাগিয়া কর এত ঠাকুরাল। নিভাই কে রাখিবে ভোর ধেকুপাল।। রাজ পুত্র

বলিয়া গরব কর কড়। কে তেন নকর আছে কে শহিবে এত এই বুপে রাখালেরা কহিছে ক্রিয়া। উত্তর করেন হরি ঈর্প্ হাসিয়া। মধুরবচনে কন শুন স্থাগণ। কি লাগিয়া হইয়াছ এত উচ্টেন।। ভোমাসবাকার সঙ্গে যাব গোচারণে। ইহার অভ্যথা কিছু না ভাবিহ মনে।। মায়ের জ্লাল আমি মায়ের জীবন: না পারি যাইতে বিনে মায়ের বচন।। আমারে জানিবভাই মাতৃ আভ্যাকারী মায়ের আর্তিবিনে যাইতে না পারি ।। কিঞ্ছিৎবিল্য কর চাহিয়া আমায়। মায়েরকাছেতে আবে হইব বিদায়।।এই কপে স্থা সহ কথোপকথন। মুনিয়া ব্যাকুল হৈল যশোনার মন।।

অথ যশোদা জ্ঞাক্তকে গোর্ডে যাইতে নিষেধ করেন।

भीर्च-जिलमी। भूनि वानरकत वांगी, गांकून रहेशा तांगी, कोरल जुलि लहेल जनत । हानगूरश हुस निता प्र धर्म जूहा हेवा,वर्गाकृत काटकृत धुनांवत । काणिवाधतिन काटलाकृटक्टव চাरिया वल, आबि त्रटड माहि मिव वटम। श्रेमः क्रीमादमञ्ज চেরে, বলে রাণী বার্তা হয়ে,মৃত্ মৃত্ মধুর বচনে। বাপ সব শুন ওরে, আজিকার মত ঘরে, রাখি যাও মোর নীলম্প। **এই यে नीलवुक्त, मदि चदि धार धन, धार्यान्यन नम्दानव मनि।।** ভাবলা আন্তের নতিঃ দরিদ্রের ধন কড়ি, হাপুতির পুত নন্দ-লাল ৷ কত জন্ম জন্ম ধরি, হরগোরী প্রজা করি, পেয়েছিরে ध (इन कुलाल !। शाठीरत्र नत्रन छात्रा, अत्कवादत इत्त्र गाताः क्रियान ब्राव्य करे घाता। खनकीत साथा थांड, जाबिकात मड या अ. नी नम नि जिका निवा त्यादत ।। दनश्चिम मादम त त्यह, क्रास्कृत वाष्ट्रिन त्यांक, मथाधरने करूरन उथन । मारतात का-ন্দায়ে ভাই,ঘাইতে নাহিক চাই,আজি ভোমা দৰে যাও বন बिक्रमा श्राम कत्र, मिरीव (इ महामस, खक्कवर्मन धत्र माम শিশু দৰে তোমা বিদে, নাহি জানে অন্যলনেছাড়িতে না विद्व श्रेष्ट्र भागा।

अकृत्कत थाणि केनारमत कांचक्रिका।

भारत । स्थानिया करमात मूर्थ निर्मुत वहन । विवश रहेन मर्टन यक नथानव।। आधि एन एन केरत नाहि गरंव वानी। यटिक द्वार्थान देश्न जाकून भदानी ॥ जाम। मवाकाद्य क्रक वृति (एयातिन। ना कानि अपृष्ट आंकि कि मना यहिन।। क्तिथ क्रियाटक वृत्ति प्रश्ना वहत्त । क्यांत त्याटकं नाहिशाद আমাদের সনে।। এতভাবি যতশিশু অস্থির ইইরা। কহিতে লাগিল তবে রাণী সম্ভাষিয়া। জীলাম কহিছে মাগো করি বিবেদন। স্বাকারপ্রিয় হয় ভোমারনন্দন ।। বেমন নেখগো कृषि कृष्य व्यान्थन। एकमन क्रानित्व कृष्य नवादि कीवन।। বিশেষত রাখালের আর কেহনাই। ক্লুকেরকারণে বনে সবে तका পाই।। मूनर्गा कननी त्यांत रमाभारनद्वा । रवप दूरव (कित्त नारि योत्र वन ।। मिश्ह वााख जल्ल, कानि कछ कड বমে। বংস শিশু দেখি আইসে হিংসিবার মনে। শুনিয় কা শ্বর বেণু হিংশা যায় ছুরে। পুলকিত হয়ে ভারা সবে যায় किर्द्र ॥ अञ्च छलन छाटल यहि छल्न हा (वन्द निनर्दर মেঘ হয়গো উদয় ॥ তপনে ঢাকিয়া বিন্দু বরিষয়ে জল। সে কলে স্বার্জ্জ হর্রোশীতল। আব কভক্তণ মাগো কহিতে কি পারি। কাত্রঞ্জেতে মোরা বিপদেছেতরি।। ওবে ক্র क्रुमि यनि नारे वादव बदन । क्रुथानत्न क्रम्नित्त (क थाँ। हादव खादन ॥ भिर्मामा इहेटल यन फिन्द कानजन। इश्वेशमान क कहिर्द मधुत वहन ।। वार्श्वाटलत खन्म किया मुहाद कानाई। नकरि शिक्त वन दक दाशित्वकाई।।दक वाँहारव विवशास क्रिया ग्रंजन। त्क क्रित्रद घोत्रवटन मावाधि त्रक्रन।। वटक्त्र छमटत किया कतिरव छन्नात् । विश्वम मागत रेट्ट कि कतिरव পার।। ওরে কাল তোরে ছাভি কে ষাইবে বন। রাখালের व्यान्धन कृति ता कीवन। उदय या वत्नाहि कृष्ठे उदयना वहन क्किंच करिहाह वृक्षि कृषि त्र कार्यन ।। कृषि विदन कार्यादमत কের। আছে আন। সেই হেডু ভাই ভোরে করি অভিনান। আগেতে ভাগর দিয়া বাড়ায়েছ মান। এখন তাহাতে কেন क्य जनमान ।। याचानिया श्वाद वर्लीह इहेकथा। जाशह्य

नमतागी श्रीकृष्टक नावान।

পরার। গোপালে লইরা রাণী যতনে সাজায়। মরি কি लूम्बर गाटक नवरन कांत्र ॥ धना तानी श्रीपुर्वे कृष लट्स কেংলে। চাঁদমুধ মুছাইয়া নেতের অঞ্চলে॥ অলকা ভিলক। দিল নাগিকা কপালে। চল্দনের বিল্পু মাধা কিবা শোভা ভালে।। नग्नरन अञ्चन मरनागांध भन्नाहेल। क्रेयन दिनारमञ्जा বালি মাথে দিল।। চুড়াপরে শিথিপুচ্ছ গুঞ্জকারদিয়ে। এক চিত্ত হরেরাণী দেবে নির্থীয়ে।কোকতে কিন্ধিণী সহ ধড়া বান্ধি দিল। অপুর্কবসন আনি পৃষ্ঠেতে আটাল।চরণেপরায়ে দিল মধুর সূপুর। হাতেতে বলয়া ভাড়মুবর্ণ কেয়ুর।।গলাতে स्रवर्भ भात कर्षिक कुछन। स्मरघटक विक्रनी यमरेशनवानमन हरेल (यक्तल कल कि कहिव डांशा (यांगीनन क्ल्लाम्य वाक्षः कद्र यादा ॥ धरेक्टल मांबाहेश नत्मत्र घत्नी। दान ख्टि व्यक्तिया व्यव्य मिटनक शावनी ।। शावनी कटब्रट्डान्या वल नन्त्यांगी। अहे दिएन अक्वाद नाइ नीनम्नि। माद्यद वहरून इविनाट आवर्षत्र। तम् मृद्य दिन्ति मृद्य दिन हम् कार्त ।। एटव त्रांनी क्योदनद नवभीनहेंगा। श्रष्ठांत कक्टल किंछू बिटलैन विश्विता ! जात शद्य क्रक्शमार्थ बारकन तकन । वाम-नावि समनीम कति छेळाडुगामीश्रीमधा पित्रा चाटन काएविक

करत । छ।हम पूछ । अङ्मीत चन्न यादवसूरत ॥ अवटमाय वाम কর অঞ্লী ধরিয়া। দভাঘাত করি রাণী দিলেক ছাড়িয়া !। সায়ে দভাঘাত করে যাথার শরীরে। অভে তার অঞ্চেদন্ত यगांहेटल नारत ।। अहेबारण नानाविध कतिया तकन । कानी कीं करत दांनी मात्रि नांदांशन ॥ आहे यह क्षांतृष्ठ रंगाशा-लिनी हिन । नवाकांत्र अवधुनि कृष्ण्यां एकिना नवाकारत कन রাণী করিয়া বিনয়। বনেযান আৰকাক ভাল যেন ব্রাঞ্জত का नीकीन श्रीभी कड़टमा नकटन। नमा (यन त्यांत क्रूक थी। करत कुन्ता ७ व यटमामछी पति त्राभारतत करत । करत कर्त्व वलश्रांटम ममर्भन करत्। ध्रत वाश वल्याम लहरत् कोवन মা বলিতে ঘরে আর নাহি অন্যক্ষন।দেহ হৈতে প্রাণ ভানি मिञ् छोत्र चारत । तथर कार्टे दिश स्मात्र निवा नारत ।। श्वातान कानाई त्यांत्र किছू नाहिबादन। পथज्ञदन जूनिभाटह यात्र अन्न वत्न ।। वन्याम कन मार्ता किছू ना ভावित ! স্বাকার প্রাণ ক্ল নিতান্ত জানিবে। স্থির হও না ভাবিহ शुन्ता कननी । जक्ताकाटन कानि निय (जात नीमप्रा)। बारकक विनिष्ठा कृत्य लाइ मिथुशन। धवनी श्रामनी ब्रदेन ক্রিলা গমন।। বে অবধি গোষ্পদের ধুলা দেখা যায়। अनि स्मारव हरत तानी अक्टूरिक हाता। विक करह बात करण जार त्शं क्रमी। विषयंत्र कारमा कारव त्मर मीलम नि।।

এক্রকের গোর্ভে গমন।

লঘু-ত্রিপদী। নহ শিশুগণ, নন্দের নন্দন, গোধন সইয়া
যাই। নাচিয়ে গাইয়ে, বালী বাজাইরে, আনন্দের দীমা
নাই॥ চৌদিকে রাখাল, মাঝে নন্দলাল, বলাইয়ের গলে
খরি। ত্রিভঙ্গ ভলিতে, নয়ন ইলিতে, চলে অতি ধীরি ধীরি
দেখিয়া দে ভাব,উঠে কভ ভাব,বে জন যেমনভাবে। আইরপে
মরি মরিং কি রূপ যাখুরি, ভূবন ভূলালে ভাবে।। এইরপে
হরি, বংশু সঙ্গে করি,গোঠ মাঝে উত্তরিলা। যয়না পুলিনে
লয়ে স্থাগণে, আনন্দে দবে চলিলা। যতেক রাখাল, লয়ে
ধেনুপাল, খাওয়াইরা তুণ জলা দবে করি মেলা,জার ভিলা

(थना, रात काछ क्षूर्ण।। इस कन छात, भून मधा मात, धक थिना छाट छ है। वरमान मान, किया मूक्यां तन, कर्त्य करत माका है। बक्था मूनिया, मका रामिया, किर्छ इतित करत माका है। बक्था मूनिया, मका रामिया, किर्छ इतित की है। वरमान मास, मुक्जा एक माका रव, मुक्जा को ना भारत हो । वरमान मास, मुक्जा छात, धक मुक्जा भाडता छात । छात । छात । छात । छात मान वर्षा ना ना मान भान, मुक्जा भाव (काथा छोत । इति भूनः कन छन मथानन, बक् मुक्जा भाव । इस्न मछान किर्त छथा। इस्न मछान किर्त छथा। इस्न मछान किर्त छथा। इस्न मछान किर्त छथा। एक मछान महान महान महान महान किर्त छथा। छात छ । छात छात मान करत मिर्छ मुक्जा कर्ज (मार मान भाव)। कर्ति कम इति, यार खता कर्ति, यथा छात्छ कमिनो। क्रित स्मान माम, बक्मिन कामा कर्ति पान हिस्स हाथा छात । कर्ति स्मान माम, बक्मिन कामा हिस्स कामा ध्वा कर्ति, यथा छात ध्वा क्रित माम, बक्मिन कामा हिस्स काम ध्वा करति, यथा छात ध्वा क्रित माम, बक्मिन कामा हिस्स काम ध्वा करति, यथा छात ध्वा करति । क्रित स्मान माम, बक्मिन कामा हिस्स काम ध्वा करति। क्रित स्मान माम, बक्मिन कामा, क्रित हिस्स स्मान ध्वा करति। क्रित छात स्मान छात, सून हिस्स स्मान छात । क्रित स्मान छात, सून हिस्स स्मान छात, सून हिस्स स्मान छात । हिस्स सात ।

মুক্তার কারণ স্কলেক রাধিকার নিকটে গমন।

পরার ! শ্রিক্ষের বচনেতে সুকল তথন। শ্রিমতীর নিক্
টেতে করিল গমন॥ বিসাম আছেন প্যারী রত্ন সিংহাসনে
র্ন্দা আদি সথী সহ আনন্দিত মনে ॥ হেনকালে সেইস্থলে
সুবল আইল। তাহারে দেখিয়া প্যারী জিজাসা করিল।।
গোঠে ছিলে একা এলে কিসের কারণ। কোথায় কালিয়ে
সোণা সে বংশীবনন।। সুবল কহিছে ওগো খুন ক্মলিনী।
গোঠেতে বৃণিয়া আছে সে রতনমনি।। গো ভূবণ কালাচাদ মুক্তাতে করিবে।। পাঠালেন হোমার কাছে মুক্তা
দিতে হবে। এক্থা খুনিয়া প্যারী লাগিল হানিতে। গরুর
ভূবণ হেতু র্ক্তা হবে দিতে।। অহলারে শ্রীমতীর জ্লাইল
শ্রম। বুরিতে নারিল কিছু প্রভুর বিক্রম।।পরিহাস ছলে
কত উপহাস বরে। কহিতে লাগিল তবে প্রল গোচরে।।
বহুমুল্য মুক্তা এত কেলিকদম নয়। কেলে মেলে হারাইলে
কতি নাই হয়।। স্বাভিজ্বলৈ সমুক্তেতে সুক্তির ভিতরে। বে

युक्तां खनात्त्रं लाश किंव ताथात्मद्राह्मां लिए थात्क रवलू तार्थं त्करंत वरन वरन । युक्कात करंडक यूना ताथात्म कि ज्ञान ॥। विक लम् मद्रम यात मेना महवाम । विक जिल्ला कथा पूर्वं खाहित्म हाम ॥ व्यवत्ति १९८म एता भएड कमिनी । खिल मात्म स्वराम हाम वर्षे पाति । वर्षे कि कर्रम तार्थे । युक्का हम वर्षे मूना कम्मा कामाने ॥ वर्छे विम वर्षा हित्र करिन अमन । कृत्युक्त किंका अमन । कृत्युक्त किंवा मात्म वर्षे मात्म मात्म मात्म वर्षे मात्म मात्म

ক্ষা যশোদার নিকটে মুক্ত। আনিতে যান।

পরার। সুবলের মুখে শুনি এসব কাহিনী। কুপিলা অন্তরে তবে দেবচক্রপানি।। দর্গহারি ভরবান বুরি অহন্তার হরিতে রাধার দপ করিয়া বিচার। সুবলে কহেনপ্রভু সান্তন বচন। শুনই স্থা জুনি স্থিরকর মন। কান্দারেছে ক্র্মালনী ভোমারে যেমন। নিশ্চর জানিবে প্যারী কান্দিবে ভেমন।। এত বলি স্থারণণে রাখি সেই বনে। আপনি চলেন হরি যশোদা সননে।। স্লেঃমুখে মা মা বলে উত্তরিল নিরা। ভাহা দেখি নন্দরাণী আইল ধাইয়া। টাদমুখে চুম্বদিরা কোলেতে লাইল। বাস্ত হরে কানায়েরে জিল্পাস। কারল।। হাঁরে ক্লম্থা একা আলি কিনেরকারণ। কোথা দাদাবলয়াম কোথা স্থা গণ।। জন্দ করি বুরি আদিয়াছ কারসনে। কে করেছে অপ নান মোর বাছাখমে।। ক্লম্বন করি।। বংসগণে সাজাইতে সাধ হৈল মনে। সেই হেছু আইলাম ভোমার সদনে। মুক্রা দিরে গোভ্রণ করে দিব আমি। অত্এব আমারে মা মুক্রা

(एमर जूमि । एममा देनमा दनि इति युक्ति त्रांपन । नन्तरानी वरनदाश अ चात कमन ॥ चरतरत जावान एक त व कमन থেলা। গরুর গলার দিবে মুকুভার মালা।। এক মুক্তা ব্ছ মুল্য ও নীলরতন ।। নহেত গাছের ফল দিব ভতক্ষ। মুত ঘোল নহে বাছা যুক্তপার খাবে আয় ব্রহ্মবালকেরে ডাকিয়া খাঙাবে।। মায়ের কথাতে ব্যথা পাইয়া অন্ধরে। কান্দিয়া कटरन कृष्ण कननी श्लाहद्वा। युक्ता देशल रङ्गूला व्ययूना कांश्वन । नाहिनितन धनि छ्व याहे जना छान ।। मृङ् (इड् যমুনার পারে আমি যাব। মুক্তা লাগি পরের মারে মা বলে ডাকিব।। নতুবা অনবী এক মুক্তা দেহ তুমি। রোপণ করিয়া মক্তা রক্ষ করি আমি।। মুক্তা রক্ষ করি আমি মুক্তা কলাইব। যত মুক্তা চাহ মাতা তত আৰ্থন দিব।। রাণী বলে कार बाथ (ছেলে এতে कि इक इश्र। भगाशीन सूक्ठिन हके बिनी নয়। ব্রমপুরে ঘরে ঘরে কভ ছেলে আছে। কপাল ক্রণেতে विधि मलान निरस्ट ।। कृषः वृत्त जानि मार्गा यक मसा মোরে। বাজেছিল চারিকজা নবনীর তরে।। তোমার যভেক স্নেং আমা প্রতি আছে। ব্রজের মতেক লোক নয়নে प्रतिक्षा **अंड विल वनमानी. कान्मिट** नानिन। छा मिथिया यरणांनात नत्रा छेपिछिल ।। कर्नरेट्ट अकन्छ। नहेन्न। ख्यन । क्रूटकृत करतरङ खरव खर्मन करत्रन ॥ तानी वरल कुक् যদি না পার করিতে। নবনার মত পুনঃ বাবিব করেতে।। কৃষ্ণ ভাবে জননীগে! বান্ধিবে কি তুমি। বিনঃ টোরে ভোর কাছে ৰান্ধ আছি খামি।। তবে হরি হর ্ষত হইয়া তথন। নাচিতে২ গেল যথা স্থাগণ । কুক কন আনিয়াছি মুকুতা त्रजन। कर्णम कर्ड चाहै करिय (तार्था । स्थान तार्थादनत বাণী বত শিশুগণ। বয়ুনার তীরে ভূমি করিল খনন। জল দিয়া কর্দিন করিল কুজুহলে। আপনি রোপিল হরি মুক্তা সেই স্থলে।। যার মায়ার অনিতাকে নিতা করি মানে। মুক্তালতা কোন তুল্ছ ঘিন্দ কৰি ভনে ।

কৃষ্ণ মুক্ত বিক স্থলান্তর ভংকল ছার। গোভ্যন করেন।

भीर्घ जिल्ली। मुख्यादिशालि कर्फारमद्द्र,श्रीत बदल महत्त्वार्छ अकृत छाहार कमामन ।। भूमह अपूर्व कथा, व्यक्षित्वर भाका, क्राटम नहा विष्टि नोशिन। मोश्रीशादी माहा देवन कर्वक मक्न रेश्न, कृषिन नजांत्र यह कृत। अस्त्रास्त प्रितन ব্রজ, ভুচ্ছ করি সরসিজ,লোভেতে ধাইন অলিকুন। ব্রজেতে নিবদে যারা, পুষ্পাগন্ধ পেরে তার্য, বলে ফুল কোথার ফু छिटह ! किह वटन भाविर्वातन, किह वटन ब्रुग्नावतन, भूत्रा शक्त चारमाम करतरहा। (रुथा पूष्प रेरल वामि, युक्पेश्दत রাসিহ, ভোলে মূকা যভেক র খাল। তথে সে চিকণকালা, আপনি গাথয়ে মালা, আর যত ব্রজের ছাঁঞাল। জ্রীদামের ভবে ছবি; কহেন বিনয় কবি, আন রংস সাজান মুক্তাতে ! শুনিয়া হারর বাণী, শত শত বংগ আগনি, মূকা দিল বংগের পলেতে । বৃক্ষ পার্ম দেশ, মূক্তার করিল বেশ, প্রতি লোমে মুকুভার হালি। শৃঞ্চে আছতি নাশামূলে, গেথে দিল স্কাত্রে, নাচে শিশু দিয়া করতালি।। শতচন্দ্রি জিনি আভা, এক এক বংগ শোভা, দেখি সবে আননিদ্ভ মন পরে ভুলি মূক্ত'ফল, ২টে অভি কুছুহল, কুফেরে গাজান সর্বাদ্ধ । ক্ষে আলৌন্দত মনে,মৃক্তা ভুলি তছক্ষণে,স্থাগণে पन मोक्षांका । यहत कामरना क (कांद्र, आस्मारमह नाहि প্রত্যান বিশ্ব বার্থি ক্লান বলরাম, উচ্চারিয়। ছবিনাম, লাতে গায় দেয় করতালি। এতগাপ্রানাদ কয়, बनादत र लक्ष्म, य'त गर्था श्रञ्जू वनम'ली ।

क्रिक्टरक विकाशित्र शमन।

नेपूर्णियानी। युक्छ। न याः १ दिव ६ हेताः सूर्यं करत गट्य किनि। असन मम् । सूर्या खड इयः, खावमान देश्न विनि विना देशन (भवः, विश्वि क्वी दिन्न, मथा खिछ एटव क्या । धूम गथानंत्, कितां आधिन, हन याहे निकालक्षा। बानी युक्ना निला छाट्य बुक्क देशन, क्वांन वस्त्र बुक्न। हल याहे घट्यः, विना भारत्व, क्वांन खानि एत्नन ॥ खांत्र किस्तू मिल्ल ভুলিয়া সংপ্রতি, লেই র্য পুর্চে করি। খুকুতার ভারে, দিব जननीरत, रम्यूक खरणत नांद्री। এতেক বলিয়া, युक्छा जूलिश गाँचिश सुन्मत रात्र। रात्र कुन्ती, त्र शृत्वं जुनि, तेनम मृद्य ভाর ভার ॥ ভবে শিল্পন । इटेट्स मिलन, आदा निम्न উচিঃ স্বরে। মাঝে রাম কাল্ল, বাজাইয়া বেণ, , আনন্দে চলিল ঘরে।। যাইতে যাইতে, দেখা আচ্মিতে, এনতীর স্থীসনে **दिश्य मंद्रहती, देवील भीर्दा, उमल्कात मानि मदन।। दिश्य** মুক্তাচয়, হইয়া বিশায়, রাধারে কহিতে গেল। হেখা নন্দলাল, ললী ধেকুপাল,নিজালয়ে উত্তরিল।। শুনি বেণ,ধ্বনি, নন্দের घत्री, वाश्ति श्रेल (४८३। (१८४ मूळामञ्ज, श्रेमा विश्वान, अक पृट्छ द्रदर (हट्स । एटव नम्पतानी, लट्स नीममान, हास-মুথে চুম্ব দিয়ে। বলে ও রতন, একি রে রতন, হেরি নাই क्रमिद्य ।। वर्ग काथा शामि, अद्य वस्मानी, अ (इस अपूला निधि। किवा ভোরে দয়া कत्त्र ভवकाয়ा, किवा मয়ा करत विवि ॥ श्रीकृती धनारन, मरनत आख्नारन, करह मून নন্দরাণী। কিবা ভাব বিধি, বিধাতার বিধি, ভোমার এ नोलयणि॥

> यरणामा मूख्या मर्भारत विष्यत इहिश श्रीकृत्यत्र । भारतीरक बन्तास्य रमस्थित।

পরার। কৃষ্ণ কন শুন মানো করি নিবেদন। তোমার প্রসাদে হৈল মুক্তার ধন।। দিয়াছিলে যেই মুক্তা করিছু রোপণ। জানাল অপুন কৃষ্ণ মুক্তালভাবন।। তাহাতে ফলিল বছ মুক্তা রাশি রাশি। আপন চক্ষেতে মানো দেখ ভূমি জালি।। এত শুনি যশোমতী হয়ে চমকিত। চাললা কাননে তবে রোহিণী সহিত।। যমুনার তীরে দেখে অপুর্বি কানন। তার মাঝে শোভা করে মুক্তাণতাবন।। বালমল করে কল অমূল্য রতন।হেরিয়া বিসায় হৈল যশোদার মন। রানী ভাবে এ কর্মত মন্ত্রের নয়। পুরভাবে জননিল কোন মহাশয়া। ভাবিত ভাবিতে হৈল জ্ঞানের উদয়া দিব্যক্তানে দেখে রাণী হইয়া বিশ্বময়।। বিশের আধার প্রভূ বিয়াট জাকার।একেই লোমকুপে ব্রুবাণ্ড বিস্তার।। আক্রাশ পাতাল ভূমি ক্রমণ নাগর। নাগ নর দেবাসুর গছরে খেচর।। বিধি ভব সাগর
বর্গ ভ্তাশন। অরুণ কুবের যম সোম যড়ানন।। কত শত
পৃথিবীতে দেখে কত জার। কতশত রুদ্দাবন মধ্যেতে
তার্গার কতশত নন্দ্রঘোষ কত যশোমতী। কতশত থেলুপাল
রাখাল প্রভৃতি।। কুফের শরীরে সব নিরীক্ষণ করে। জারাল
বিষম ভর রাণীর অন্তরে।। সাক্ষাতে পরমন্তর্জা পুরুষ রতন।
ভব করিবারে রাণী করিল গমন। বুঝি জননীর ভাব প্রভু
জগবান। মায়া বিন্তারিরা পুনঃ মায়েরে ভুলান।। কেয়ুন
কুফের মায়া আশ্চর্যা কথন। দেখিতে বৈধিতে রাণী ইল
বিশারণ। শুচিল কৃষর ভাব পুত্র ভাব হৈল। বদন চুয়িয়া
কুফে কোলেতে করিল।। আশ্চর্যা মানিয়া ভবে রোহিনী
সহিত। আপন আলারে গেল হয়ে হর্ষিত। প্রাচুগ প্রিয়াদ
বলে ভন সর্বজন। এখানেতে প্রীমতীর কহি বিবরণ।।

দূতী কর্তৃক জীয়াধার নিকটে জীক্তকের গংবাদ দেন।

ধুয়া। শুনশুন ওগো রাধে পিরীতের প্রশন্ন হলো। শাধের মন্দিরে বিষাদাসি প্রবৈশিল।। নাহি জানি কি কারণ, কালচাঁদ হৈল হেন, আমারে হেরিয়া কেন বাঁকা আথি কিরাইল।।*

পরার। তেথা দৃতী মুক্তমালে দেখি গো ভূষণ। লোক
মুখে শুনিয়া যতেক বিবরণ। জাত হয়ে শ্রীমতীর নিকটেতে
গিয়া। কহিতে লাগিল কথা বিশেষ করিয়া।। আজি গিয়াছিমু আমি নন্দের ভবন। পথেতে দেখিয়ু যাহাশুন বিবরণ
আদিতে আদিতে পথে হেন জান হয়। অকন্মাৎ পুর্কাদিকে
লক্ষ চন্দ্রোদয়। স্থাকত হইয়া আমি য়হি দেইখানে। আন্চর্যা
দেখিয় রাথে শুন বিদামানে। গোর্চেইতে নন্দস্মত গোধন
লাইয়ে।। নাচিতে নাচিতে আইটো সেই পথ দিয়ে।। মুক্তা
দিয়ে মঞ্চিত করেছে থেয়পাল। মুক্তার মঞ্জিত আর যতেক
য়াথাল। তার মাঝে মুক্তায় মন্তিত রাম কামু। মৃত্ মৃত্
গমনেতে বাজাইছে বেলু।। কি কব ভাহার শোভা নাহয়
বর্গন। শভ শত চক্ষু হৈলে করি দরশন।। আর কত ম ক্তা

ভার রুষ পূর্চে করে। লইয়াছে জননীরে ভেটিবার তরে।। মৃক্তার আভাতে আলো হৈল চমৎকার। নিশিতে চল্ডিমা र्यन इत्व अञ्चकात ॥ दन्धिया गल्लक्षेत्र इहेनाममत्न । अवश्व আনিবে মুক্তা ভোমারকারণে। আপনি করিবেহার ভোমার ভূষণ। আমরা করিব সবে স্থাথে দরশন।! কিন্তু রাধে কালা **ह**ाँ हिंदि । चार्यात्व द्विश इति किताईल चौथि।। (भट्य छनि लोक्युर्थ नवविवद्रन्। सुवत्न भार्तास ছিল মুকুতা কারণ।। ভূমি থারে এক মুক্তা নাহি দিলে প্রারী। আরু কত করেছিলে উপ্রাস করি॥ সেই অভি-मार्टन मरन रक्तां थिक इहेशा। नन्नतां नी ऋारन मुख्या हाहिशा লইয়া ।। যমূনার তীরে গিয়া করিয়া রোপণ। স্থান করিয়া उथा मुख्य नुवादन।। भूटन कमनिनौ टेहन दिवश दमन। অবাক ইইয়া মূবে মা সরে বচন ।। রাধা কন সুক্তা জভ नाहि छावि छृध्ये। वृति नम्पयु अादत स्टेल देवपूर्थे।। शक्र আমি কি কহিলাম স্থবলে ভগ্নিয়া। মুক্তা না দিলাম কেন ভ্রমান্ধ হইয়া।। ভুচ্ছ ধন হেডু কৃষ্ণ ধনে ভুচ্ছ করি। ধিক এ जीवरन चामि किन खान धात ॥ त्माना किन मिलाम कि অঞ্চলেতে গিরে। প্রমন্ত হইয়া পুন্য না চাহিত্র কিরে॥ দোষে রোধিয়াছে ছরি আদিবে কি আর। ভবে বল এ कीवटम कि कल आभात ॥ वन ब्रांश महहादी कि कदि छ-পার। জীক্ষের বিরুহেতে বুঝি প্রাণ যায়।। কি করিতে কি হইল না বুঝি কারণ। আমারে তাজিলে কি হে জীমধুপদন এত বলি কপালে আঘাত করে প্যারী। দিল বলেকর্মঞ্চে श्वाहरल श्वा।

ললিতা এমতীকে ভংসন। করেন।

ধ্য়া। এখন কান্দিলে রাধে উপায় কি হবে আর। হারাইলে নটবর ভুমি দোষে আপনার।।

, भीर्घ-जिन्नो। তবেত लनिका धनो, करिएह छ९ निना वानी, अभिकोद्ध करित मध्योधन। मुक्ता वस्त्रमा करित, अभूना

कदित्त रति, ভाবित्न कि रहेरव अथन।। मुख्या रहकू सूदन এলো, না পাইয়া কিরে গেল, লোকে মুধ দেখাব কেমনে। পভিল বিষম দায়, নাহি দেখি সছপায়, হারাইলে বৃঝি কৃষ্ণ धरन ।। आत नाशाहरत राधा, ना आतिरत राह मथा, अधान कर्तित वितामिनी । खक्रनाथ काश देकन, नकलि विक्न टेहल, वल मिर्चिक कडिटव धनी।। अश्वाद हरत्र मन, পাদরিলে সব তত্ত্ব, জনিতা ভাবিলে মিভাধন। ধন মদে মন্ত ছিলে, উচ্ভি তাহার পেলে, দর্পহারী জীমধুরুদন।। শেই যে নীপরতন প্রকার ছল ভ ধন ভুচ্ছ ধন হেভু ভুচ্ছ কর। যেমন করিলে গর্কা, হইল তাহার থর্কাণ এখন কান্দ্র नित्रहत ।। श्विन लिल्धांत वांगी, कांन्सि कट्ट कमलिनी अखcaco शहिया यांचना। क्रत्येव विवह **क्र**त्व, मना पिर नर्का কেনে, আর তাতে কর না লাঞ্চনা।। প্রবিশে কালার কথা। শ্ৰদয়েতে পাই ব্যথা, প্ৰাণ সদা কান্দি কান্দি উঠে। সে क्रानाश करन मति। पिन्नभारका महहती। काछ। घारत नवरनद ছিটে।। হয়ে আছি শ্বাকা:,শবের উপরে আরু, অস্রাঘাত করিলে কি হবে। একণে উপায় কর, মিলাইয়া নটবর। त्रांशाद्व किनिया वार्थ मृद्य । तामहन्त भूद श्रम, अक्रिर्शः खनाम नाम, खनदार जादि वनमानि । द्रविशा जिलमी एक, भाँ। होनी कतियां वन्त, श्रंष्ट्र करत मुक्तावनी।।

मथीशदनत मञ्जना ।

পরার। রাধাকে কাতরা দেখি যত স্থীপণ। মন্ত্রণা করিয়ে ক্ষা মিলন কারণ।। রুদা করে ললিতা গো শুনহ বচন। গত অনুস্কুচনাতে নাহি প্রয়োজন। ক্ষের বিরহানদ হইয়া প্রবল শুকাইল রাধিকার শ্রীমুখকমল।। জার তাহে বাক্র অসুচিত তায়। একাণে মিলন হেতু ভাবহ উপার।। এমন উপায় তার করহ এখন। রাধার সন্মান থাকে মিলে কৃষ্ণ ধন।। কালি প্রাতে উঠি জল ভানিবার হলে।। চল সবে হাই মোরা যমুনার জলে।। জালের হলৈতে গিয়া মুকুতার বন। যত মুক্তা লতা পাতা করিব হরণ।। মূল সহ

बुक्तर्वन तकर्ण कीनाबान नियुक्त ।

मीन-जिलमी। अर्थात्मण नांद्रावन, कानिया नथीं व मन, প্রাভঃকালে উঠি ছবা কবি। হয়ে অভি জ্ঞভমন, ৸য়ে লয়ে নথী গণ,গোর্চেতে চলিল নরহবি॥ ধবলী স্থামলী ববে,ধয় বজ্ঞ লয়ে তবে, উপনীত যথা মুক্তাবন। দেখিয়া অপুর্বি মতি, হবিষ হইয়া অভি, জ্ঞানমের প্রতি হবি কন।। শুন মধা মোর বোল, নাভি হও উতরোল, বংসের চারল আমি করি। হয়ে অভি সাবধান, বক্ষা করমুক্তা বন, কেহ যেন নাহি করে চুরি।। এতবলি জনাদিন, সমপিরা জানে, জিলামাদি আর শিশুগলে। বলরামে লয়ে সনে, নিভ্ত নিবীজ্বনে, গোলা হরি বংসের চারলে।। এইবাপ নম্মুক্তা মনে ভাবে কত মত, লীলা করে কত কব ভাব। আনাদি অনম্ভ বিজু, আন্থের নাথ প্রভু, যার লীলা ব্রদ্ধাণ্ড বিস্তার।। জ্ঞানিসাদ বলে, জ্ঞান্ত পদতলে, দয়া কর ভক্তবঙ্গল শিশুর পুরাও আশা, কর প্রভু নিজদান, আন্তে দিয়া চরণ কমন।

नथीतरात स्कावत्म गमन ७ श्रीमारमत मर्ग।

•प्रा। आकि धरा श्रिन जान मनदहाता नाती। जाकिन खर्मान अद्य यर,जातिज्ञित ॥ श्रिकानिया जातिज्ञति, क्र्यूक्ष्मन कत्र प्रति, नाजान श्रिन नत्रहति, स्पष्टे ज्ञाति ॥

পরার। जन आनिवात हटल एउ मधीन। उपनी उदेश গিয়া যথা মুক্তাবন।। দেখিয়া মুক্তার শোভা অতি মুশে।ভন अक हिन्न इट्स मृद्य करत निजीकन्।। अवाक इहेम्रा मृशी कि-ঞিং রহিয়া খিরে খীরে মুক্তাবনে প্রবেশিল গিয়া।।মুকুতা হরণ হেতু করিয়া মনন। চমকিত হয়ে সবে করেন জমণ।। হেনকালে ক্লাথালেরা দেখিয়া সত্তর। কের কের বলি শব্দ করে খোরতর ।। অসি ঢাল খাড়া টাঙ্গী হত্তেতে লাইল। व्यां छटवटम महिनटक थाइँयां चाइँम ॥ होनिटक (घ्रतिद्य मदव করে মহা সোর। কেই বলে দেখো রেন না প্রায় চোর।। কেহ ঢাল খাড়া বাাপে কেহ যোড়ে ভীর। দন্ত কটমট করে কম্পিত শরীর।। কাট কাট মার মাব বলে কোনজন।কেহ বলে করে করে করহ বন্ধন II কেহ বলে সাবধানে ধর cetal নারী।খাজির করিব সয়ে কংস বরাবরি।।এইকপে রক্ষকেরা क दि ए एक न। महा खरकत दिन मूक वन ॥ (मंचित्र) স্থীর মনে উপজিল ভর। ২েটমাথা করি সবে ভকা হরে রয়।। তবেত জ্রীদাম কহে কোপেতে ক্র্যিয়া। জ্রীনতীর দূতী नथी इन्नादत हारिया । नाती हत्त्र हृतिकर्ण कत नित्रस्त । আজি ধর। পড়িয়াছ শিখাব সত্তর।। আমাদের সর্বাধন নন্দের নন্দন। চোরা প্যারী কটাকে হয়েছে ভার মন। চিরকাল আমানের ধনে ভোরা বৈরি। পুনরপি আসি সবে মুক্তা কর চুরি। নারী না হটলে কল পাইতে ওৎপরে। অংপনার মান লকে পলাও নৱরে। সুবল কহিছে পুনঃ পূর্ব রাগ স্মরি। কোন দুলোলালি ভোৱা মৃক্তা করিস চুরি।। এক মৃক্তা माजिता नैतमह कुछ कथा। तम कथा व्यक्तित्व देश्टम मदन भीह ব্যথা।। প্রস্তুত পলাও সবে কর নিজ কায়। নারী হয়ে চুরি कर्छ न दि नाम लोक ।। मत्न छाविशा ह तुवि शाव क्रक-निधि। महि मिटन म वामना पूर्वास्तरह विधि। जात मा भारत क्य अनगारशंकात । आभनात मान लाह याह निका পার।। এতেক শুনিয়া বাণী যত স্থীগণে। ঝা ঝর ঝুরে বারি কমল নরনে।। রাখালের স্থানেতে পাইরা অপমান। কাল্যিতে কান্দিতে সবে করিল পথান।। মনে ভাবে কোন

ভাবে পাব ক্লেখনে। ছিজ বলে ক্লেকপ সদা ভাব সনে।। ভজের পরাণ ক্লফ ভভের জীবন। ভজিতে ভাবনা কর পাবে ক্লেখন।।

🛍 ক্লক মিলনাশে গোপীগণের উপার চেন্টা। श्वात । তবে मधीना कि वियोगि मदन । मिनि हिना সূবে আপন ভবনে।। কোনমতে কুক পাৰ করেন ভাবনা। পুনরপি বৃক্ষা ছতী কবিলা মন্ত্রণা।! কালি পুনঃ ব্যুনার व्यक्तियाद्व बल। जृजीय अध्यक्तात मकरनट हन।दिकात विभीत इति खमित्व यथन । व्राक्षा लद्य त्मरे भरेश कतिव शमन ।। अपमारी अधिका श्रकाणि निष्यक्ता । वन्ति कतित्वक সেই জ্রীগরির মন।। প্রথমেতে রজোঞ্জণ করিয়া দঞ্চা ।করিব ক্লুকের মনে রসেরউদয়া। তাহাতে কটাক্ষ বাণকরিয়া সন্ধান বিশ্বিয়া অনিবে পাারী একুঞ্জের প্রাণ।ভাহে যদি বশীভূত হয় নরহরি। পুনরপি তমোঞ্গ প্রকাশিত করি।। আঁথি ঘোরতর করি বাড়াইল মান। হরিয়া হরির মন করিবে থ-श्राव!। तम जादवरण यनि नाहि जूटन अनिवान। जटन जारह সম্বঞ্জণ করিবে প্রকাশ ।। ভক্তিডোর দিয়ে বন্দি করি নারা-য়ণে। তথনি আসিবে সংয় আপন তব্বে । সম্ব তত্ত্বসয় সেই প্রভু নারায়ণ। না পারিবে ভব্তি ডোর করিতে ছেদন।। বা ক্রিয়া আনিবছরি কি ভাবনাভার। ভিনি অণমরীমায়া অণেতে রাধার।। এতেক মন্ত্রণা করি সে দিন থাকিয়া। পরদিন গুছ কৰ্ম সৰ সমপি হা। ভোজনাত্তে একত্ৰে মিলিয়াসখীগণ। জল व्यामियात एटल हिलल खर्चम ॥

बिक्रस्थित मस्माहन कार धातन।

পরার। এখানেতে শ্রীনিবাস জানিলা অন্তরে। আসি-তেছে গোপীগণ ভুলাবার তরে। কটাক্ষ করিয়া চাইং আমা ভুলাইতে। ইংরি উচিত কল শীঘ্র হবে দিতে।। এত ভাবি নারারণ হৈশ মনোহন। হেরিলে হইবে মোহ গোপীকারমন মারীধারী মারা করে অপুর্ব্ধ কথন। যাহার মারার মূপ ধ এ ন ভুবন।। যে মারাতে মোহ প্রাপ্ত বিধি শুক্ষাণি। সেই

হরি অক্সরপ ধরিলা আপনি।। নিকটেতে বিস যত প্রজনিশু ছিল। দেখিতে দেখিতে ভারা চতুতু জ হৈল। মৃগ করি অশ্ব আর শলকী। অমরা কোকিল নিখি চতুতু জ দেখি।। অম্য পক্ষ শলভাদি চতুতু জ দেখি।। তুল জ্বালতা রক্ষ দেবে প্রজ্বালক। নির্মাইলা। শভ লক্ষ পুরী হরি তথার করিলা। কিবা দে পুরের শোভা কে বনিতে পারে। অপুর্ব পতাক। উড়ে ধ্বজের উপরে। হানেহ মাণিকা বেদিকা শোভা পার। কাঞ্চনে দোপান বদ্ধ উজ্জ্বল ভাহায়। শেষ কক্ষে রতু মিংহাসনের উপরি। বাসলেন রাধাকান্ত লক্ষা সক্ষে করি। প্রভিদ্ধারে এক এক রাধার প্রহরী।। কালভা বিশাখা আদি সঙ্গে সহচরী। কি কব যে রাধারপ বুরা অনুভাবে। ব্যভামু নন্দিনী হেরিরা মোহ যাবে। এই ক্ষেপ চক্র করে রহে চক্রপানি। হেনকালে স্থী সহ আইল ক্ষালনী।।

बिश्रधांत द्यादर्क शमन ।

लयू जिलही। (इथा कमलिनी, लड़ेश मिक्रनी छेलनीड तार्छ मात्य। ना प्रिथित कालाः इहेल विकला, इन्य मत्रमी तार्छ।। ना प्रिथित कालाः इहेल विकला, इन्य मत्रमी तार्छ।। ना प्रिथि त्याधन, ना हि मथां प्रांश ना हि किছू पूर्व छाव। ना हि वन छ व, मयू व क्रकां व, क्रिकेल ज्या व व ।। त्य काक्य ना हि किছू जावः निर्देश त्या व्यान, हि कि हू जावः निर्देश मान। यि निर्देश ति इश्न, क्रिकेल हेल्ल मन। यि निर्देश ति व्यान, क्रिकेल हेल्ल मन। यि निर्देश ति काम व व क्रिकेल का व ।। प्रिया ति काल, क्रिकेल का व ।। प्रिया ति काल, क्रिकेल का व ।। प्रिया ति काल, क्रिकेल का विवय प्रांश का क्रिकेल का । हेल्ल ज्याक, नाहि मत्य वाक, मत्य का विवय प्रांथ का क्रिकेल का । होल का क्रिकेल का विवय प्रांथ का क्रिकेल का क्रिक

ब्रिशिकात श्रीकृष्ठ वित्रह।

धुत्रा। नात्थत विष्ठ्रित नथी वृत्व भागिनी इहै। कि इहेन छाउद स्मात वृत्वि छ ना भाति गरे। आमि ला अवना वाना, ना मदह विद्रह काना, विदन मि किन काना, कमदन कीवदन दहे।

পয়ার। এরিফ বিচেত্দে মুগধা হয়ে কমলিনী। ভাষণ করেন তথা যেন পাগলিনী।। সন্মুখেষতেক দেখে রক্ষলতা ফুল। জিজ্ঞানা করয়ে রাধে হটয়া ব্যাকুল।। মাধবী লতার প্রতি কহিছে কিশোরী। ভূমি কি দেখেছ মোর প্রাণ কাল হরি।। এই যে আছিল তব নিকটে ব্যিয়া। স্থাগণে সাজা ইন তব কুল দিয়া।। আম রে দেখিয়া নাথ অদেখা হইল। कह कह मांधवी द्या काथ। लुकाहेल ।। नात्थव विवद सांव বিদরিছে হিয়ে। ভূমি গোমাধবী বট মাধবের প্রিয়ে !! তবে কেন মোর বোলে উত্তর না দিলে। স্থপত্নী বলিয়া বুঝি विव म माधित ।। भारत धनौ थिए यात्र यथा क्रक्टिक ।। কহিতে লাগিল কিছু করে কুভাঞ্জাল।। কুঞ্জের নামেতে তব नाम जामाभून। ज्वामा जानश कृषि कृष्यत वाबून। कन्ष्य কহিছে ধনী করিবা মিনতি। সর্বাদা তোমার মুলে নাথের বসভি।। পদচিহ্ন পড়ে আছে নেখি ভব হেখা। কহ কছ कमञ्च (इक्क्ष्म (शन (काथा।। अटमाटक व्यथिश भागी गाँउ। चुवा कवि। ज्यानित्रन कद्य शिवा ज्यानादकद्य धवि। वदन थनी छव नाम जानिट्र घटनाक। (छामादत धतिशा दक्न বাড়ে মোর শোক।। অহতব করি পুর্বে আছিল অশোক। नार्थत वितरह वृत्ति करत्र छ मानाक ।। नक्त अप्नांक दकन **ट्यार्त्त भिन्ना काल । वज्रुत विटळ्म च्ल २३न धावन ।। ध**र् बर्ल वर्तवत्न कत्ररम्खमा। (रनकाटन मिर्थयं हिष्कू ब्रान জ্ঞত হরে তথা গিয়া জিজ্ঞানয়ে কথা। ভোমরা দেখেছ সোর প্রাণকান্ত কোখা।। অভিন ক্লের বপু নেখি তোমা দবে। अञ्डेत दुवि (व क्रांका कि इर्दा । अध्या निर्दमन करि महान्य । कृत्कत विवदर त्यात महित्य अनव ॥ नातीकारि ना

জীরাধার মোহন।

ধুরা। কোথা হে কালিয়ে দোণ রাধিকা মনোরঞ্জন।। অধিনীরে দরা করি দৈহ দরশন।। আমি স্থানি আমি রাধা, ভোষার অক্সের আধা, এবে হেরি রাধা, এ আর কেমন।।

প্রার। কান্দিতে কান্দিতে প্যারী জমে দেইবন। প্রীক্ ক্ষের মায়া পুরী হৈল দরশন।। কহে কমলিনী শুন রন্দা সহ চরী। এই পুরা মধ্যে গিয়া লুকায়েছে হরি।। চল চল শীস্ত্র যাব পুরীরভিতরে। অবশ্য পাইব মোরা সেইনটবরে।। এত বলি স্থী সঙ্গে চলে কমলিনা। ছৌবিরিকা দেখে ভারে অ পুরুকাহিনী প্রবর্ণের ছভি হাতে সঙ্গেষহচরা। বিসয়া আছেন ছারে হইরা প্রহরী।। আপন আকার প্যারী দেখে সমুদয়। আপনার স্থা সম দেখে স্থীচর। কিন্তু বাল আপনা হইতে সমুর্জ্জল। নানাবিধ অলক্ষারে করে বালমল।। দেখিয়া কি-শোরী মনে হইল বিশার। নিরব হইরা ধনী একদ্ন্টে রম মু তাহা দেখি ছৌবারিকা জিজ্ঞাসা করিলা। কে ভূমি কোথার থাক কি হেতু আইলা।। বার বার রাধিকার করিছে নমনে। দুহিখিনী স্মান কিম জমিতেছ বনে।। শুনি ক্ষলিনী কুছে

खन को वार्तिनी। कृत्युत श्रिमांन नाम त्रांभा विद्नापिनी !! बद्धट वनको व्यक्त स्वती। का बता हटा ही श्वाहेना বংশীধারী। অহস্কার করেছিল নাথের উপরে। সেই হেড় প্রাণকান্ত ছাডিয়াছে মোরে।। তার অস্বেদণে আমি জমি তেছি বনে। দেই হেতু আইলাম তোমার সদনে।। অনুপঃ করি পুরে আছে নরংরি। যদি দ্বার ছাড় ভবে দরশন করি। নাথের বিচ্ছেদে মোর প্রাণ বাহিরায়। দরা করে জৌবা-রিশীদেধাও ভাহায়।। শুনি ভৌবারিকা রাধাক হে রাধা প্রতি। রাধা নাম ধর কোন ত্রছেতে বদতি। এথানে কমলা কান্ত কমলা শইয়া। বিহারকরেন সদা বিরলে বসিয়া।। শত ভারে শত রাধা আছে ভৌবারিণী। আখার আছমে य ধা व्यवर्ग ना श्विन।। कान मधी जामि श्रिन क रमशी अरव । **म्थि (मर्थ जानिसां ह्यां वा नाम धर्व ।। (क्मन कूरक**्र माद्रो কে বুঝিতে পারে। আরু কি আছমে রাধা ব্রক্তাপ্ত ভিতরে অবাক হইরা সবে করে উপহাস। তাং। দেখি কিশোরীর क्यांक इंडामा । उद्द बोदादिनी व्र'दा कट्ड महाकृति । यांड যাও পুরী মধ্যে দেখ গিয়া হরি। কিন্ত এইমত আছে শতেক তুয়ার। শতেক প্রহরী রাধা আছুয়েতাহার ॥ সবাকার নিক টেতে হবে কুডাঞ্জলি। তবে সে দেখিতে পারে প্রভু বনমালী कहे कथ र्खांन गारी हत्न उनका। अक्रबाद शिया उत দিল দর্শন। সেখানেতে এই ৰূপ পরিচয় দিলা। ক্রেম্ শত ভাবে প্রবেশ কবিলা।। প্রতিভাবে পুর্বমন্ত উপংগদ করে দেখিয়া শিক্ষাধ হৈল রাধার অন্তরে। মনে ভাবে গর্বাজামি করেছি যেমন ভাহার উচিতফল পেলাম্ তেমন। অনাথের नाथ इति बचा ननीयन। शाहीत हैक्हांस इत् ध विन पूरन्।। রাধা স্ষ্টি করা তাঁর কোন বড় ভার। না বুরিয়া নিজ মনে করি অহস্কার।। এত ভাবি রজ তম গুণ তেরালিক। সম্বঞ্জণ कानि क्रांन केनत्रक्रेन ।। कर्य करकर्ण द्रारे श्राटनिया भूदत স ক্ষাণ প্রমন্তব্দ দর্শন করে ৷ ভক্ষরপে বিরাজিত কমল-लिहिन। कंगला करवन विशिष्ट्र श्राप्त । जीवाल बकार्थ भून इक्ति नत्रभन । शुं छ्र इहेश भून अर्फ महैकन ।। कि

ক্ষিৎ বিলয়ে ধনী চৈতন্য পাইলা। ক্ষান্তেব্যন্তে নারায়ণে স্তৃতি আরম্ভিলা। প্রিচর্গা প্রদান বলে শ্রিক্ত চরণে। পুরুত্ত শিশুর আশা প্রস্থু নিজন্তনে।।

बितांश कर्जु क बिक्राक्षत खब।

দীর্ঘ-ত্রিপদী। ব্রহ্মরূপ হেরি ছবি,কর্যোড় করি প্যারী স্কৃতি করে অনেক প্রকার। তুমি প্রকা তুমি শিব, তুমি শেহ जूबि कीत, टामा टेहरज अजिन मः भात ॥ ज्ञांबत अनम सन, জুমি শৃত্য জুমি স্থল, চারচর ভূচর খেচর। ভূমি নাগ জুমি পক্ষত ভুমি যক্ষ ভুমি রক্ষ, দেব সুর গল্পবি কিল্পর !। ভুমি গুলা ভূমিলতা, ভূমি রৃক্ষ ভূমি পাংলা, ভূমি নর্ম জীবের জীবন।। তুমি শ্কাতুমি স্কু, জুমি অগ্র তুমি মূল, ভোমা ৈতে ত্রক্ষাণ্ড স্থলন।। তুমি তন্ত্র তুমি মন্ত্র, তুমি বিভাগ তুমি যন্ত্র, বান্তকর আপনি কুমারী। ভূমি বিজ্ঞাত কর্ত্তা, ভূমি নারী তুমি ভর্তা, আমি নারী কি বলিতে পারি।। ভূমি স্বর্য্য তেকো রাশি, নক্তেতে তুমি শ্লী, শাম বেদ তুমি গদাধর ইপ্রিরের মন ভুমি, ভুমেতে চৈতকা গামি, একাদশ রুদ্রেতে শক্ষর।। বসুর।পাবক কয়, পর্বভেতে হিমালয়, পুরোহিত ভুমি রুহস্পতি। দেশপতি ক্ষক্সমানি, নদিতে সাগর জানি, মহর্ষিতে ভুগু মহামতি ।। সিদ্ধিতে ক'পল কয়, অশ্বে উচৈ প্রবাহয়, রুক্ষে হয় ভাষ্থ গণন। হন্তী মধ্যে ঐরাবত, গন্ধ র্কেতে চিত্ররথগদেবঋষি নারদ তপেশ্বন । আয়ুধেতে বিপ্রা-ৰূপ, নৃণ মধ্যে ভূমি ভূল, কামধেকু খেকুতে বাখানি। मर्लिट वासूर्क ३६, नार्शिट अन्द वह, वक्रांवि यापित जाश्रमि। असूरत श्रक्ताम कू म, मूर्शि निश्ह जामि जामि, পক্তি গড়ড় ধর নাম। বিদ্যতে অধ্যাত্ম যেই, স্তোতবা জাহুবা गिरे, नञ्जलानि कृमि द जीताम।। जल एक नमस्म, ভুমি সে নিয়ম যম, তব জুণ ত্রিঞ্প অভীত। আছহ স্ক্তি व्याप्ता निश्च नर कान क्रांत्र निज्ञाकां निकाश विन्छ।। জনাথের নার্থ প্রস্কু, অধিল ত্রন্ধাণ্ড বিস্তু, জ্ঞাজিত তুমি গুণ

ধাস । আমি জতি মৃদ্যতি, না জানি ভকতি স্তাভি, চুংথিজনে
না ইউও বাস ।। কুলনীল ভেয়ানিয়ে, তোসার শরণ লৈয়ে,
নাম ৈল রুখা কলজিনী। তোমা বিনে নাহি জানি, মোরা
যত জাহিরিনী সর্যাকর ওবে যাছমান।। পঞ্চ মুখে পঞ্চাননে
কৃষ্ণান নাহি জানে, বেদ মুখে বিধি না হি পায়। হড়মুখে
যভানন, যার জন্ত নাহি পান, এক মুখে কি করি উপায়।।
মুদিয়ে যুগল আখি, স্তাভি করে বিধুমুখী, দয়া উপজিল
মনে। আপনি উঠিয়া হরি, জীমতীর করে ধরি সাস্ত বরে
জনিয়া বচবে।। জীতুর্গা প্রসাদ বলে, জীক্ষের পদতলে,
সদাকর ভকত বৎসল। শিশুর পুরাও আশা কর প্রভু নিজন
দাস অন্তে দিও চরণ কমল।।

অথ একুক রাধ'র প্রতি সদর।

প্রার। ভবেতে হুইয়া ভুক্ত প্রভু নারায়ণ। সন্মোহন বাপ তবে করি সমূরণ। দূরেগেল মায়াপুরী ছারী চতুছু জ। পুর্ব মত হৈল প্রভু সুন্দর ভিভুজ। আপনি উটিয়া তবে জীমধু-सूपन । बीमहीत क्रत्वधित करःन वहन ! स्त्रिहं थार्शव्यात কেন এত স্তৃতি। তবঞ্জবে বদ্ধ আমি আছি গুণবতী। তো মার আমায় কভু নাহিক প্রভেদ। কি কারণে কমলিনী এত कत (थेर ।। ब्रीकृष् काटकत कांधा तांधा विदर्शामिनी । कांशम নিগমে বেদে এই কথা শ্ৰি।। ভোষার অধীন আমি আছি চিরকাল। তোমার কারণে এজে ২ই নন্দলাল। স্থিরহও ভয় ত্যাঞ্চাহ একবার। সন্মধে দাড়ায়ে দেখ জিক্লফ তোমার এতেক বলিলা যদি কোমনলোচন। আতে বাতে কমলিনী मिलिना नश्ना। जारि (मटल (किथ धनी श्रुवंबर्श नाहै। त्रमुर्थ माजारत जार्क नरम्ब कानाहै। अभाव स्वतन जामि वृथ्यि युक्तांबन। व्यम्। वृथ्यात्ववा मत्व हताप्रताथन। नाहिक (म मुद खाड़ी नाहि (मह श्रुत । (क्षित्मन क्मिनिने निक झब **एटव मधीनन कटर उपपाद्य हास्सि। साम राम कि** द्धित्रभाष देकरेनल इतिहा ॥ जहहत्रीशटनत दम्बिश दक्षकान देवकरी मान्नार्ड इति उथनिकृतान्। प्रदर्शन श्रुक्तारह देव

खड़ार । करतर्ज्य दिशां कृष्ण वाष्ट्रियां छातः। তবে হরি প্রিয়া কহে হরি পদতলে। य-ग्रि किविना कृषा निक्रमानी दिन । क्षिण नकन मास वाक्रियलां हन । वाश्रिष्ठ इहेर नाथ मात्र निर्मा । व्याप्त । व्याप्त व्याप्त । व्याप्त । व्याप्त व्याप्त । व्याप्त व्याप्त । विक्रान व्याप्त व्याप्त व्याप्त । विक्रान व्याप्त व्याप्त

अथ जीवाधाव मधीनन महिल कुछवरन नमन।

পরার। গৌরমুখ কন পুনঃ করিয়া মিনভি। যে কহিলা कुष्ण बीला अपूर्व जांत्रो ॥ उम्खद्र कि स्टेन कर महाना । भूमिटल পুরাণ कथा या वा क वा इर ।। वा तार क व प्र अधून তপোধন। জীকুফ বচনে তৃষ্টা হয়ে স্থীগণ। জাপন ভবনে ভবে আইল কিশোরী ৷৷ ক্রমে ক্রমে রবি অভ্তে প্রবেশে শর্কারী।। কুষ্ণের সংজ্ঞতে কাল হৈল আগমন। দেখি রাধা शृहकर्मा करत त्रमाभन । नशी नत्त्र कदि भारती ताल। कुछ-बदन। कत्रदा वान्तर मच्छा यक मधीनरन ।। कुकुश्ल जुल সবে ফুল নানা জাতি। মলিকা মালতী জাতি যুখি কেয়া-পাতি। টগর ভাগর কৃষ্কেলি রামকেলি।। আট পাঙ্কল (यन बकूल निजेनि।। जारमांक क्ल्भिक वक माधवी तक्रन। ভকুলতা সুষ্যমুখী প্লাদ কাঞ্চন! গোলাপ অপরাজিতা পরি পাটি কত। গুলঞ্চ কৰ্মী গান্দা তুলে শত শত।। তুলিলা অনেক ফুল গল্পে আমে।দিত। যার গলে অলিকুল সদত মোহিত। এই ৰূপে নানা ফুল তুলিয়া যতনে। গাঁথিল অপুৰ भागा कृत्कत्र कांत्रर्ग।। छात शत ब्ह्फूल कुक्ष गांकारेल। কুলের করিয়া শয্যা মধ্যেতে রাখিল।। তদন্তরে স্থী সবে আনিন্দিত মনে। 🕮 মতীকে ফুল দিয়া বাজায় যতনে।। এইরপ গোপিগণ বাসর সাজায়ে। রুক্টের আখাসে রহে পথ নির্মিরে।। চ্মকালে ক্মনিনী স্থিগণে ক্র। অন্য র জনীতে হরি জাসিবে নিক্ষয়। কিন্তু বড় অভিমানে ররেছে अलुद्ध । विना कार्य अभगान करवरहन स्माद्ध । यनि वन ভাইস্কারে করেছিল গর্ম। সেই হেতু কালাচাদ করেছেন খর্ম किन्छ त्म गत्रवत मुन नकनि त्म कन। विनादनादय द्यादी त्माद्र देकना किकांत्र ।। वृक्ष माकी बटन शांटक गराकात्र घ छ । यथन घछे। स यांश लाहे लामित छ ।। (मायल गण वल সকলি তাহার। তবে কেন অপমান করিল আমার।। এই (इन्ड मत्न वक् इत्र कांचमान । कि किए कत्विन भी है इत् वि-धान ।। अथरमण्ड नहेबरत राथा नाहि निव। अकात अवरक्ष সবে সন্মতে রহিব।। ভোমরাত অন্ট্রস্থী আর্থন একজন।নয় জনে একত্রৈতে হইয়া মিলন।। নবনারী মিলে হব অপুর্ব কুঞ্জর। কুঞ্জর কপেতে রব কুঞ্জের ভিতর ।। তাহা দেখি কা-লাচাদ কি করে দেখিব। পরেতে মনের সাধ সবে পুরাইব কবিৰাপে প্ৰাণকাৰে পৃষ্ঠেতে কৰিয়া। ব্ৰঞ্জের বিপিন মাঝে বেভাব বুরিয়া । শুনিয়া রাধার বাণী সবে দিল সায় । মুক্তা লতাবলী গ্রন্থ ভিজবর গায়।।

অথ নবনারীরর কুঞ্জর রূপ ধারণ।

পরার। তবে রক্ষে সথী সঙ্গে মিলিয়া শ্রীমন্তী। হইল নিকুঞ্জে এক অপুন্দ মরতি।। আদ্যাশক্তি মরী রাধা শক্তি বিশুন্ন
রিলা। রুন্দ আদি চারি সথী উঠি দাণ্ডাইলা। ছই সথী
তার হইয়া মিলিত। ছই দিকে দাড়াইলা হয়ে ভাগমন্ত।।
উভয়ে উভয় পদ একত্রকরিয়া। নীলায়ুরে গুল্ফাব্রি রাখিশ
ঢাকিয়া।। এমনিভঙ্গিতে রাখিলেক পদ ফের। অভিয় হইল
থেন পদ কুঞ্জরের।। পরে ভিন স্থী উঠে মধ্যভাগে রয়া
পরস্পারে গলেহ সকলে ধরয়।। গলা ভাবলয়নেতে করিয়া
নিভর। যোগাসন করি পদ ভুলিন সম্বর।। পদেহ হিনদ্দনে
সংযোগ রহিল। পাশ্র সথী ধরি তাহে কিঞ্জিৎ ভুলিল।।
কক্ষভলে রাখিল পদের যোগাসন। তিন মাথা উঠি হৈল
কিঞ্জিৎ তথন।। তিনজনে স্মতারে এমতিরহিল। মাতক্রের
বক্ষ্মা ক্রেমে জানাইল।। তার পর শুন আর অপুর্বি রগ্ম।

সন্ম থ ভাগেতেছিল সধী যেইজন। তাহার মন্তকে উঠিলেন अके धनी। माथामाथि करत (साट् हिला अमनि।। कहोत्र সমান তুও মুণ্ডেতে করিয়া। ওও হেতু বাম পদ দিল ঝুলা-हैशा। मिक्तित्व कालू तमहे मधी वटक थुटम । वाथिन मिकन পদ বিহ্নি করিয়ে।। মাতক বদনসম হইল ভাহাতে। তবেত नम् श मधी ভाবिना मरनरः ।। विष्ठादिशा विनिधिनी वाष्ट्रात ছুহাত। অভিন হইল ছটি কুঞ্জরের দাঁত।। পাশাপাশি করি क्ष्यु द्वारथ स्विनत्न। इंखिनीत नम क्ष्यु दिशांत नम्राम्।। कर्नेत् क्रांतरन ভरत मरम विहातिता । मीनाश्चत अक्षन निरनक সুরাইরা।। ছই পার্শে হেন ভাব হইল তাহাতে। করীরকর্ণের সম লাগিল ঝুলিতে। শুওমুও চফু কর্ণ দন্ত আদি করি। दमिरिट इहेल (यम सून्स्त कुक्कती।। उत्द ताथा विमिनिनी छे-ঠিয়া তথন। সংচরীগণমাথে কৈল জারোহণ।। শুরল এমতী তথা নানা ভক্তি করি। কত ভক্তি জানে নিজে ত্রিসক্ষের मात्री।। असन विक्रम इत्स त्रिल छथात्र । कुक्करत्रत शृक्षेत्रम हहेल छाहाश ॥ তবে धनी निक दननी अलाहेश निल। कतीत পুচেছর সম ঝুলিতে লাগিল।। অঙ্গের উজ্জল আভা লুকা-বার ভরে। সকলস্থীর অঞ্চাকে নীলাম্বরে।। হইল অপুক क्दी मून्मत चाकाद। उद क्यांननी मत्न कदिश विहात।। জাপনার পূর্ত দেশে পাতিয়া অঞ্চল। বিচিত্র আসন সম क्टेल खेळाले।। जामन রाधिल मान **এই** माध काँत । खेठिता दिति देश व्यानकां इति। अहेबाल नवनाती मिनिया यह दन इटिश कुक्षत क्ष तरह कुक्षवरम ।। बिह्नी श्रमान वरण छन न्दिक्त। नवनाती कुक्षदतत अरे विवत्।। अक विष रदम सिहें बहें कथा छटन। विक कटह खांत छत्र ना शांदक मामदन।। ज्य जिक्राकत कुक्षवरम शमन।

পরার। এখানেতে প্রাক্তর শুন বিবরণ। গোষ্ঠ হতে আইলেন আপন ভবন। রজনী যোগেতে হরি করিয়া ভোল্কন। জননীর নিকটেতে করিলা শয়ন।। কিন্তু নেত্রেনিতা লাই সদত বিমন। কতক্ষণে নিত্তিত্ইবে প্রজন।। তিন্দিন রাধাসহ নাহি সহ্বাস। উদয় হইল মনে বিরহ ছুতাস।। তবে

কওকলৈ ঘুমাইল পুরজন। আন্তে বাস্তে ব্রজনাথ উঠিয়া তথন।। ধরিয়া মোহন বেশ গোপীকার পতি। চলিলেন কুপ্রবনে মৃত্যুনদ্দ গতি।। রজনী হইল ঘেণ্র করে ঝিলিরের।
কোন দিকে মসুযোর নাহি অক্সরুব।। আকাশে উদর মেঘ্
গভীর গজ্জন। বিশ্বু বিশ্বু ইউতেছে জল বরিষণ।। ঘোরতর অক্ষকার দৃষ্টি নাহি চলে। ক্ষণেৎ গগণেতে দৌদামিনী জলে
তাহাতে কেবল মাত্র পথ দেখা যায়। তাহা অক্সারি হরি
চলিলা ঘ্রায়।। পথে যাইতে কত আছ্রে উৎপাত। তান্
হাতে কমলাকান্ত না করেন দিকপাত।। রাধার ভাবেতে
কৃষ্ণ হয়ে উত্তরোল। রাধাবিনে মুখে আর নাহি অন্য বোল
হা রাধা কোথান রাধা কভকণে পাব। কভকণে কুঞ্জে গিয়া
রাধারে হেরিব।। এইকপ রাধাকান্ত করিয়া গমন। ছয়
দণ্ডে উত্তরিল মথা কুঞ্জবন।। ভিন্ন কহে শুন সবে এক মন
হৈয়া। কুঞ্জবনে রাধাকান্ত প্রবেশিল গিয়া।।

जर बीक्ररकत बीमको ब कुट्स विवृश्विष्टा ।

मीर्च जिला । बहेकरल बांधाकान, बांधा ভारत हरत जान, পনীত উট্লল ক্রমেই। কুঞ্জের ছয়ারে থাকি, রাধাই বলে **ডाকি, উত্তর না পান কোনজন্ম।। শেবেতে কুঞ্জের মাঝ,** खरविष्या खळताळ, हार्तिकिक कृति मित्रीक्रम । माहि भारी गरुहती, खवा चार्ड गातिर कुक्षवत्म कति मत्मन। होनिद्क শাজান ফুল, গুঞ্জিছে অলিকুল: মধ্যে ফুল শযা। আছে ভায়। তবা আছে ভিন্ন ভিন্ন গোপীকার পদচিক্ চারিদিকে मिथियादत भाष ॥ किस मधीनन नाहे, नाहि कमनिनी ताहे; पिथि मत्न नागिल छ्डांग। <u>विव</u>टह बााकून विडेश माहि मात्न হিতাহিত রাধা বলি ছাড়েন নিম্বাস। পরে করি অকুমান, हिन भागी बहे सान, भारत स्विध काथा लुकारेंग। बड ভাবি গুণমণি, অস্ত্রেবিয়া প্রেমানিনী, চারিশিকে ভ্রমিতে नां जिला। उदय कुन बदन जिल्हा, हो मिटक दम्दर्थन हो है द्रार टमर्षु कान क्यारन इवरन । क्यां स्वाभारत भाती, करव यांन नत्रहेति, भाग छाल भिशांग कामदम्।। (मर्शाटमः मा (मर्थाभाम, পরে শ্যাম কুঞ্জে যান, রাধাকুঞ্জে তাহার নি । ভার

পরে অন্য বনং করি হরি অস্থেষণ,কোন স্থানে না পান বে-থিতে।। রাধা ভাবে হয়ে ভোর, ভাবনায় নাহি এর, ভাব-ছরে হইয়া অস্থির। বাাকুল হইয়া মনে, ফুললতা রক্ষগণে, জিজ্ঞাসা করেন যত্বীর ।। শুন্ত রুক্তগণ, করি সবে নিবেদন, दिए थां कि कि कि मार्जी आमात । यमानि दर्शिया थाक, वटल निता थान्द्रार्थ,कत मत्वधार छेपकातु ॥ यनि वल वक्कन, अरम थादक बहे वन, किटमाबीदक মোরা नाहि किन। भूनह छा-কার কই, ৰূপেতে তিলোক জগী, অঞ্চ আভাজিনি গৌ-মানিনী ।। বৰন নিৰ্মাণ শশি, তাহাতে ঈষৎ হাসি, বিশ্বকণ কিনি ওঠাধর। বচন অমিগ ভাষা, তিলু ফুল জিনি নালা, व्यथन किनिया थरानत । थक्षन राष्ट्रम व्याधिरम्भिनी किनिया दमिथ, खावरनत सूर्यात्रेन इहा मोध्यदम्मी मध्यक्तिना, वहरमाउ ञ्चनविनाः, कम्य जिनिया क्रुष्ठवत् ।। मृशाल जिनिया जूज, क्र পদ সরসীজ, নিত্তেরর না যার বর্ণন। নথ শশধর জ্যোতি, मृह्र मन्दर्शाल, क्रिनिया ता मत्रांत दावन ॥ अहे काल (यह थनो, कामात स्वत्रमिन, क्रिक्ति (मर्थह (मर्डे जन। इतिहि বিষম আর্ত্তা, বলিয়া ভাহার বার্ত্তা; কিনে রাথ জ্ঞীনন্দ নন্দন এতেক মিনতি করি, বারে> নরহরি, রাধার করেন অত্থেবণ ख मा। मकल वन, नाहि भान म्यूमन, खादामाद खन विवत्त জিছুর্বা প্রসাদ বলে, জীকুষ্ণের পদততে, দয়া কর ভকত বৎ-मन ।। শিশুর পুরাও আশে কর প্রভু নিজ দাস, অত্তে দিয়ে **ब्रिने** कमल ॥

ख्य **ब्रीकृत्क**त नवनात्री कुक्क त मर्नन ।

भवात । एटव क्ष वत्न चम् कति । कान द्वात जीमछीत पथा मा भाहेश। वितर वाक्न हर् विवानि मदन
भूमति काहेलन निकृक्षकान ।। भूमति क्ष्मिष्ठ कर्ततन
कारम्वन । राथात्मर कार्ष्ट द्वान स्राभान ।। रहनकाल
कारम्वन । राथात्मर कार्ष्ट हान स्राभान ।। रहनकाल
कार्यका कर्मात्मत कार्ष्ट । श्रम्भ काम क्ष्मित्र (इति वा कार्ष्ट ।। त्राथात्र वितर कर्त्य क्षित्र कार्या क्ष्मित्र (इति वा हित भाहेलन क्ष्मा। क्ष्मी (हित कालाहों म भनिया हिन्मा। প্রভু ভগবান। পিথীতি প্রভাবে তেঁই হারাইয়া ভান।। না वृत्तिट्छ शांति किছू हेशत श्रद्धम । कि छाव कृत्यात करत्न नाहि कांटन (वन ।। ভागिना कक्नांमस, भाकिमिक करन। হা রাধা বলিয়া হবি পড়েন ভূমিতলে ।। হায় প্রিয়ে মোর चार्म चानि कुक्षवन। कतीत हाट ए वृत्य हाताल जीवन काथ। ताल कमलिनी आमादि इंडिया। त्यामात विष्टित প্রাণ যায় বিদ্রিয়া।। হায়বে দারুণ বিধি কি দোষ পাইয়া ष्याचात ब्यार्वत श्रिय नहेलि ह्विया ।। अरह ब्यिय बक्वांत्र (मह मत्रभन। टामा वित्न एक स्मात इटल्ट्ड कीवन ॥ तथा ध जाइक जाया कारन नर्यकत्म। जाइकीन इरा भारत इहिय क्रियान ।। कि माय शाहेश ज्ञि हा जिल्ला जामाता जरेश्वी হয়েছি আমি না দেখে ভোমারে। অলুমান করি ভূমি আ-মার লাগিরে। পিরাছিলে গোর্ষমাঝে ব্যাকৃত হইয়ে।। তাহাতে এদেছ মনে পেয়ে অপমান। সেই অপমানে বৃক্তি ছাড় নিজ প্রাণ।। অতেব উচিত নহে ওহে কমলিনী। একে বাবেএঅধিনে ছাড়িলে অম্নি।তাহে যদি অভিমান হয়েছে তোমার। মানিনী হইয়া দেখা দেহ একবার। পুর্বানত সাধি তব চরণেতে ধরি। তোমার বিচ্ছেদ আমি নহিতে নাপারি अधिका आभाव मिरु ब्रापिका जीवन। अधिका विवटर नाहि देशर्रा मारन मन ।। द्वाधा यनि हास्त्रि (शत बहे द्रमावन । छत्व আর কি কারণ ধরিব জীবন। ওচে করি বিনাশিলে মোর व्यानिव्यत्त्र । प्रनतिन वध कत जामादत जानित्त्र ।। कृत्कत কাতর দেখি অভ্রি কিশোরী। মনে ভাবে করা রূপ পরি-ভ্যাগ করি।। আবার ভাবেন মনে আছে বড়ুসাধ। করীপক পর্ষেতে করিব কালাচাঁদে। এত ভাবি হরি প্রিয়ে করীরূপ वन । वांधाकां हु वांधा भारक करवन (वांपन ॥ सुर्त्त (प्रवर्तन दिश्य मार्त रमान्त लाख। ताल महिर किता जिक्करकत खार भारक एक करेवर्ग रेश्न जिन्न ता क्रिक । छोर्न प्रियम् वा धाकि বলেন ভারতি।। ওহে হরি ত্যক্ত শোক শুনহ বচন। একবার क्रिं शृष्टि कत चारताहर ॥ छदा त शाहरत छव ताथा विद्रमा

देश देशववादि। खेनिया स्वित किছু मिर हेक्स भावि। वाश्व इद्य ख्यादक में छेठिया उथन। आटख वा छ कही भूटई कित आटबाइन।। उदनवनाती कित्र आनिम्मड यदन। कित भूटई इति किटत निक्क कानदन।। विक क्टर कड डाव जादनन किटमाती। नवनाती कही इदन भूटई कटत इति।।

ख्यथ खेताधाक्रास्त निकुक्ष वटन विलाम।

্পরার। হরিপুর্চেক্রি তবে নবনারী করি। কুঞ্জবনে নানা क्रांत्न ज्ञार किति ।। यथात्न (यथात्न क्रांट मत्नाइत क्रांन ছরিরে লইয়া সুখে দেই স্থানে যান। নারীর পরশ পেরে 🕮 হবি তখন। মলয়া মাকুতে হৈল উলাগিত মন।। মনেহ ভাবে রুষ্ণ এ আর কেমন। করি পৃষ্ঠ সম এত নহে কণাচন আনেক কঠিন হয় কুঞ্জারের অঞ্চ। বরি পূর্ত সম এ যে দেখি কভ রঙ্গ।। এতভাবি রাখানাথ এক দুটে চান। কিশোরির क्रमनाकि मिथिवादत भागः। ७८व क्रके नामिटलम १८३ छ उ তর। অধিলমে ধরিলেন এমতির কর।। তবে রাধা স্থীগণে ইঞ্চিত করিলা। ভিন্ন ভিন্ন হয়ে ক্রমে সবে দাণ্ডাইলা। बुहिल कुञ्जब बाल देश्ल नवनाती । लिंथ ४ च ४ च ७ द्व करत्रन মুরারি ॥ হায় কি দেখিতুরপ আহা মরিই। জননিয়ে দেখি माहे नवनाति कति।। माती इता कुश्चा शहेल नव कतन। ইচনিতে নারিকু আমি হেরিয়া নয়নে।। আদ্যাশক্তি মধী মায়া ভুমি কমলিনি। মায়া বলে ভুলাইলে বিধি খুলপাণী মারাতীত হই আমি তথাপী প্রিয়নী। তোমার মারায় বন্ধ আছি দিবানিশি। রাধা কন রাধাকান্ত তব পদমরে। ২ইরা ছিলাম বনে নবনারী করী।। সাধছিল তোমারে লইব পুर्छ कर्ति। (महे गांच भूनं এदि ध्हेल बी हति।। उद ताथ-কান্ত অতি আনন্দিত মনে। একাগনে বসিলেন নিকুঞ্জ কাননে। দখীগণ চারি নিকে চামর চুলায়। কেহ আনি प्रभागा पिटल्ट्ड भनात्र।। जत्भीत हन्पन व्यानि दमत दकान क्रम । - सूर्वातिङ क्रम क्रांटन स्विति अन्त ॥ (क्रांन नथी छ। सून বোগায় প্রা করি। আনন্দে হইয়া মর যত সহচরী।। এই कारी वाथा गर श्रष्ट्र बनमानि । करत्र व कल्यांमत्र नाना द्रत

(कलि।। एटवं इति कहिएइन त्राधा कटते धति। जुमिकि করেছ মান আমারে কিশোরী।। গোষ্ঠমাঝে গিয়া ভুমি हराहित पुश्थि। तिहै १० जु खिरा जुनि जाह मान मुथी।। अरु यनि कहित्न श्रञ्ज नात्रायन । कत्रमुहे हत्य न्याती कत्त নিবেদন।। তুমি ত্রিজগণ কর্তা অকা স্নাতন। তাচিতা অব্যক্ত রূপ প্রাভু নিরঞ্জন।। তোমার হইতে সৃষ্টি স্থিতি হয় লয়। কটাকেতে আমা সম কত রাধা হয়।। গোষ্ঠ মধ্যে শত রাধা স্তি কর ভূমি। তাহে কি কারণে রুঞ্ ছঃথ हर कामि॥ ७८व ८ए काइए० नाथ प्रश्चिमि मान। निध्व দ্র করি প্রস্কু ভোমার চরণে।। প্রমাত্মা প্রাৎপর ভূমি নারায়ণ। তোমারে ভজিতে লোক হয় সাধ্জন।। বিধিতব বাসব বরুণ ভাষান। ভোমার ভজনা করে যত দেবগণ।। ट्यामात जनना कति ज्यादा ज्यानी। भन्न देवस्थ्यो नाम पर्विता का शनि ।। कामाद्रि मन्ड (मनी नक्सी महस्ती। जिङ्गत 'लाक मार्क श्राहर मार्डी ।। आत् क्रिमिटरन नत-নারী কতজন। তোমারে ভজিয়া পাপে হয়েছে মোচন।। व्यश्ना छो नने कुछी मत्मानती खाता। खामात छक्रन कुल পতী হৈল তারা।। কেবল তোমারে ভলে আমি অভাগিনী उषमात्वा नाम देश्न वाथा कल्किती।। अञ्चव भारत उव नोहि मना लिया। अहे दश्कु इड्ड मना कांत्र क्वीदक्य।। श्वीन त्राधिकात वानी ताथाकाछ कन। এই ছেতু श्रिटत जूनि षां इ इश्य मन ।। ८ डामात मनान मठो दक्वा पाद नाती অংনিশি আমি যার আছি আজাকারি ৷৷ বালি হৈতে রুদাবনে যত গোপীগণ। সভীক্ষণে বলিবে ভোমারে সর্জ-জন।। অতএব কমলিনি বড় সূথ পাবে। কালি হৈতে কল-किंगी नाम उर गारत।। এই जल कथार ज चारहन खबीरकम **इ.स.चारल त्रम्यो १३ल अवस्थिय। उदय त्राक्षांक क**्रि वाधादि गासन। जानन जानदा भीख कदिन। नमना। नथोशन कमलिनि दश्ला निक् धाम । किन कट्ट सूर्व गृर्थ वल इति नाम।।

व्यथ कन्द्र एक्षमात्स

পরার। গৌরমুখ কন পুনঃ শুন মহাশয়। কি কর্মা करिता कृष व्यान निकालत । व्यान कन व्यास्ति क्रियसुक्तन क्रमनीत निकट्डेटिक कॅतिल भारत।। बालक मनाम इति युगोहेबा दया (शनकारण युरथंत तकनी तक हता। मान অন্ত:চলে গেল পোগাইল নিশি। ভাসুর উদয় হৈল প্রকা-भिन निर्मा । वायम विश्व भिक करत कनत्व । ज्ञारम ज्ञारम পুরবানি জাগিলেক সব।। যশোদা রোহিণী উঠি গৃহ কর্ম সারি। মনের আদন্দে জাগাইল নরংরি॥ শ্যা। হৈতে উঠি তবে জীমধুসুদৰ। সুবাসিত জলে করেন মুখ প্রকালন।। कौतगढ़ नवनीटका नहें हा यह एक। कानान निर्मन दांगी क्रत्येद वन्ता। भटक कुछः धका वाक्ति विभा करित निन। मत्मत स्थानत्म दानी क्रम मामाहेल।। शाहिन करत्र দিয়া বলে নদ্দরাণী। এই বেশে একবার নাচ নিলমণি।। মায়ের বচনে ছবি নাচিতে লাগিল। দেন্ত্য দেখিলা সবে মোহিত হইল।। কিন্তু মনে জাগিতেছে গ্রবিকার বাণী। কি क्रि चुराव नाम द्राक्षाकलकिनी।। विक्रकर्र खनाम न्यद्रित পাপ ধার। কলক যুচানো তার কোন বড় দায়।।

चथ बिक्रस्थत मुक्त्।।

পয়ার! রাধার কারণে হরি চিস্তিত অন্তর। কির্পে কলফ ভার হইবে অন্থর।। মায়ার আধার প্রভু অনন্ত মহিমা।
জ্বাতিত বটে কিন্তু গুণে নাহি সীমা।। মনে মনে নায়ায়ণ
করিয়া বিচার। পাতিলা বিষম মায়া কে বৃঝিবে ভার।।
মায়ের নিকটেমুখে নাচে নক্ষলাল। নাচিতেই কিছু ঘামিল
কপাল।। ক্রমে ক্রমে গর্ম অক্ষে ব্যাপিলেক ঘাম। অকস্মাৎ
মুক্তা হয়ে পড়ে ঘনশ্যাম।। পত্মপলায চক্ষু উর্ক্তে উঠিল
অমল কমল মুখ ক্রমে শুখাইল।। নক্ষরাণী দেখে কৃষ্ণ
ভূমেতে পড়িল। শীঘ্রগতি আদি সতী কোলেতে ভূলিল।।
কি হৈল কি হৈল বলে করে কলরব। ধাইয়া আইল ভরষ
গোপীগণ সব।। মুশাতলজল মুখে দের কোনজন। আপনি
রোহিণী অক্ষে কর্মে ব্যাজন।। অথাপি নাহিক স্পাক্ত-না

সরে নিশ্বাস। দেখি যশোমতী অতি গণিল ছভাশ।। তবে ব্রজ পুরবাদী যত গোপগণ। ও নির্বা ক্রুছের সুচ্ছা আইল স্ক্রিন। আর রুদ্ধা রুদ্ধা যত গোপীগণ ছিল। রুক্ অম-क्रम छनि गकरल धारेन। उदय हमावनी शिद्य द्वाधांत्र तांहरत। कृत्कत मृष्ठ्व कथा कहिला मञ्जत ।। हन्ता व्ह ওলো রাধে করি।নবেদন। আচ্মিতে মুচ্ছাগত জীনন্দনন্দন কতজন কত মত উষধ কবিল।। তথালি কিঞ্চিৎ ভার চেতন নহিল। রাধা বলে চন্দ্রাবলী একি অকন্মাৎ। বিনা মেঘে ব্ৰজপুরে হৈল বজাঘাত। কৃষ্ণ যদি ছাড়ি যান এ ব্ৰহ্ম खुरन। তবে আরু কি কারণে ধরিব জীবন।। চল ২ নন্দ:-লয়ে সবে যাই চল। যন্যপি কুষ্ণের ভাল দেখি তবে ভাল।। নভুবা যমুনা জলে জীবুন ভাজিব। পুনর্বার আর ঘরে ফিরে না অ। দিব ॥ এত বলি কর্ম লনী লয়ে স্থীগণে। উপনীত देश नेत्व नत्मत ভবনে । (मृत्थे खब्रवांनी यक विषक्ष इहेश মাথে হাত দিয়া সবে আছে দাড়াইয়া। মুচ্ছাগত বনমালী রাণীর কোলেতে। দেখিগা শ্রীমতিনতী ভানিল শোকেতে।। লোকের গঞ্জনা হেতু নাকান্দে ফুকুরে। বিন্দুং বারিধারা मग्रत्म क्यादा। अक भार्ष कर्मामनी बहिना माँ क्राप्ता। পরে শুন যেইৰপ জীকুফ লইয়ে।। বছলনে বছ্মত শাল্ডি क्दाहेन। (कानमत्त्र श्रीकृत्यद् रेहएना नहिन।। ए दा (मिर्थ मणाता निष्मात जाविया। विक कटर काटल मजी जूमि (नाछोड्या ।

अथ यदमीयात्रं (त्रापन ।

দীর্ঘ-ত্রিপদী। বছমত করি শান্তি, কুংশুর নহিল ভ্রান্তি, তাতে ভাল্তি হৈল সর্বাহ্মন। ছানার ভাবিরা রাণী, ভালে করাছাত হানি, উঠেঃ স্বরে কররে গোদন।। সে রোদন বর্ণি বারে, কার সাধ্য কেবা পারে, বানি ঘিনি আপনি স্থাকিত লিখিতে তাহার হুল, ব্যানের লিখন কান্ত, এই হেডু বর্ণন রহিত।। রাণীর ক্রেদন ছান্দে, যত পুরুষাসী কান্দে, কৃষ্ণ শোকে হয়ে নিরানন্দ। উঠিল ক্রন্দন ধনি, ব্যাপিল ভুবন খানি, গ্যেষ্ঠে থাকি মুনিলেন নুন্দা। তবে অভি ব্যস্ত হয়ে,

छिशनम गटक नटत, उडिवा वाशन खरन।। श्रादिन श्रेतीत म का, दनदर्थन विषम करि, खकमाए कृष्ण खटाउन ।। जाना 'দেখি প্রাণ উড়ে, জাছাত খাইয়া পত্তে, ছিল্লমুণ তরুবর প্রায়। উপন্ন কাছে ছিল, করেতে ধরি জুলিল, বিধিমতে नमाद्र त्याध । क्डिएन छेशनमा, भूनर अद्र नमा, निद्रा-बन्म अत्व युक्ति नश्च । (मथ कि इंडेल द्वार्ग,कत्र छिष्ध व्यार्ग, যে ৰূপেতে রোগ মুক্ত হয় ।। বিচিন্তিয়া বিজ্ঞালন, বিবেচনা करत महन, विभए एक ना करत भावन । विश्वि विश्वित ভারে করে বছ প্রতিকার, যাতে হয় বিপদ্ন মোচন।। এই काल वक्ष्यक, नाम्मरत वृकान यक, क्षाताध कि मारन गरन তার। এ বছ িষম কার্য্য, কেমনে ধরিব ধৈর্য্য, অচৈতন্য কুষ্ণ পুত্র য'র।। হ' কৃষ্ণ বলিয়া নন্দ, হয়ে অতি নিরানন্দ, कांग्पिर क्रुक्ष कोट्ड याय। त्रिशिया क्रुक्ष्य छ।व, जीनत्म्यत . कानाच्येन, देश्न (धन अंशत्नद्र श्रीय ।। (भाक मिल्टिनएड ভানি, ধীরেই কাছে আদি, উঠ বলি ডাকে উভরায়। কছে कवि विकरत, म छाउ (शंधान शहा भाषान दिनातिया यात्र ।।

खथ नत्मत्र कार्याश ।

त्राशिमी (माहिमी भवस । डाल आछा।

ধুয়া। গাঁ ভোলো গা ভোলো; ও নীলকমল গোকুল নিবাসি আকুল হলো।।

লঘু ত্রিপদী। কান্দি সন্দ কন, উঠ বাছাধন, অচেতন কেন রও। বিধ্যু খণিদি, আধ আধ ভাদি, সুধা দিনি কথা কওা। পিতা বলি মোরে, ধেয়ে এসো ওরে, তবাত ধরেরে শিরে। ভোরে কোলে করি, তৃঃথদিন্ধু ভরি, ভাদিব আনন্দ নীরে। ভোমা বিনা আর, কে অংছে আমারং বলরে এ ব্রহ্ম পুরে। দিনকর করেং দম্ম কলেবরেং পদে কভ কুশান্ধুরে।। উঠি ত্ররাকরি, ওরে গিরিধারি, বাধা জল ঝারি দেহ। হেরি ভোর মুথ, তুরে মায় তৃঃখ, মুভাক ভাপিত দেহ।। এই বৃদ্ধ কাল, ওরে নন্দ্রাল, আর ছঃখ নাহি দয়। ভোমা বিনেমোর এই যর খোর, সব অন্ধানার ময়।। উঠ বাপধন, ও নিল্রভন वाद्यक (मर्श्वद्य ८०६म् । शिष्ठा नम्म द्राव्य, कांग्मिमा कांख्य, भाक्त विनास दिया। टाउ प जननी, इटा भागनिनी, মণিহারা কনি প্রায়। তোমার লাগিয়া, ব্যাকৃদ হইয়া, ভূমে পড়াপড়ি যায়।। ছের স্থাপণ, শোকে অ:চতন, ধেরুবংস আদি করে। তোর মুখ হেরে, ভাসি ভাঁথি নীরে, কেই না ধৈরজ ধরে ॥ উঠ ওরে বাপ, যুচাও সন্তাপ,চাঁ। মুথে বাপ বল eca निनमिन, यूड़ाक পরাণি, खटन তোর সুধা বোল।। এই कत्म नन्म, कतिशे धवन, छाकित्हम छ छ हत्। भाशन সমান, দেহে নাহি জ্ঞান, আকুল হইয়া ঘরে ।। ক্ষণে মোহ ষায়, ভূমেতে লোটায়, কণে কনে উঠি ধায়। কণে চমকিয়ে উঠে শিহররে क्रूटका निक्छे यात्र ॥ इवाङ भगावि, अक्रू-কেরে ধরি, কোলে করে ততক্ষণ। হেরি মুথ শশী, আঁথি জলে ভাগি, ঘন করয়ে চুম্বন।। ক্ষণে আঁথি ধরে, রাথে হাদি পরে, কলে করে হায় । কলে কোলে হতে । রাখিয়ে क्रमण्ड, अक्रूट्ड (हर्म त्र ।। दिश्व दे प्रमा काहिएड, काहा ए था देश अ एए। न्यू पशीन इंदर, निश्वाम ना वंदर, यन দেহে প্রাণ ছাত্তে। পুনঃ চমকিয়া, হা কুঞা বলিয়া, উর্ন্নখানে छेठि धांश। करन कात्म शारम, करन कछ छाटम, रयमन भागन প্রায় ।। এরপ হট্য়া, বিলাপ করিয়া, জীনকা রুশাঞ্চ অতি। শক্তি হীন প্রায়, বসিয়া তথায়, মুখে না স্বরে ভারতী ব্যাগ্র চিত্ত হয়ে, জ্ঞীদামে ডাকিরে, কহে অতি মৃত্তাবে। তুমি রুক্ত প্রিয়, রুক্ত তোর চিয়, অতিশয় ভাল বালে।। মোর কথা রাখ, ভূমি ক্লেড ভাক, ভোর কথা ক্ল রাখে। শুনি নন্দ বোল, শোকে উত্তরোল, শ্রীত্বর্গা কুফেরে ডাকে।। खथ बीनामानित कांडक्कि।

পরার। জীনাম শুনিয়া তবে জীনদের বোল। অধিক শোকেতৈ মরা হইল বিহলে।। ছই চক্ষে শতধারা বহিতে লাগিল। আন্তেব্যান্তে জীকুকের নিকটেচলিল।। স্থবলাদি করি যত শিশু সঙ্গে লৈয়ে। দাভাইল চারি দিকে ক্ষেত্রে ঘেরিয়ে।। ভবেত জীনাম ভাকে করিয়া মিনতি। উঠউঠ ওরে ভাই রাখানের পতি।। ভুমি বিনে রাখালের আর কেহ নাই

উঠরে২ ওরে প্রাণের কানাই ।। কি কারণে ওরেকালু হইলে ध्यमन । তেथित भारक छू । उस्म स्थ तृष्मावन ॥ ध्रहे खटक বসতি করত্নে যত জন। স্বাকার প্রাণধন ভূমি সে জীবন।। आह यान कनकान ज्ञाना छेठित्व। मकत्न जाकित्व थान निम्हत कानित्व।। अत् कांच्य त्थांत मत्न अहे कि चाहित। भाक निकु मनिरमट जायात्य त्वांकृत । अउ यनि कामा-हैं दिन ভार मान। है स दृष्ठीकारन छात्र वै। होहान दिन বামহাতে ধরি কেন গিরি গোবর্জন। রক্ষা কর ওরে ভাই पारे बुन्नायम ।। किकांबरन नियलारन वाहारन बाथाल । वरकत ্উদরে কেন বাঁচালে গোপাল। দাণারি করিয়া পান রাথ श्रीभश्रत्। 'भिछाद्व कवित्व वक्का मर्श्व प्रश्नात । वक्कन আলয় হৈতে আন সেই জনে। তোর শোকে প্রাণ ছ'তে না (मर्थ नग्रदन ।। जनमी कनक मद्र मद्र (शांभीशन । अद्र इद् धारक (कन मा कह तकने। धवली भागमनी कानि (धक्र बर्द्रश्वा ज्व क्व जात्रा किছू नो करत ज्वन्।। अक দুষ্টে তে'র মুখ নিরীক্ষিয়া আছে। অনিবার বারিধারা नवटन शनिएक।। किंक कांचु नह त्वन हम त्वार्छ याहै। (धनू वर्ग नर्य मरत कामरन ह्या है।। मर्व मिनि कुच्रल (४-लाक्ति छाई। द शालत दाखा इत्य रेक्पर कानारे।। इन-মতে এ শামাদি যত শিশুগণে। আক্ষেপ করিয়া বহু ডাকে करन करना। किছू छ नहिल यकि क्रस्था हिल्मी छर्दछ জ্ঞাহৈর। হৈল যত লোপনা।। নিশ্চয় কানিয়া মৃত্যু কান্দে छोक्रश्रदा कांत्र माधा (म द्वापन वर्षिवादा भारत।। छद वल्रान्य (मिश्र विश्वय हरेला। दर्शन मर् छीक्ररणव (हउन নহিল। আপনি অনন্ত অন্ত ভাবিয়া পান। কি কারবে কুষ্ণ চল্ল হারাইল জান।। ষ্র্য মত্য পাতাল ভাবিয়া বি-ৰভুবন কোন স্থানে কিছু নাহি পান অন্বেষণ্।। আশ্চ্য্য मां निया मदन द्वारियो नन्त्रना देवलांका विवयोगिका कर्त्रमा भारत । तोशनरन वनदम्य तरनम उथम। किছू कान कांस क्रव गकल दापन।। भित्रायत छाकि आमि करत छेट्र श्वति । एति एथि किन द्वत देवन नीलम्बि ।। अञ्चिति विन

कारम करिया गाखना। दिल बर्ल दलाई रिन् निकारक द्यायना॥

जाथ वलदमदवं व्योदकथा

भीर्ध-खिल्मी। बनवाम निक्षांधीत, मघटम क्र कांत्र कति: বিজ্ঞা স্বরে ভাকেন তথ্ন। বলার বিজ্ঞার শালে, ব্যাপিলেক ত্রিভ্রনে, চমকিত যত পুরজন। অতন সুংল তল, বিতলাদি রসাত্র, ক্রমে স্থা পাতাল ভেদিল। তথা য় বসতি কত,নাগ कुर्या कोनि यक, नकरमाट वाँ शिष्ठ नाशित ।। मश्च स्रार्भ सूत् शंव, मटव हमकि उमन, देकनारम कानिना शका नम। बच्च লোকে ত্রনা শুনি, কম্পিত হয়ে অমনি, সঙ্গে লয়ে যত দেব গ্ৰা আকাশ বিমানে আদি, দেখে যত অজ্বাদি, ক্ৰম্ শোকে লোটায় ধরণী। অটেডনা ভগবান, ভূমে গড়াগড়ি यान, प्रतिथ खन्न विधि भूलशानि ।। काम्पर्यः। मानिया महनः লয়ে যত বেবলনে, বিধাতা ভাবেন সর্ব স্থান। কোথা প্রভু माद्राधन, कि कांद्ररन व्याहण्डम, एकर किछू मा शाम मक्काम ।। মায়ার আধার হবি. বিধি ভব আদি করি, শোকায়িতে नकरन छ। यिल । अर्थ रम निकात ताल, त्कन क्रकारम रूल ব্রজপুর শোকেতে মজিল।। উঠ ওরে বন্মালি, স্থা সঞ্চে কর কেলি, ডাকে তোর দাদা বলরাম। জিলেক যে খেলা বিনে, নাহি থাক কে ন দিনে, এবে কেন করিছ বিস্তাম । ভিলেক আমারে ছাভি, নাহি বাও কারু বাভি, কি ছোবে शाष्ट्रिल এकद'रत्। छेठे क्रयः एं हे अत्व,कथा कर शत्न धर्व, लामा दित्न देधअञ्च ना धटत ।। जननो कनक लात, लादक हा म गाउँ, जूरम लुप्ति कान्मि ह कानाहै। जुमिस्त नर्स**स्** थम, मा वांट्यत श्रायमम, जानी वित्म अपन तकह माहै॥ ভোমায় পাঠায়ে বনে, চেয়ে থাকি এক খনে, কজকৰে আসিবে ঘবেতে। শুনিলে বেণুড ধ্বনি, হয় যেন পাগলিনি, ध्या या न कदात को लिएक क्रिना शहरक बरन, मारवत चार्क्क वितन, नाहि यांड कर्यन शांगान। अथन काहेरिय मांत्रा, अदक्रवादत छ। ए पित्रा, दकाश त्तरल मारसत छूलाल

মায়ের রোদন হরি, সহিতে নাহিক পারি, এই চেতু বলি বাবে বার। উঠবেং ভাই, জার ছঃখ দিও নাই, অজপুর খুয়াবে ভোমার।। আর যদি কণ্কাল নাহি উঠ নন্দলাল, তবে প্রাণ ভারিবে নকলে। আমিও ভোমার শোকে, মুখ ना (नियाव लाटक, श्रद्धानिव श्रमात करना। अहे करण (थन करत, बलरमव शिक्षांचरत, ऐक्रिक्टत छोटकम बांगाहै। ভথাপি নহিল প্রাণ, দেখি লোকে হতজ্ঞান, শিক্ষা ফেলি বসিল বলাই।। বলগাম অকের আভি', রজত প্রত নিভা; ভাবে প্রভা ২ইল এমন। তুই চক্ষে বহে ধার', যেন গঙ্গা শভ ধারা, পিরি হতে হতেছে পতন।। বলরাম শোকে ভাষে ट्रिचि भागभाग श्रीत, निरास क्यांनिल क्या नाहे। हा क्रमः বলিয়া তবে, করি হাহাকার ববে,কুফ শোকে কান্দ্রে স্বাই নৰে বলে আর কেন, যমুনায় তাজি প্রাণ, ক্লা যদি হাড়িল শরীর।। এত বলি গোপকুল, হয়ে শোকে সমাকুল, মরণ, মন্ত্রণা কৈল স্থির। এসব দেখিয়া ছবি, মনেতে বিচার কবি, লোপ গোপী ছুঃখ বিনাশন। রাধার কলস্ক যায়, সকলেতে मुध लाग्न, छेलाग्न 'ভाবिला' नाबाह्न। बिद्धर्श क्षत्राम बत्त, জ্রীকুম্বের পদতলে, দয়া কর ভকত বংগল। শিশুর পুরাও जान, कर श्रञ्ज निक मांग, चाल निरंत हत्न कमल।।

चाथ देवरमात्र कार्यम्य ।

পারার। গোপকুল আকুল দেখিয়া নর হরি। মনেতে ভাবেন তবে উপার কি কবি। ধেদেখি শোকেতে মগ্র জদ বাসিগণ। কণেক বিলয়ে সবে তাজিবে জীবন।। অতএব বিলয়েতে অনুচিত হর। তুরায় কবিতে হৈল ইহার উপায় করিতে হইবেদূর কলক রাধার। ব্রজবাসী সুখীহবে চেতনে আমার।। হেনমতে করিতে হইবে সুবিদ'ত' কত ভাবি চিন্তামিণ হৈল চিন্তাবা না। ভাবিতে ভাগিতে ছেল কপ হৈল হরি। শুনহ আশে চক্ষিণ অপুকা মংগুরি।। পুক্রিপে মশোদার কোকেতে রহিল। দেহ হৈতে আন্য রূপেরাহিহ হইল।। সে ক্রপ দেগিতে কেহু না পায় নায়নে। অলকিতে গ্রেলা হরি নগায় জ্মণে।। কি ক্র সে অপুকা ক্রপের বর্ণ ন

অভিন্ন ১ইন যেন ভিষক নকান। কুফোর অঞ্জ কুফ সম্ कत्नवत्। इंशांट वृदाश्वाभ कि कर विख्य। खेर्बाध भूनिङ স্বৰ্ণ কৌটা করতলে। অধিকন্ত জ্যোতি:যর পুঁথি কক্ষ স্থলে শিখ চুলদীর্ঘ কোঁটা নাবিকা কপালে। রোগী অত্মেবকরি खमरा (शाकुटन ।। (इनकाटन नश्रतीत लाक कान मन পথেতে পাইল সেই বৈদ্য দরশন। জ্বত নিয়া প্রবাম করিয়া देवनावदत। कतरपाफ कति किছू निर तनन करत्।। व्ययूख्य করি বৈদ্য হবে মহাশয়। কোথার নিধাসতব গমন কোথায় অক্সাৎ গোকুলে হৈল অগেমন ভাগ্য হেতু পাইলাম তব পরশন।। বৈদ্যাবলে এত কেন করিছ মিনতি। চিকিৎশ করিয়া ভ্রমি আমি বৈদ্য জাতি।। অনুমান করি রোগী খাকিবে জাঁগারে। নতুবা এতেককেনবিনয় আমারে॥ করে कुछ अलि ध्या (महे जन कया। य कथा कहिला मेखा वर्षि মহাশ্র । শুনিরাছ নন্দ্রোষ ব্রজের রাজন। অক্সাৎ মুচ্ছাগত ভাহার নন্দন।। কন্ত কন্ত চিকিৎসা করিল কৎজন কোন মতে না পারিল করিতে চেতন।। নন্দমুত শোকে মুখ যত গোপকুল। বৈদিন করিছে দৰে হইয়া ব্যাকুল। ভূমি যদি কুপা করি দেখ একবার। ভবে বুঝি প্রাণ পার नत्मत्र कुमात् । भूनि देवग वत्त (क्रांशी (प्रशित्न नग्रता। সাধ্য কি অসাধ্য রোগ বলিব কথনে।। সাধ্য হইলে মহে।-ষ্ধি করিলে দেবন। অবশ্ব হইতে পারে রোপের মোচন। किन्तु अभि नःहि याहे दिना आवाश्टन। दिन्नाम याहेव दला পথিক বচনে ॥ १८८३ পথিক সোপ কছে সকরে। कन्दि দাঁড়াও এই রক্ষ সন্নিধানে।। আমি পিয়া সমাচার কহিব তথায়। আপনি আদিয়া নন্দ লইবে ভোমায়।। এতবলি देवग्रन्दत ताथि । नहें ऋाम । नत्यादत कहिल शिवा देवरगृद्ध আখ্যান।। শুনি নন্দ দেই খানে অঃসিয়া ছবিত। হেবিয়া रेवरनात काल इहेला रमाहिखा। क्रांस्थत ममान वलु रहित्रा তাহার। অন্তবের মধ্যে মেহ বাজিল অপার। বিনয়ে ককেন নন্দ এদ সহাশার। কুপা করি রক্ষা কর আমার তনর नत्मत कांग्लान देवना इत्रविष्ठ हत्य। हिनतन बीद्य भीदत

नम्पत कांनरम् । उत्त नम्म कन श्रुवः मधुत जन्म। वादि তেছে কুশাঙ্কুর চলিতে চরণে। কুপাকরি মোর কোলে কর আবোহণ। কণেকে লইয়া আমি করিব গমন।। বৈদ্য কন পিতৃ তুল্য তুমি মহাশয়। করহ উচিত তব যেবা ইচ্ছা হয়।। ভবে नम्म देवमावदत काल्लाटक कत्रिशा। पूलटक भूतिल काक्र উঠে শীংরিয়া।। আপনি সে বৈদ্যবাপ জীনকানকান। এই হেতু জীনদের উল্লাসিত মন।। কুফেরে করিরে কোলে হৈত सूर्य एक। देवरमाध्व कवित्रा कारन देवन (मह मका। महमन् खक्ताक भारतम एथान । हेशारक नहेशा मन देश अनन ॥ धारेक्न रेश्टल वृथि भारेद एनग्र। नष्दा दिशाम दिन আৰম্প উদয়।। এত ভাবি যান নক্ষ লয়ে জ্বতত্ত্ব। আপন আলয়ে গিয়ে উত্তরে সত্তর। বৈদ্যদেখি সর্বাজন ইইল হর্ষিত রোদন ত্যক্ষিয়া রাণী উঠিল ছবিত ॥ সমাদরে বৈদ্য করে ৰদারে তথার। কর্ষোভ করি রাণী বিনয়তে কয়।। প্রাণ দান দেহ তুমি আমার নক্ষনে। ত্রকেবারে বিকাইব ভোমার हत्र । रेवन वरण रहन भारता अलूहिल वस । कननी সমান ভূমি আমার যে হও।আমা হৈতে বাঁচে যদি ভোমার कांनाहै। पूजकारन क्या द्वारण कात्र नारि हाहै।। छित इंड कननी (शांना इंड डेडला। (मिथि कार्श किया (ब्रार्श ক্লুকেরে বেরিশা।। এতবলি খাতে ব্যাতে কুফ কাছে নিয়। मानिका कर्भान राक (मर्थ रुष्ठ मिश्रा । क्रिक्स मर्क्त अन कतियां म्लानंन। ज्वतान्द्र रख श्रीत त्वस्य नक्ता रख ছাড়ি হেট মাথে ব্ৰিয়া কি'ঞ্চ। ব্লিতে লাগিল তবে ববার বিভিত। ধাতু নাহি পাওলা যার জঞ্চ হিমময়।। মৃত্যু गम वर्षे विश्व कला मृत्रु मग्ना जाव अकार्याट आर्थि । य प्तिथं लक्ष्ण । अञ्चमान कति (मर्टर आइट्स कीवन । विकु छ রোগের কিছু না পাই নির্ণয়। এই হেন্দু ভাবিতেছি বিষয় সংশ্র। তত্তবলি হেট মাথে ব্সিয় তথ্য। দেখিয়া স্বার মন टेश्ल छेठाछेन ।। मटव वटल अशंभन्न कि श्दव हेशत । द्वेवना বলে ত্রি ৩৪ দেখি আরবার।। এত বলি ভ্যোতিষ খুলিয়া ভতক্ষণ। খড়ি পাতি আর বিনা করিতে গণন।। ছিল কছে

কুক্ত পদে করি পরিংগর। কে বুঝিতে পারে প্রভু মহিমা ভোমার।

व्यथ रेवरमात् अवना ।

দীর্ঘতিপদী। জ্যোতিষ খুলিরা বৈদ্য, ভূমে খড়ি পাতি মদ্যার।খে অক্ক রিয়া পাতন। অন্য একরাখি পরে,অক্টেড श्वन करत, धूमः चस्क कत्रसः इत्।। बहेन्द्र श्रंष्ट्र पति, হরণ পুরণ করি, ক্ষণকাশ করিয়া গণন ৷ রোগের করিয়া স্থিত কহিতে লাগিল ধীর,যেই বাপে চইবে মোচন । বৈদ্য श्वनाय क्या, त्वान देश्ल प्रनिन्छ । किन्छ वर्ष्ट्र विषय घिल । य मिथ अर्थ थान, निमादनत अव्यव्हान, क्लांडियत মতেতে মিলিল। অধিক কিকব আর, অনুপান পাওয়া ভার এই ং বু ভাবিতেছি মনে। শুনে উপানন্দ কয়, যা কহিছে মহাশয়, তাহা আনি মিলাব যতনে ৷৷ চেক্টার অসাধ্য নাই, (हकींग्र छूल ं• भारे, **এ**ই कथा गर्स (न! दक क्या खाउ এव (हकी। করি; অবস্থা মিলাতে পারি, কহ ণেখি শুনি মহাশয়। বৈদ্য कट्ट खन उद्य, य अयद्य द्वांश याद्य, अविध আছ्द्र सांद्र ঠা। প্ৰিব্ৰভা হবে যেই,ওম্ধ বাটিবে সেই,এই মত সভী মারা চাই।। পতিত্তা সতা নারী, ককে করি হেম ঝারি, यवून। देश्ट जल जानि। त्र जटन अवध क्रांत, क्रूक्यू थ मिर्द তলে, রোল মুক্ত হটবে তথনি। শুনি উপানন্দ হাসি, কংহন মধুর ভাষি, এই হেতু কিলের ভাষনা। নগর এ বৃদ্ধিনে, मठी बाद्ध वहकारम, देवना वत्त कथाएं करवना।। मूर्याष যে সভী কয়, ভাহাতে প্রভাৱ নথ পরীকা করিতে হবে তার পরীক্ষায় উহবিলে, জবেদে সভীর ধ্বনে, হইতে পারিবে উপকার। মে নিয়ম পরিক্ষার, কহি শুন শুবিশুর, কেশ তুলি মন্তক হইতে। গ্রন্থ দিয়ে দীর্ঘ করে গিয়া ব্যুনার তীরে, দেতু এক হবে নিশ্মাইতে ॥ পাশ্ব ভাবে কিছু ভায়, ना थाकित्र यात्र जात, बक क्रिंग त्रजुनीयाकात । जाहार ज यसूना शात, इहेटवक जिनवात तिहै नाती गठी गाँदासात ॥ छेशानम कन पूनः कष्ट्र कि गस्टत (इन, अमन मिड्ड इंड्रा । । तुभरेवमा बदन मछी एव। छात्रात्र व्यमाधा किया, प्रश्नाद्य

প্রমাণ পুন তার। অযোধ্যাতে রযুপতি তার জারা সীতা मणी, तार्व इतिशा सहैन जाया। तशूमार्थ क्यान कति, मन्दरम् त्रावन माति, गीटा उद्यादिन शूनदाय।। किन्छ मिट द्रयूपि, क्यानिया मोखाय मखी, उद् करतन शतीका विधान। यटक बानत मितन, काके चानि वाध कातन, वाधि देशन शर्वाड व्यमान ।। मछी व्यत्नामन खात्रः मद्व करत हात्र हात्र भरन ভাবে कानकी मांतल। गडी नाती खड़े क्या, जात कि कानल . जत, ज्लामार्क भोडन इहेल ॥ कवि मार्क भीडा (मरी, **এরিংনের পদ ভাবিঃ আনক্ষেতে বসিয়া রহিল।, অগ্নি হৈল** द्धनिकान, भारत छेठि (प्रहे द्धान, शिंछ भारत व्यागि धनियन। कानम रेट्ट वक् अ श्रीका नरह पक, देख किन जाविह गः भारा । भून खन कहि गात, कती वादा कन बाद, हिदकः ल, विधि भतीकात ।। এত यांक देवना कन, गटव वसकिल मन, छेशांस्य हान नन्त्र शादन।। नन्त्र कन छाव दक्दन, बिछा,न त्रमधीशटन, नाती मर्च नाती जान काटन । छनिहा नटमत वानी, मात्रीन्टन कामांकानि, बटन अकि दमांच नर्वनाम। कि घडिट कि देश, कानकानी देवना आहेन नाती कुछ् कतिए धकाना। अष्ठतीनाम वटन, बीकूटकत नण्डल, मही কর ভকতবৎল। শিশুর পুরাও আশ, কর প্রভু নিজ দাস **जिट्ड निरंश हरून कमना।**

> উপনন্দ दर्जुक नावीत्रात्वत्र का स्वान क नावीत्रात्वत्र পत्रम्भत खन्म कत्र।

পরার। নদের বচনে উপনন্দ হয়ে ধার। মধুর নিস্থরে কহে বচন গভার। শুন শুন ব্রজ্বাদী নারী বভজন। স্থকরে শুনিলে সবে বৈশ্যের বচন।। যে হও পরমা সভা এ ব্রজ্ব মগুলে। পরীক্ষা করিয়া বারি আন কুতৃহলে।। ত্রিভুবনে বত কীর্তি রবে চিরকাল। অধিকন্ত প্রাণ পাবে নন্দের তুলাল।। পর উপকার হবে বাড়িবেক মান। ইহার অধিক কর্ম কিবা আহে আন। অভশ্যর উঠ শীপ্র সভা বেই গুনা। নন্দপ্রতে বাচাইয়া রাখাং ঘোষণা। এত যদি বার বার কচে উপনন্দে। কোন নারী কিছু নাহি জালে ভাল মনদা। হেট মাথে রচে

मत्व मौरि कृदत दर्शन। जालमा जालीन लात कटत शंख-त्तान ॥ शत्रण्यात व छेशात वरण वात वात - क्रूम माध्वी मछी वर्षे इंड आछम'त ।। भूनिया छाशाद क्या कट्ट जात-জন। ভুমিত প্রধানা বট সভীতে গণন।। চির্ফাল সভী বলি হাতানাড়া দাও। এবে কেন আরু জনে বল ভুমি যাও ममिनी (यह रह्म भारेता तंत्र इता। खाक्वश्र श्राज्यता वाका देश भना ।। তুনিতো আছर मडी आमात्मत घरत । পরীকা করিয়া জল আনহ সম্বরে।। পতির কাছেতে সদা সভীত্ব জানাও। পত্র অবশিষ্ট আর পদোদক খাও।। একদিন পতি যদি স্থানান্তরে রয় ! সে দিন উপসি থাক আহার না হয়।। ঘরে পাইলে পবে ধেয়ে গিয়া ততক্ষণ। সুবাসিত জল দিয়া र्पात्रां हे हत्।। अहे बर्ण छाटे र्मात वर्ण वार्थिशह । जामा দের একবারে পর করিয়াছ।। সভাব জানাতে পোড় মুখে পড়ে জ্ল। এবে কেন অধেমুথে রহিলিতা বল। শুনি নন-দির বাণী অন্তরেতে জলে। জ্লেবিষভরা মুখে মধুখনে বলে বাকা মুখে চোখা কথা নাহি বাসে। লাজ। যে পারে সে জন গিলা করুক এ কাজ।। দেখিবারে পতিজ্ঞিকা পার আমার। অদ্যাবধি মোর কর্মে ভুমি লহভার।। কহিল যে তোমারে করেছি আমি পর। অদ্যাবধি ভাই লয়ে সুখে क्र घत ।। এই ज्ञान कथात कोन्द्रण मात्रीनेन । श्रु न्न्रात क्लिमन केल्रा गर्काकन। छाहाँ (मधि नन्मतानी इहै। ভাবিত। রোহিণীর প্রতি চাহি করেন ইঞ্জি। ইঞ্জি वहरम द्रांभी करहन एथन। द्रम्भीतरभद्र द्रम्म कृतां छ छन्।। मडी मास्ति निकटिंटल यात्रं शतिशति। विक वटम ब्यान एमड शाशांत्न ववांत्र ॥

श्रावादिनी कर्कृक मात्रीनायत हम्म निवादन।
भारत। तानीत वहत्व उटन उठिता ताहिनी। नवाकादत कर्न दिनी समध्य वानि।। विभाग विद्याप कर्ता अंडि सम-कर्न । यदमानादत कृषा कृति हास द्वा दिनामान।। मञीत हत्त कृति स्वाद्ध क्रिक्टिंग कृत्य वाहाद्देश वार्थ त्वाकृत्व दिन्नोडि।। सन स्वानि कृत्य धरन बाहाद्द देव सन्। हिन्नोन

ভার मञ्जू इंटर क्रुव्यसम्।। विद्रम्य मन्त्रद्यायं क्रुट्माना द्रिपेरिनो । एति कार्ड दिना मुल्ला विकादव अमनि। आहेमड विनदत्र ए द्यारिनी केरिन । द्विमनी नत्न बन्न करम ए युक्ति किन्छ क्ष्रह (मर्च भाव ना करत चौकात। अवटल छेहारत छूमि इंड बाक्षमात । दश्ममण्ड कड माति कदत् कामाकामि । गक्रा दल क्रि महो कानि ।। धहे बर्ल शब्ला विल्ह भवद्या । जात भाषा माजाहेश कथालती वाह । जाहारव চাহিয়া । कर नार्शिक क्रिया । क्रिक कनिक्रमी विल कानदा মিশ্চর। তাহা দেখি জীমতীর বাবে অভিমান। নয়নের कटन ভारित कमन बद्धान । निश्वान हो छिता शार्शत र कुक विलिया। अमरी रुषा इ नाथ (कामाद्र क्षिया। महे स्कू यूना करत नाहि करह कथा। जाहार ज क्रमर श नि छू नाहि भात ব্যাথা। যদ্যপি দৈখিতে পাই ভোমার চেতন। তবেত এচুখ মোর : ইবে মোরন। নতুবা ত্যক্তিব দেহ যমুনা জীবনে অস্তে र्यम शारे छान छ दाछ। हत्र । अञ्चल गाथि करन छारम कर्माननी । अधारमण्ड गडी हाहि खरमम (वाहिनी ॥ मकरणत कांद्र एनवी याद्र शतिशत । कांन नावि आति ख्या नाकरत श्वीकाद्या जाश दिन्द्य देन्द्रा वह देन ग्रीहिकादि । हन्द्रावन মাঝেতে কি माহি नতी न हो ।। धिक धिक शाकून वानिमी নারীগণে। একজন সভী নারী নাহি এই স্থানে। সে कथात्र मक्का (शर्म यह नावीशन । कार्यात्र्रथं तरह मर्व ना टिशंदल वनम ।। दकामकम किछू धनि छेखत ना निर्मा उद्देश द्रिश्नी दम्बी निद्रष्ठ इड्डेन ॥ दर्गश्चित्रा यट्नामा तानी कट्टन রোদন। মোর ভাগো সভী খুনা হৈল রুদ।বন।। ধনিষ্ঠা मार्मिट्ड मेथी यत्नामात हिला । जानीत कर्नत काट्ड कहिट्ड नातिन ।। करीता कृरीता हुई जन रक गडी। वित्रवाल व গোকুলে আছমে থেয়াতি।। কিন্তু ভারা কৃষ্ণ পক্ষে বিপক্ষ नगाई। जातित्व कि ना जानित्वकहिटक छताहै ॥ तानी बदन ভान मान कहिरन जननी। करीना निकार हन याहेव आ-পनि ।। अवश्र कानिय ठाँद्र क्तिम। मिन्छ । विक पटन भोज्ञान बद्धा यटमामित्।।

कथ किंगात निकटि यटेगामात शमन्।

लघु-जिल्मी। एटव मन्मतानी, रचन लाननिने किना ভবনে यात्र। नाहि किছू श्रुटि, চলে শীল্রগতি, ম্বিতারা क्रीक्षात्र । धुनात्र धुवत, नर्वकदनवत, बुक्टकन ज्ञानब्दी। সক্ষে চারি সথা, ধনিষ্ঠা সমূখী,শরলা শক্তেত তুল্গী।। এই क्ल दावी, मदम्दल मामनी, खंडिना छात्न विशा। काथा त्मा कृष्टिनां, विल छाक दिना, कृष्टिना चाहेल धाहेशा ॥ प्रिथ नमात्रागी। क्रिंगि वाश्रीन, कामन व्यानि (यात्रात्र । देवन् देशि इत्त कुछ अनि, विनद्भन किका नग्न । स्ट्रान्ड नकन, उत् करत **ছल, एम किছू नार्डि कार्या।** क्रिश विमय, कुणन सुधाय, यर्भामाक्रिविमामारन।। वरल यर्भामछी, कि कव छात्रछी, কুশলায় বিবরণ। আঞি দিব ক.ল, কেটেছে কপাল, হারা-রেছি কুঞ্ধন ।। ভানি চম কিয়া, উঠে শীংরিয়া, বলে একি বর্মনাশ। হাদি হাউভরা,মুখে সকাতরা, করে কত হা ছংগশ किंदिए किंदिन, कि कथा किंदिन, श्रीस्ता विकास दिसा। श्रीक कक्षांए, मिद्र बद्ध घाए, कर मिश्र विभावित ॥ धानी वटल आह, कि करिव ছोह, आमाह प्राफ्त केलाल। नाहित्व नाहित्व, शद्य चाहित्व, मुक्ति शन नन्तनान ॥ to जन कार्त्र के कार्त के कार्त्य त्याम क्रिय कार्रम । कार्त्त के क कन, देवना विक्रकन, विवध धर्माध कारन ॥ कहि वस्त्रम, ना थांत्र क कम, अर्थ विकल इहेल। भारत अक मन, देवामा दमनामन ত্রপমাঝে উত্তরিল। পথে দেখা পাইরে, ভাগারে ডাকিয়ে আনিলেন ব্ৰজ্পতি। সে জন আসিয়া, গোপালে দেখিয়া, किश्ला अहु उ अखिया विश्लिक अहे, मछी मांदी (यहे, यम-नात कल श्रीन अयथ खनित्य, पिटल था अया है द्या, ज्द नाटि नीलमान ॥ मशी ध्य श्रेट्यं भतीका कतित्व, यसमात छीटत সিয়ে। ষয়ুনার পার, হবে ভিনবার, এক কেশ সেভু দিরে।। ज्य कानि गडी, शाब्दी सुक्षमडी, काश्य स्टब क्टन छ ताब कथा खरान, या नाती नान , कन ना करत श्रीकात ।। जामि अधिन धनी, शिक्तिवासगी, एवं नमा (वह नाहे। एकि नसी कति, आत्र यमि बाति, एटवर् लोशां म शहे ॥ भूमिश

किता, केवन शांतिना, वर्त भी कान छात । यस्नाय निरंत क्षि त्म हित्र, भांत रख्या जिनवात ॥ भांठ भांठ वात, रूड भांति भांत, किन्तु और इंद्या जिनवात ॥ भांठ भांत वात, रूड भांति भांत, किन्तु और इंद्या जिनवात ॥ जामात्र स्व कना।, में निर्धा भांता। यथा दथा ॥ जामात्र सिक्कानि। में किंदी तथी आणि, स्वरी रुप्त स्विधान ॥ अर्द्य विवास । अर्द्य विवास । जांभांति । किंदी । कि

थथ किंगात कृषीनात कृथाभक्षन।

পরার। শুনিরা মাথের কথা ক্রবিয়া কুটলা। কর্কণ বচনে काटण कहिएक मानिना।। छान देशन मतिन तम मत्स्रत कुमात युक्ति शतम भक्त काशान मामात ।। यात करना घटत शरत লজ্ঞা সদা পাই। সেজন মরিলে ভাল আর কিবা চাই।। যার মুত্য হেতু প্রজা মানি দেবস্থানে। তাহারে বাচাতে যত্তপাব ্রিক কারণে!।ভোমার কুলের খেটা দিল ঘেইজন। ভূমি ভার হিত হেতৃ করিছ বতন।। যেবল সেবল মাগে ভাহা না চইবে वाहाहित्व नन्यत्व साहत्व मातित्व। वाह .क धमन मठी चाह्न वृष्पावत्न। वन चानि व हाहेदव नत्म नम्पत्न ॥ चड এব ভূমি আমি না গেলে তথায়। অবশ্য মা, বে শক্ত একথা किण्डा । मूनि कृषिनांत वःशी श्राविमा अपिना । श्रावांच वहरन তারে বুঝাতে লাগিলা।। বে ক'হলা সভাবটে দকলি প্রমান किल जालनांत्र मना हाहि यममान।। एक्यूट्ड वाहाहेटड नाहि त्यांत मन। एटव रच चाहेटक ठाहि चटमत कातन।। रच कर्या कितिए ना भारित नारितर। मिकमा कितिरत की छि उटह . जिङ्गदन ॥ Juaifale यून्ड किर्छ ध्विद मनाहै। किर्ण কুটিশা সমান দতী কেহ নাই। বিশেষভঃ সভিত্তপে জানেস্ক क्रम । भारताल विलिट्स उद्य थाकिटस कारण । जगरी दिलशे। পুने इ वित्व नवारे। अरे दश्कू अरेक्स कविवादत हारे ॥ अरु यमि क्रिना विनना वृकाहेता । कृषि ा उपिना उप कर्रावड रहेशी। आ'ट्डिवाट्ड डेठि उदव आनिष्ठ मदन। आहेला छ-मिना गर घटमाना नगदन ।। कृषिना घटनाना नटन कदत व्याप-

পেত। আদীর্কাদ করে রাণী শিরে দিয়া হাত। তবেতজটিলা বলে শুন বদোমতি। জল আনি বাচাইব তোমার সন্ততি।। এতেক শুনিয়া বাণী রাণী হর্ষিত। জটালাকুটালা লয়ে চ-লিলা ত্রিত।। আপন আলয়ে গিয়া উপনীত হইয়ে। কহি-লেন নন্দরাণী বৈদ্যেরে চাহিয়ে।। এই আমি আনিয়াছি সভী ছইজন। যে হয় করিতে কর্মা বলহ এখন।। ভিল্প বলে বৈদ্যর্থী দেব ভগবান। চলিলেন কেশ সেতু ক্রিতে নির্মাণ অথ বৈদ্যের কেশ সেতু নির্মাণ।

দীর্ঘাত্রপদি। সভী দেখি বৈদাব্য, হয়ে অতি অষ্টান্তর. সম্বরেতে ময়নার যান। মাধা হৈতে তুলি কেশ, লইলেন অবশেষ, কেশ দেকু করিতে শির্মাণ ।। যমুনার ভটে গিয়া কেশে২ প্রতিষ্ দিয়া,শতধক দীর্ঘে বাড়াইয়া যমূনা উভয়কুলে তুইলাল রক্ষুলে, টানা দিয়া রাখিল বাক্ষিয়া। পার্ম লালে যোগ তার, না থাকিল কিছু আয়, নিম্নতারে রং শুন্যময়। ভার নিমে সুগভীর, অতলম্পশ নীর, দেপিয়া মনেতে লাগে ভन्न ॥ बह बाल तिकु कति, नत्मत मन्मिद्द इति, देवमातां अ व्यानि चत्रों कर्ति। क्रिट्लिन गांड चर्य, मही नर्द्य नर्श गर्व পার হয়ে আনি দেহ বারি। তবেত জটীলা ধনা।,নারী মধ্যে क्छानः।, निक कना। अध्यक्त कवित्र। मक्षामस्म मर्भ কবি, ককে লয়ে হেমঝারি, উঠিলেন অপ্রসারী হয়ে। তবে ব্ৰহ্মবাসীগণ, সঙ্গেচলে অগণন, জটীলার সভিত্ব দেখিতে ৷ वान बृक्ता युवा करा, ज्यो शूक्त हत्न खुता, ब्लाम गत्व हतन হর্ষিতে ॥ त्रोधिकात महत्री, तृष्मा हिता कानि कति, वाख्य गर्ञ ज्ञाक्कन। किक्स नादी गड, এक मुर्थ कर कड, नकरलटक के बिट्ड नेमन ॥ इनमरक खंडनाती, हिलटलन नार्वि गातिश्नारि इत जादात शनम्।। गटव माळ त्रकावटन, तिहत्नम शक्षकत्तर भून छात कहि विवदग्। श्रोठछना वस्नीधत, हि-किंदनक देवमानद्र, क्रकमीला यटमात्रा द्वाहिनी। उन कृटक व्यक्तिया , अहे (रक् नारि निया । अधिकक्ष ताथा स्वननी ॥ कृष कजरकत खरत शहर नाटक नच्यूथी इरह, नाहि यान कार्डि कृत्थ मन । बहै हिंदू शक्तकात, विकासन इन्यादित

ভার সবে করিলা গমন। ইংা ভিন্ন ভানা প্রাম, কতেক কহিব নাম, যত দুর শুনে সমাচার। তথাকার লোক যতঃ ধার সবে অবিরত, দেখিতে অন্চির্যা ব্যবহার।। এই রূপে কুছুহলে, যমুমার জলে স্থলে, রহে লোক অসংখা গণন। কেছ নৌকা করি ভর, কেহ উঠে রুক্ষোপর, ভব্দে গজে রথে কোমজন।। যমুনা উভয় কুলে, পদত্তকে ভূমিচলে, রহে কত না হয় বর্ণন। স্বর্গে থাকি দেবগণে, করিবারে দরশনে, ভাকাশেতে করে জাগমন।। আপন আপন জানে, রহিয়া ভাকিশে মানে, কৌতুক দেখেন সকলেন। ভিজ সবে সেই স্থলে, রহে সবে কুভ্চলে, পরে শুন কহি বিববন।। ভাথ জটীলার কেশসেতু পার হওন।

পনার। এই ৰূপ সর্বজন ষমূনার কুলে। কৌতৃক দেখিতে সহব রহে কুভুহলে।। হেনকালে জটীলা আইল সেইস্থানে। मने कवि करेश्थनी नवा विनामादन ॥ मञीद्वत वटल विकृतन ভুচ্ছ করি। কেশ দেতু দেখিয়া কি আমি মরি ডরি।। এই কেশসেতু পার কোন বড় ভার। ভিনবার পার কেন হব শভ বার।। এই দেখ অনামদে পরিংরে যাই। অসতী কুলটার মূথেতে দিয় ছাই। হেনমতে বহুদর্পকরিরা জটীলা। হেমঝারি কক্ষে করিসভুরেচলিলা। অংক্ষারে মন্ত হয়ে বেগেতে চলিল কেশ দেভু উপরেতে পদ ভুলি দিল।। যেই মাত্র পদা র্পণ করে দেইস্থলে। কেশ সেতৃ ছিড়িয়া ফ্টীলা পড়ে জলে জলেতেপজিয়াধনীভাগিয়া চলিল।তাংগদেখি সর্বজন হাগিতে লাগিল।। বিপক্ষ গণেতে বলে ভাল বটে সভী। সেতু পার হয়ে জল আনিছে মল্পুতি।। এইবাপে বিশক্তে টীটকারি रमया कविला अखिता अटन कामिया दिखात II दिनेका कादिता হিগাণে যত দেখিতে আইল। দেখিয়া ছদিশা ভারা নৌকাতে ं कुलिन ।। क्रीकात्र कानिया उथने कुटल एक डेठाये। क्रीना मा रहारत पूर्व भानम न कारिया वादश्वाद छेलशान करत नर्स-অনা তাহা দেখি কুটীবার অরুণ নরণ। মারেরে নিশ্বিয়া ্কুছে মুগভীর বাণী। থাকিবে কিঞ্চিত পাপ মনে অতুমানি (मांव আছে बान योग बागनात मदन। छदन लाक शता-

ত্রথ কুটীলার সেতু পার হওন।

লঘু ত্রিপদী। কুটালা স্থানরী, উঠি হ্রা করি, হেমঝারি কক্ষে লয়। গহাসা বানে, বিদ্ধান নয়নে, ইতন্তত নিরীক্ষ দেখি সে চাহনি, পূর্ব অমান, পড়য়ে মোহন কাঁকো। কি জানি কি ঘটে, কলস্ক বা মটে, কলক্ষ বিহীন চাঁলে।। মনে এই ঘোর, মুথে মহাজোর, ছলে কভমত ভাবে। স্বীগণে চায়ে, নয়ন ক্রায়ে, সতীত্ব জানায় ভাবে।। এরপ ভলিতে হেলিতে চুলিতে, সেতু কাছে উন্তরিয়ে। তেলু লক্ষ করি, কহিছে সুন্দরী, নারীগণে বিনিন্দিরে।। কেল্বেলু শুন, হইয়া নিপুণ, বজ্ঞাম হও ভূমি। তব পায়ে গিয়া, পরীক্ষা করিয়া, জল লয়ে আসি আমি। শুন তোরে বলি, নহি চন্দাবলী, নহি রাষা কলজিনী। নহি হুদ্দা ছুতী, নহি চন্দাবভী, নহি চিত্রা বিনেন্দনী। আর হুদ্দাবলে, আহেছ স্থাপনে, বোল হাজার অইজন। কলজিনি ক্লা, তাহে নাহি গণ্যা, তোরে বলি নিবরণ।। আমি হই ধন্যা, গাহে মাহি গণ্যা, কৌলা সুন্দরী নাম। মোর পূল্যকলে, বাহিবে, ধ্যাপালে, বজ্ঞান আবিরাম

अट्रक बिना। इट्लट्ड जिल्हिन, गट्डक तम्नीनटन । मनुद किनाद्य, भागार्थन करत, अटाख गाँकिंड महम। सममहत्व कविन वार्गन, दक्त राष्ट्र डिशदरङ । वार्मन विकित्त, कृतिना शक्ति,तार्थ (नाक नकरलटे । वित्रकाल्यति,कृपीला सून्तरी, बादित यं बदल हिल। त्यदित छोत्रा बान, मद्द दलादन मान,याः द्य मदन क्योंक्ल ।। दांश्रीय मिलनी, यटलक तकिनी, दनक कल क्रकाति । द्व मठी छान, जान जान जान, मठी व जान का-नाइनि।। कर छेनु (मंत्र, करूर। रामग्र, थन थन बन बन करि। देकर मध्य शूरत, त्कर खेरेळश्वत, यन त्मत्र मिक्कार्तत । अकार नकत्नामश कानाइत्न,निम्मा करत कृष्टीनाद्य । कृष्टीनाद्यात खानिया (बढ़ाय, यम्ना शडीत नीत्व। शिक्षा उत्राक्त, मानत कां छट्ट, काञ्चित देशन काछ । छात्रिल वत्रन, देशन विवत्रन, ना र्दिक जदमत धुडि।। जनः (थरत्र ठात, ११६ देश छात, ना भारत निटंड माँडात। स्मात थान यात्र, कि करत नष्डात्र, करत धनी द्दाराकात्र।। जादि जादि कत्व, छादक छेरेक्डरतः प्रवाञ्च ভূলিয়া সৰে। বলে মরি মরি, লয়ে আসি তরী,উদ্ধার করহ GCद । (यह प्राचान, इंड खांखशान, श्रामनान (पह Cuica ! देन कथा चूनिया, नथीता शांगत्रा,त्रान नाहि त्यांन अरत्।। अ পাপ কারিণী, কুল কলক্ষিণী, এখন গাঁচিতে সাধ। ঢাকি নি क বাদ, করিয়া বিখাদ, লোকে দেও অপবাদ। বিধি ভতুকুল আজি নে আকুল, প্রকাশ করিয়াছিল। কোন মুখে আর ও मुश्च (डामात, लाटकरत रमयारवनन। धिक धिक विक, किकव व्यक्ति, इतानि शामिनी बादना। हि हि नाम नाहे त्लाड़ा मृत्ये हारे, (कामादमद्रन क्रांत ।। अवत्न काराद्रक्र करादार र मित्न यक मेथी भन्। तम कथा दक मृत्म, छाटक श्रांग भटन, अधिएक क्षांन कालान ।। एमधि छोत्र मणा, करनक महना, छति লইয়ে যাইল। ধরি ভার কর, ভূলি নৌকাপর, বসন পরিতে पित ।। एटवर कृतिमा, खार्टाट्ड वाहिना, बाह्ना कृतिना शार्म। छोड़ा त्मीय भून, शाम यस्त्रन, कट्ट कंड क्रेन्स्य कृषिता उर्थन, मा ट्लाटन वर्षन,वट्ड ट्रिके माथा कृति। व्या-त्मर्छ नका, वार्ड मितानका मा मिलिल गडी नाही।। किर्देश

উপায়, ভারিয়া না পায়, প্রমাদ গনিয়া মনে। আপিন ভবনে বৈদ্যের সদলে, উপ্তরিল ভতক্ষণে। যতেক ভারতা, বৈদ্য ভারতার, ক্রাইয়া ব্রজরায় লোকেতে মোভিয়া, হা ক্লা বালয়া, ভুমেতে নক্ষ লোটায়।। কহে ভিজনর, প্রহে বৈদ্যাবর তব পদে পরিহার। যে হয় উপায়,করহ ভুরায়, ক্লা শোকে বাঁচা ভার।।

ख्य यामामारक कल जानिए देवरमात नित्यथ। श्रांत । मेडी यम ना मिलिल गटव निवानम । क्रकटमारक मुक्त हर इ का निक्र हम न न ।। ज्या व यर माना दानी वालिन **फे**ठिया । कञ्टि लातिन किह देवत्माद्य होस्या । भून १ देवना वव कवि निरंवसन। अल चार्नियाद चामि कविव शमन।। পঞ্চবর্ষ কালে মোরে পিতা করে দান। ভদব্ধি আছি জামি পতি সরিধান।। সেই কালাবধি মোর হইতেছে মনে কিছুই না জানি আমি পতির বিহনে।। জভএব আমারে আরতি কর ভূমি। পরিকা করিয়া কল আমি দিব আদি।। এত यनि नम्बतानी वानिन बहन। देवरमात मरमरू देशन छावना एथन।। यत्नांना यनांनि कन आनिवादत यान। ना भारित ক্রিছে মারের অপমান।। পরিকা ক্রিয়া জল মাতা যদি তাবে। রাধার কলক্ষ ভবে ঘুচিবে কেমনে।। এভেক বিচার देवा कृति मदन मन ! यानातित मिछेवादका कदतन वातन বৈদাবলে মাতা তুমি পারিবে আনিতে। কিন্তু উপকার কিছু मो इत्व जाहोरक ।। मारवरक छविष मितल मोहि धरव कम । वर्धा किन व्यापनि कदिएव शिव्याम । वा म कन देवमाक्षि श्रक्त मात्रात्र । अवार्थ जारात्र वाका ना रत्र थेखन ।। उनर्वा महादन अवस्थि निर्म मात्र । नी क्य द्वारशत मास्ति क्यांनरत खेशात्र । यहमानी वृद्धन वाल खंद कि इहेद्द। मिछा **छ** कि मीलमान প्रार्ट्ड महिट्य ॥ ट्रेंच्य कन, जननि जो जित कत्र मिछ । अनेना कतिशे तिथ खटक दक्ती मेंछ ।। शक्त কুপার স্থার জ্যোভিষের গুলে। চর্গাচরে যতেক আনিতে পারি शाला। वानवीन शनिएक विभावत । विष करह किया जाट्ड छव जार्गाहर्ते।।

মুক্তালভাবলী।

अथ देवटमात गंगना ।

শ্রার ি যাড় প্রে বৈশ্বর ক্তেন রচন ৷ পঞ্স বর্ষের भिष्ण भान बक करेगा जात रहें थे ए मित खंडन करिया। খড়ি ধরি সেইশিশু রহিবে বনিয়া।। মন্ত্রজন করি আমি ঈ-শ্বরে ভাবিতে। উঠিবে সতীর নাম শিশুর থভিতে।। এতেক শুনিরা তবে যত গোপরন। পঞ্ম বাধীর শিশু আনে এক खन।। छोत्र ट्रक्ट थाँख छट्य भिन्ना छ छ छ। देवमानाशी नातः। अव खर्भ मादायम्।। अयारम भिक्त माट थिए धन वृत्न। প্রথমেতের জক্ষর খড়িতে লিখিলে। আগ্রাকর উঠিব বলিল বৈদ্যবর। ভাহা ধরি নাম সতে কচে পরস্পর।। কেহ ৰলে রমাবতী কেহ বলে রতি। বঞ্চবিলাদিনী বসমঞ্জরী যুবতি दृश्यमा उन्तर्भाति वर्ष्ट्र माम लग्न । देवमावत्त देशत् मरधारक কৈই নয়।। পুনর্কারজপেতে বসিল মহাকায় । শিশুর খড়িতে ষ্ণানি অংকারযোগায়। রকারে আকার মিলে রা শব্দ হইল रेवमावरण ज्यामाक्षद अवाद मिलिल ॥ छरव मरव हो ज्यारमार्छ या मार्ग कारन । द्राक्षा विदन सव नामवद्रण देवना छाटन ॥यनि বল রাধা,নাম কেন দিল বাদ। ক্রম্ম কলফিণী বলি আছে তার वाम ॥ धरे दिलु द्राधा नाम कर नाहि कहा । रेवनाव लिस्हेशव मर्थाएं (कर नशा अक विन मञ्ज कर्म हरत अक मना था नाम चानिशा देशन थे फ़िट्ड योक्तन ।। ताथा मक देशन यनि अकटक भिन्न । रेवमा दल अहेवाव देशनिक्षणने ।। बुलावटन ं रकान नाती ताथा नाम धरत । छाना तर्मा ए तुमार्यन खाटना करत्।। इल्लिमाना श्रमा प्रमा विश्व विस्माहिनी। भीर्यकण सक्षारमण प्रच्या निर्धिश्वो। थक्कन इक्षन वार्षि वक्षीयुक छोत्र। करें।क इश्रदक दर्श विश्वास्त्र कात्र।। बहेक्रिश राहे मात्री (मह माध्योग हो। (तमारम कु भात रेश्टे का शांत मक्कि त्व तमनी क्रमा कति जानि तम्म वार्ति। एटव नेपाय ए जा म वाहाइट शासि।। अब समि देवमानत बिल्ल वहन। मूर्नि हम-किए देशत नवाकांत्र मन ।। माधु लादक मकरत वनद्य जान बी भी। कृणिन लाटकदळ ग्रंव करते कार्राकारी विक्रक

शनेना ।। कणिना कृणिनी हिन (एके मोश्री कति। वांधानाम भूनि धनी छेठिन निश्वि।। अश्वदात मरधा छात खरिक खनिल द्याध खद्र देवमावदत कहिएल नाशिन ।। कामा दान देवमावत कान उर छन। अवस्त्र अख्खरन इरस्ट् निश्रन ॥ ना कानि বাচিলে কত বাড়িবেক আর । শিথিয়াছ যার কাছে ভারে नेनक द्रा शामि भाग गाटक मांत्र ध कथा छनिया। द्राधिका হুট্ল সভী খড়িতে গণিয়া।। ব্ৰহ্মাঝে নারী মধ্যে কল-किनी (यहे। ट्यामात अन्तन आक्रि मही देश (महे।। दर्न मा देवना यान निरम वह इत । क्रेबर शतिया देवना करत्न উত্তর।। কেন গোকুটিলা ভূমি ছলে কটু গাও। মিছ। বাদ করি কেন কোন্দল বাড়াও।। আমিতো অবোধ বৈণ্য গুণে হীন আত। আপনিতো গোকুলেতে আছ বম দতী।। कानिशाद्य मक्टलंट एंडामात त्य काय । वाका मृत्य कथा कह नाहि वान लोख।। अञ यांत्र देवमावत कृष्टिनादत वदन। मुनिया टारांत वानि छून। क्लार्थ जला। धुना नक त्यास रयन मनता मालिन। शक नाष्ट्रा निवा रेवरमा शानि चात्रिज পাত্রে অসংখ্য গালি মুখে যত অংসে। শুনিরা সভাস্থ লোক সকলেতে হালে।। তবেত ঘশোদারাণী বিষম দেখিয়া कृष्टिलांत शास्त्र भाव भावान छेठिया।। तानी वटन कृष्टिला গো ক্ষা কর মোরে। আমার মাথার কিরা সদত তোমারে विश्वादिक दम्म करा ना एत छ किए। भीनम्बि वादक सांद्रक কর তার হিত । রাধিকা ২ইলে সতী ক্ষতি কিবা তায়। তোমার ঘরের ব্ধু অন্যতো সে নয়।। দিল বলৈ কুটিলারে नित्रख करिया। त्राधिका निकटि वानी हिलल शहरा।।

ত্বথ এমতীকে যশোমতীর বিনয়।

দীর্ঘ-ত্রিপদী। রাধিকা যশাপি সতী, হর্ষিত যশোসভী ক্রেতগতি রাধা কাছে গিরা। ইটা কর করে দিয়ে, কংহন কাতরা হয়ে, উঠ ওগো রুষভাসু বিয়া। তুমি ধনা পুণাবতী ব্রজমাবে আছ সতী, বৈশারাল গণিয়া বিশ্ল। স্বর্গেতা শুনিরাছ, তবে কেন বসিরাছ, কুপাকরি উঠিতে ইইল।। ক্রিয়া সেতু প্রীকা, দেখাও সভীত্ব দীকা, শিকা করক

बद्धाव वर्गील । बाह्य कुद्धाव थान, क विश्वत कृत जान, होट्या मार्टना बिझन्डि था। किया कर्नेन नमहानि, वार्षि काटत कन तानि भूनि ताथा लोगाक महीत। श्रास्त रहेन छत्, मूर्य राका ना क्वात्र हुई हर्टक घन वरह निवा मरनर त्राथा गादि, वटन कि कदिएल इति, खेकि खाद घडे हैटल माश्चा एवं त्यादक व्यान यात्र, मादतत छलदत मात्र, हेट्य काचि कि कात्र छेशाया। এक कलक्षिमी बदल, जारह यान निया करन, ताडू शात रहेटल मा शांति।। अधिक कलक रहेटन, लांदक मूर्य मा (मर्थिदा) दकमदम वाहिव छटव इति। जूमि প্রস্থু বিশ্বকর্তাগবিশ্বের বিপদে হর্তা,বিশ্বত্রাতা বিধাতা ঈশ্বর তৰ পদ ঘেই সারে, ভাইার বিপদ হরে, বিপত্য ভঞ্জন নাম ধর। হারুক করুণানিকা অগতের প্রাণবকা রাধনা জাগ্য हेन्सु भागम। एव हर्न विहत्न, नाहि क्षांन कमा करन, उदव क्ति वाष्ट्र पूर्नाम ॥ बहेक्स वाधा मुखी, खाविता आकृत ছাতি,তুই চক্ষে বারি ধারা বয়।। হেনকালে কমলিনি, শুনি লেন দৈব্যানিঃ ভার কেহ সুনিতে না পায়। কি কার্ণে ভাষ রাধা, তুমি कुंक अत्र जामा, जाना भाकि मधी मनाउनी কেন: তব এত ভুল, ভুমি স্কলের মুল, সভী সাধ্বী পতি পরার্মি ।। উঠ উঠ ওলো প্রারি, দেভুর পরিকা কবি, যমুনা श्रेट्ट आम वाति। तम कटन अवधि कटन, शास्त्राहिया कुक-হলে, চৈতন করাও তব হরি।। এরপ আকাশ বাণি, আপন कर्षट छनि, जानमिट किञ्चि शहर। एथानि नजर मन ভাবে রাধা অনুক্রণ, কি ঘটিতে কি জানি কি হয়।। ভাবিয়া किष्ठिश थनि, श्रुटम जावि इक्लानि, यानामाद्रकन प्रकृष्टतः। ভোমার হিভের হেডু, পরিক্ষা লইব নেতু, শেষে মম ভাগ্যে याश करत । भून त्या त्यामारत कहे, शतीकारक क्षी शह बाह्य यनि एकामात नन्मन्। उदय द्या आंतिय किद्रत, मकुवा यम्मा किरत, त्मर्कित कामित कित्म।। श्रीप्रशासनाम क्यू, क्रम तार्थ काव क्रम, क्रिविटक क्रिएक एक्टरम । **छा**श कि चूटनइ भारति, यथम अवशि इति, वाभ धतारब्रह निख छटन ।।

श्रीम बीत दनकु शतिक श्रीकात अ ग्रामाय ग्रामाय ग्रामाय পরার। और्याट करतम यहि পরিকা छोकात । यहनामाद कांन क्लिंब नाहि भावाभाव।। करवरक शविशो वानी करवन বিনয়। উঠমারো শীব্র করি বিলয় না সয়।। ভবেত রাধিকা সতী রাণী আশ্বাসিয়া। আপনার সথী সবে কহেন ভাকিয়া खनिया गिन्नोतेन वानिष्ठ मनावृत्सं कट्ट विनय्बट्ड नाहि প্রয়োজন। ব্রাই বলে সজে চল যত সংচরি। পরিকা করিব আমি কুষ্ণ নাম সারি।। তাহা যদি ভগবান করেন রুকণ। **२८व ८म आ**र्यादत श्रुमः शांदि नत्रभाम ॥ न**रई** उसूना अस्त তেয়াগিব প্রাণ। বিদায় হই ছ আজি ভোমা সবা স্থান।। বুন্দ। কহে ক্ম'লনী ভাব ভকারণ। যাত্রাকালে স্মার তুমি জীমধন্তুদন।। কৃষ্ণ নাম বলে ভবণিশু হবে পার। বরুনা ष्ट्रेट भाव कि ভावना छोत्। वृत्माव वहरन वाथा इविक হইয়া। উঠিলেন জ্বতগতি জীংরি স্মারিয়া।। শুরুজন চরবে করেন প্রণিপাত। হেনকালে কৃটিলা উঠীগা ধরে হাত।। কোখা যাহ কমলিনী নাম হাসাইতে। আমি হেন স্তা ঠেকিয়াছি পরিকাতে।। यদিবল কবিরাজ করেছে গণন। मकिन जीनिक छछ रेबरमात बहन । रेबमा नरह धुहै (बहै। কলক্ষের ডালি। আসিয়াছে গোপকুলে দিভে চুন কালি॥ কে কোথায় প্রভায়করে ভণ্ডের বচনে। ভাপনার হাদি কথা আপুপনি দে আনে। ভূমি শাংম কল্ ক্ষণী জানত মানসে। পরীকা করিতেখাহ কেমনগাংগে পরীক্ষাতে ঠেকিলে ইইবে বিপরীত। ভুবন ভরিয়া হবে কলন্ধ বিদিত।। একে ভোর माद्य लादक्युयं ना (मथाहै। देवन २ श्रीका कृतिया कायनाई थे याम कृष्टिमा कहिला वांत वात । जीतांशांत श्राम बाका मारि गरंब चार । कृषिलांत क्रुक्ट्न शाहेबा (यस । विगटनम कर्माननी रुत्त युन्नमन ।। नश्रक नर्त्वाक मुथि कार्रिनम धीत जिलमान लिट्स खाटन इटक वटई नीत्राकाहा जिल हुन्स पृष्ठि অস্বরে রুবিয়া। কুটিলার প্রতি কোপে কহিছে ভং নিয়া।। अमर्शा कृषिना जूमि यक वृक्तिमंति। दिवस्ता भाननारत क रेहरक मधी। द्वारा कन किनी क्रिय गासा পरिज्ञका। अव-

(भारब धक भारव करिल विश्वाका ।। (गामन मधी ब्रुलमा इडेन বিদিত। তথাপি কহিতে কথা নাহও লক্ষিত।। আগ্ৰ ছিত্র ঢাকি শাখ পর ছিত্র খেও। পরাহণ্স খেতু এত পবি, छोल ल छ।। वाधाद याहेट यांगा कर्वाक कावूरन । य जन रियम गड़ी कर्राम निक मत्न ।। अवश्व श्रीम नेतान मड़ी माद्वि कात । न' : तन भवीका किन कविद्व श्रीकात ॥ धड श्रम बुन्ना वटन करीनांद्र एएएस । छेक्रिन करीना धनी चारनक कौनदर्ग। क्लार्थ ब्रम्भागर क्ला कविदर नामिन। लोश प्रिथ नमतानी अभागगानिता। क्रिका निकटि निया कट्नमावानी माखना कत्रम छेठि ट्यामात नन्मिनी ।। याम वाय भारत ভবে ইথে কিবা ক্ষতি। ভোষার ঘরের বধু ভোষার সুখ্য।তি यानामात्र अञ्चरतारम किल छित्रिया। वमाहेल कृष्टिनादत ছাতেতে ধরিয়া। জমুমতি দেও তুমি ডাকিয়া রাধায় ब्रन्माद्व यरणामावानी जान नि वनाय ॥ जल जानि वै। हाइटिड ্ভাপন ভনয়। এই ৰূপে উভয়ের ছন্দ নিবারয়।। জটীন ্রাধার প্রতি করে ভর্মতি। পরীকা করিয়া জল আনব্যা **ন্ত্রিমতি মা একথা ভানিয়া প্যারী হর্ষিতা চইয়া। উঠিলেন** পুনরার এহরি সারিয়া।। আবেতে প্রণান করি জটিলার পার। তার পরে প্রণমিল রাণী যশে দায়।। তদন্তরে প্রণাম क्रिया खा खाक्क बन । गमर्याभा करन कन विनय वहनं। कृष्टि-লার হাতে ধরি করেন মিনতি। স্বাকার কাছেতে যাচেন অনুমতি।। সকলে সম্ভোষ্ চিত্তে করে আশীর্কাদ। কেবল कृष्णिना हिटल भन्छ वियान । जनदात मदशा खात ब्रद्ध श्लाश्ल (मोथिक दहरन एथा) शहरत्र मक्रन ।। धक कारन नकरनार**छ** करत क्यध्यनि । उटवड्ड करलट्ड हरन ताथा कर्माननी ।। उन्न লেখি বৈদ্য পুনঃ যমুনায় গিয়া। পুনকার কেশ সেভু নির্মাণ করিয়া। আইলেন ক্রত যথা যুক্ত মুরারি। জল তেতু करन हरन डांच्य क्याति॥

विमहीत यसनाम भगन।

প্রার। একেই সকলের অসমতি চাইয়ে। চলিলেন হরি প্রিয়া হরিকে স্বরিয়ে।। গজেন্ত গমনেগতি ককে হেনকীরি

ह्यू मिक हक कति वर्त मश्हित ॥ इहेन अश्वि मिछ कड ভাব হয়। চল্ডের মণ্ডল যেন ভূমেতে উদয়। জীমতীর মুখse निका भग्धत। मेथीनन सूथ एएट् চट्टा तम्ब्रा একতে जिल्ला स्वन देश हस्त्र मार्थ। (इतिहा नकल लाक व्यनि भिक इशा अभट अभागी गडी हत्तम उथन। श्वमत्या इत्र কত মুভ দরশন।। দক্ষিণে গো মৃগ ভিজ অতি খুভকারী। दामजादन पूर्वकुछ करक कूल बाही।। नना तथ मरहा अमुशी হেঁবেন সত্তর। খঞ্জন বিহার করে কমল উপর।। কভ মত শুভপ্রে দেখে কত জার। একে২ নাম কত লইব তাহার।। শুভ দৃষ্টে অতিশয় হর্ষিত মন। মনেং স্মরে রাধে 🕮 হরি চরণ ॥ কেনমতে স্থীসহ যান ধীরে ধীরে।কভক্ষণে উত্তরিল যমুনার তীরে । পুর্বাব্ধি যতলোক আছিল তথায়। হেরিয়া, রাধার ৰূপ সবে মোহ যায়।। এক দৃষ্টে সকলেতে নিরীক্ষণ कृति। अञ्चर्मान करत् मही १८व এ चुनम्ती । अहे सन सहै छ পারিবে সেতুপার। কেহ বলে যে হর দেখিব এইবার॥ এইরপে পরস্পর করে কান কান। তেখা স্থী সহ কথা कन कर्मातनो। हम्म द्व हःहिशा शांति वटनम् मञ्जा । छन्द প্রিয় সখি আমার উত্তর।। পরীক্ষ' করিব আমি কি জানি क रिशः यनि भवीकात छोक महिव निक्ता। मृङ्गकात्न দেখা না হল কৃষ্ণ সনে। অভশব স্থী আমি ভালিয়াছি মনে सामकात श्रुक्ति तम हे क्रिक हत्र। एटन व मि श्रीकात क्रितिय श्रम ।। इन्ना वटल अद्भा त'रथ जीव क्रकादम । क्रि कुक खक ताथा जगाउ कात्र । धार कुक तारे ग्राथा हैएथ माहि कान। केवर छेडिछ एटर एवं इब विश्वेन।। शबीकाब Consider के कि के दिल आदे । क्यांत मध्यांत सार्व हरू নাম সাতে।। এতবলি ততকৰে নামি মহনায়। সান করি विगिदल्स हित्रभूकाश ॥ मानदमद् यथा विधिकविश शूक्ता क्रम मान कर्ति भटत कर्तन खब्म ।। बिमरी कर्तन छि बिन कूष हत्र । बिह्ना अनाम वटन भून मक्कात ।।

র কাশভাবনী।

अब बीगडी बिक्टक र इंडि करतन।

भीर्घ जिल्लो। कार्ट्साटत किल्ती क्य, क्था क्रक क्ला भवा क्रिक ट्रेड्डिन घटाडन। क्यु च ट्रामाव मर्भ, जुमि कान चर कर्या, मलगरहे जूनि मोतायन ॥ छद्य (कन दश्मकाव জানিয়া লা পাই ভাব, তব ভাব ভাবনা জাহীত। ভূমি হে रैं हर नाबश, हिमानक कि श्वाली, हिमाज व हिमाज निक्छ। পরম প্রবিত বিভু, গ্রুতির পার প্রভু, পরমাতা প্রভু নিরা-রার। লালা তেতু অবতনী, প্রকৃতি আঞার করি, হইরাছ আপৰি সাকার ৷ নিভ্যানন তুমি শ্যাম, নিভা দেহ নিভ্য मांग, निष्ठा एवं धाम बुन्मावन। निष्ठाताथा कति द्याद्व, नि-छाबल ध्यमण्डारत, निना छात्व करतह वस्तम ॥ निनावाका नेतर्ति, बदलक निक्तत्र कति, त्राधा काष्ट्रा ना २७ कथन । निजा द्ध इंन्होरन, नारि हा प्रवक्त कन, उद्द किन शहेटल बनन ॥ द्रश्रमात्र विद्रष्ट्रक वादन, विमक्ष इटल्ट्ड खादन, विद्रिक वृत्तिरक किছू नाति। विश्वामिश देवत वांगी। विषय शत्रीका मानि, कां मित्राहि नहेवादे वर्षत ॥ विश्व मत्न कति छह, कि घछिएछ किवा रहे. करनवर वाद्य जादमाता कुणिना भन्न पारी, काना कलिकत्वत कांती, मना द्वार आमात बनाव । देव त्यात्र कनक नश, करमा करमा (यन तश, काना शतिदान निष्ण लाटक कालात हत्वत्व मन तुरह रान खाँखिकन, कानक मा तरह धाना ভাবে।। छन छट कालाँ है। भिरत भति छन वानः छाट् किছू जिल्ल नाहि मदन । शतीकात्र टिक यमि, त्न दक करत अभवामी, अभवाधि इव बिह्नदर्गा। धेर (इक् निद्वमन, छव शाम महिशासन, यान जीनवान मात्रि बदल । उर क्रिश कालामा कांश कट्म खर्स विनि, प्रशा लिह चतुर्भात करने । जाका कत वार्थि ठाद्र, गाई वामि त्रकु शाद्र, अहरत कदिश अनाम । পরিকার উভরিলা, यमनात्र जन लिया, ভোমাকে চেতন করি भागम में काल काला कत हति, विलय हरेटल मति, तिर्छ्यू-एएटल व्यांत वास्त्रिया । **अहेक्टल वास्त्राण, कृद्य**े कटवर्न ह ि, इस्टिम छन्। उथात्र ॥ केंद्रना अनात सह, द्राक्षाकृष

जिल्ला मत्, अक उन्न अक तम की वान । की ना (इन्डू अवडात, नीना करत अनिवात, जार गुरथ तूनन हतन ।।

অথ এমতীর শ্রীক্ষের ছায়ারপ দর্শন। লঘু-ত্রিপদি। এমতির স্থৃতি, জানিয়া প্রাপতি, উঠিয়া शंशर् ऋत्व। कर्नाक्ट उम्रः क्ट्र मा व्यम्, होमा नात्र कामि करने ।। यथात्र किरमातिश्रयानाममे कति, खरवर्डमनम भम । তাহার উপার, রহিলা জীহার, ছায়া হৈল দর্শন।। দেখিরা সে ছারা। নন্দর্ভ জারা, প্রেমভাবে সমাকুল। ব্যা-দের রচন, ছায়ার বর্ণন, কায়া ছায়া সমতুল। কিবা মনো-इत. भागमल सुम्बत, नवीन नीतन निका। नित्न नितार भन, চরণ यूत्रल, नोदद्रदेख अधिक (भाष्ट्रा ।। विष्टि विका धका, निदन শোভে চুড়া, মাথায় সমুর পাথা। কিবা দে উজ্জলা, কিবা বানে হেলা, রাধা নাম তাহে লেখা ॥ জীযুথ মণ্ডল, চন্দ্র নির मल, मंख्यांट्य सूर्याक्ट्य । ताथांत नश्चान हटकांत न्यान, অনিবার গান করে।। ভালে শোভে ভাল ভিলক উচ্ছন। গভমতি কাণে দোলে। কিবা সে কিরণ, ছড়িত যেমন, থেলিছে মেঘের কোলে।। গলে পুষ্পহার,কি শোভা ভাহার কৌস্তভ সহ বিরাজে। ব্লয় কেউর, রভন মুপুর, কর পদে कान नाटक ।। किता तन वतन, व्रमनी तमन, कांत्रक त्याहम वाँची। त्य क्षण द्रविष, नकल का किशी, खेलक्रमा देवल भागी ভাবের ভঙ্গিতে, नश्चन देशिटट, द्वासादत वर्ग दिश ह दम । छत्रक खब्राल, भवन हिल्ला दल, इंटल क्लाटन किया छोटन । इन्हेंब्रा किटमाती, ভारबट्ड भागति धति धति घटन कटते। धतिशहत চায়, তন্ত্রেতে ধায়, ভ্রম লছবি ভরে। এইবলে ভাসে, कटन काटक व्याप्त, कटन कटन स्टूड प्रक्रिं। कड बादन दर्शन यश्चना मुनिद्य, वाका महत्राधार्थाक ।। एटव कर कर्त्व, वाधार्थिदव कांटन, चांटवन व क्या श्रीवन । चीत्रा बदल रहिंग कानि मुना कर्तत, आमारक स्वया त्यं क्रिया। मावि क्यारिकी, इरहे त्या छ शांकी क्षेत्रांत्र कर्त्व कर्त्व। क्षेत्र गांक्यू; चारिकारत क्षेत्र, पटनावाका निक्ति हरवं। निक्तित्व वृत्तिता, का स्तारम प्रतिया, পুনঃ করি প্রনিপাছ। চলিলা ছারতে, পরীকা কারতে, রকার

ধবিষা হাত্য ভিজ বর ভালে, মনের উলাদে জীমভীর পদ রক্ষো বিশয় করোনা, ওলোচ না, রুফ্শোকে প্রজমলে।। অথ জীমভীর সেতু পার হওব।

श्रात । मधी करत धरि भगात जिल्ला (महेन्द्रारम । हित्री আশ্রিকা নেতু চমৎকার মানে।। কেশনেত বিদ্যমানে কেশ্র ভাবिनी। कद्रद्यांच कवि किছू करून को इनी ॥ भून । अर्न । দেতু তুমি ধর্মাময়। তব পরিকাতে পাপ পুণা,প্রকাশয়।। তোষার মহিমা আমি কিকহিতে পারি।বহলে অবলা জাতি ভাতে গোপনাথী।। এই নিবেদন করি ভোমার বিদিত। यमि भात भाभ थाटक मिटव न्यु हिन्छ।। आत अमि शिक भटम থাকে রভি মতি। কোন পাপ নাহি থাকে যদি হই সভী।। তবে ভূমি কেশবেত বজ্ঞ সম হও। আপন মহাত্ম তব অংপনি কেখাও। এতবলি কমলিনি সেড্ প্রথমিয়া। স্বর্ণের ছেম ঝারি কক্তে লইয়া।। পজেন্স মিশ্দিত অতি ধিবে ধীরে গতি। দেভুর উপরে পদ ভুলে দিলা সতী।। প্রথমেতে বাম পদ থেমন ভুলিল। এক দুফে লোক সব চাহিয়া রহিল।। সভী দরশনে দেও বজ্ঞাম কায়। ক্রমেতে দক্ষিণ পদ অংরে। পিলা তায় ।। কেশসেতু বহিষা চলিল চন্দ্রাননী । চনৎকার মানি সবে করে জয়ধানি।। বেরিয়া অভুত কর্মা করে (कालाइनाज्य जय मत्म स्य महा छेखत्यांना जानत्म इहेया (कांत्र ताथा क्रांता ! (कश् मांटि किश् शाटन किश् वा वाकाश । ভবলমাদল থোলকবৃতাল কাঁশী। শিক্সা ভেরিভুরি শথাঘণ্ট। বীৰা বাশী। অধিক অধিক বাদ্য কে করে গণন। যেরপে कानम ज्या क्राधा दर्गमा। यदर्गद्क इन्तू क वामा करव दमन গ্রণা শ্রীমতীর শিরে করে পুষ্পাবরিষণ। আকাশ হইতে পড়ে অনিবার কুর। ফুলেন্ড হইলপূর্ণ মহুনার কুল।। পারি काछ माला भएए द्वाधिकात जटल। विविध सूत्रिक कून भएए वाह्य त्न । बिंछ मानले मादन देशन भोली छन । हत्रन कम्माल পर्फ कामन कमन । राष्ट्रश्राद अर्मकृतन द्रांपिका र्या खिन । कम्म कानंदन रचन कमला छिठिना हक्षत हरदन्था दि চলে জানিষার। যারনা ইইলা পার একশত বারী। তিনবার

नीत हिन रेक्नामत वानी । भठतात रेक्न नात द्वांशक कुत्रानी कर्द रमक् दैन्दक दाया मार्गिया प्रतिष्ठ । महेता सहमा अन शु विद्या यात्रित्छ।। कटक कति त्यह सात्रि हानना समर्थी । हात्रि शितक दर्शिया विनान मनवेती ।। जानितमहत्त क्रिकेत नत्मम् छत्ता । (मधि धमारे भन्न कर्त नसीक्ता। प्रठासुद्ध कल कार्त महत्व बाह्यास स्वायनी महत्व किम मिलू लात यात्रा समहत्व ध मर्फ किছू नाहि छाद छान। नटीच शहीका मांत छे । नभीन।। यमि वन इहेमड (मी बाजमांड । किवा नहा किवा মিখ্যা বুঝিব কিমতে।। উভয়ত সভা সৰ মিখ্যা কিছু মন্ত্ৰ। करण्या करण्या वर्षाक्रक कावणावस्त्र । (व करण्या स्वमन बद्ध त्तरथ नावाप्तन । त्यारबट्ड कानिया माद्य दलदेश श्रवित्रे स অতএব ঝাৰ বাকা কভুমিথ্য নয়। একংশ শুনহ পুনঃ যে क्रश फेन्स् । तथा नजी बत्त नदंद करत नमकःद । इन्ह विद्ना व्यथानम नहीं नहि जाते। ताथा कनकियी नराविन्छ सा-ह'ता। नडी वटन व्यानिया श्राम करत डाता। तिहे देश्य বুচে গেল কল'ফ ী নাম। তার কি কলম্ব থাকে হালে যার मामि ।। वाशावणी वटल देशन शाक्रल धावना दिक वटन শুন সবে এই র চেত্রা 🎼

व्यथ श्रीकृत्कत (इंडन)

कानक श्रम् । निश्निक्ष १८६ जाता निक श्रात (श्रम् । निक निक बेशूवर्ग निकरके सहित्य। क्रमण्ड एहे करत हुकू कर्ग-निम्ना जारका वारक (पश्चिष्टन हिमिदक हारिम्रा। क्रीपूर्मा व्यगम क्रमण श्राप बार्ट गांत । निज् (गांविस्कृत कार्द हार् व्यक्तात ।

कथ बंद्यामात कार्यक्त विश्वत क्रितापाटकत

भक्षोत्। देशियां वित्रम वित नरमात उनत्र । नमा नमाता वी মুভাষতে প্রাণ পার।। তবে যশোমতি অতি ছবিতেউটি: ।। अधिदा कबर्श कोटन कुरकटत छाछित्रा। वीधी देश्ट यानामा लाहेन क्रुक्षन । वाष्ट्रित अधिक त्यन ताथाद्य उथन । कीत गत सबनोज मानादिश जामि। यज्ञत वाशात कटत दिस्स सम्मतानी ॥ थां थ' अवलिया किया दमस ताथाय । ताथा जादन अ आवात चिन कि मात्र।। क्रूटकत ध्रमाम नरह अह নরবীত। আহার করিতে আগে না হয় উচিত। রাধার অানিয়া মন আহরি তথন। পাতিলা অপুর্ব মায়। অপুর্ব कथमा। जून हुन हटक इति हातिमिटक हात्र। अनमीत काटन क्षांशा दार्थिकारेत शाम । वालरकत श्रञ्जाव क्रांचर्मा मत्रहात । चाहाक शहिश शद्क चालमान कति ॥ मारतत दकारलट दंशीय कटमात गन्धान । द्वापन कतिया क्रम गणानांक पाना।। डाझ दिश्व मन्मदानी जानिया चुदाय । मिक्न करकाउ ड्रॉन महिशा एनम । यांच कटक द्रांशा त्माटक मक्किटन किर्ति। यटमा शांत कारन किया बुलन माधुती ॥ एनछद्र मूनर रति करिना (यमम । दाश करत नवनीं करत मत्रमन । क्यारपण्टत शारा किया काष्ट्रिया बहेला। जालमात दम्हन एक है शास्त्र पिनारिक क्र कि कर कृष बट्डा नस्तानी। का जिल्ला करेटन किन ताबात न्देशी ।।।अथा देशक (छाद्र बाक्षि भारेग्नाहि (कारल । अफ क्न मीनमा। शिल कान श्रात । किन्नू राज किन्नू राज आधारत व्यक्तित । क्षित्र महिला कानि किन्द्र व्यक्ति ।। बाहित बहरन शति क्षेत्र शांतिता । सूट्य देश्टल विना किहू Tatles afral it m Plantis ate fent ateire i an

व्यथ देवना विनाश ।

भीर्व जिल्ली। जीशक्षि कुकूश्त्ल,थाकि यत्नामात्र काटन, নৰ্বনীত ক্রিয়াভোজন। তদন্তরে রাধান্যতীগ্রাণ্য নিয়া শো-भछी, मिस्कृहर कदिना शंभन् ।। छत्वछ यरनामा अनी, कारन कवि भीनमान, रेवना काट्य छेलमीछ इस । कदबन प्रिमंत्र यर , ति कथा काहर कंड, कर बांख मजन नवन ।। धर्यात्म जन्म धांब, देवन क्रिट्ड मत्साब, मान खवा जाविया नी शांन । क्रट्स थान दिन (यह, जाद्र कान खरा (मह, जिन्दरन किया (इन मान।। ভाविशा विश्विता धीव, छेशात्र ना शात्र श्वितः किटन ब्रंटर देवतमात् गयान । ভाशात जाकिशा धन, व्यादन तक काज-तन, खर्भ छर्भ नर्केड ध्यमान ॥ यड हिन परत्र छात्र, सारन नव ভाবে ভাব, অপ্রমিষ্ঠ দীমা দিভে নাই। রথ বান হয় हाछि, आतिया वि विध काछि, मक नक बादन इक्षवडी नारे बिहिन बनन कांत्र, कांनिया विविधाकात्र, खटल खटल दाविन मंडदन। नम्मद्याय धन जारन, नम्बानी जादन मदन, जामि किना किंद अहे करन ।। खबदाब धनवाम, हिट्द वक धन मान,मांदी क्षां कि देवा था भार पर सिन प्रविद्यान, कार्ट्स किना मिन शांस,किया कामि कवित्र अथन ॥ अक्या काशस्त्र कर सहरत क्रमदम् त्रव, देवना कृदव क्रमनी लागानी । बद्ध विन नव्यतानी क्टे कटक लटक शानि, श्रिकामाना आकृत लहां है।। करन कर करन वान, मरबट्ड केशात्र गानि, त्यटक करने थीना कादमा कर क्ष प्रव एउ हाता, प्रत्यत ज्ञानि नाना, किन गई वर्गन वाचना। माम वह करा पूर्व, यात्रक द्वारत कुन, मार न वार्रा NO FOR THE ACRES SCHOOL PERSONS

Me Mieta auis it crasco agne, wirifan gel se, व्यक्तिक क्टब क्यूबाका। छाट्य बानी देवमावाव, कुला कर्तत किছ था। इति देन त नकन कि हो।। दिनिया जानीय स्थ नाष्ट्रित देवलाव जात, मत्न बदन वांशानि कार्शान कार्शान TIN 00. NO I CHE WINDER, 40 0 14 SCREE BAIA बकारता सम्मामा माहे, ७व खटनेव जोगा नाहे, स्मन जादव कि जिला ज भार । यकि अमा देश कार्त, कट्या करमा वात वात, दिस शाहे अनेनी त्यांमाता। देवना अञ्चादव वित, देवनकीटन नेष कानि, कत्रद्यादेश करत निट्यमन । विनद्यदेश कमा करा, अन अम महाना, आभि निर्माट्न क्छाबन्। मश्टक लाग्नाहा कांकि, नाहि कानि क्वांठ नांठ, कि कदिव लामात्र शबन । তোমার সহিমা यह, अक्सूद्ध कव कर, यन देश तहता वपन क्रिमिला कुक धन, जामाद्र कि पित धन, दरन धन आह कि सामातां कदिता य छिनकात, लाहा कि करिय कात, भू बिट्छ नार्तित ভन शांत ॥ एटव दय कि क्रिक श्रा, छन छेलपू क नहें, तथा त्ये जानिएं जानि एति । जरिनह उल्ले कारने, श्रुभी के विशेष मर्ग्य रेनर्ड इत्य अनुमान कवि ।। देवशावरन महान्द्रिक्ष कत निव्नष्ठ, व्यक्ति एव शुट्डत्रम्यान । व्यक्तिताइ न्य धन, वस् भूना बाजन, बाज खवा नटर कल्लाकांन ॥ उटव दर द्याम दर्ज करे। सदनव बक्किल नडे, द्वार माळ दरश मूळ काद्य । कामि विश्वकृत काद्य, य कम य क्र व क्रांत्य, बहा कुंड शांकि जोत छाट्य।। धन कफि माहि छ। है अया छात छत्रा कारे, कार कट्ड लिये पारत बादत । स्थमन अकार करत, नाहि बार कात पटक जाव विदय मालाश कामाद्य । जूबि कार्ज कर्क मण्डिक विक परणाम वि, स्मर चारवहर प्रक्रिक दश्व वन के प्र ट्यान घत, वासि छव नावि लते, हैं थ विकू नावि कार त्यांच त्यक्किति मन्द्रवादी, जानिशह कीवनमी, त्रेश किहू करिक क्षका । अञ्चल रेकार । बारका कृषि ब्राक्षत्र की व बार केंद्रिन ट्वाबन । ब्रांच देशन ब्राह्मण ब्राह्मण में टर्ग ब्राह्मण स्थान कुक करण काक विकारिक । गरंग बरन करे किंग, कनमार्ख enter com manica des milas il construite este de la construite de la const

রাধার কলক্ষ শাস্ত, ভাবহেলে করিলা তথায়। প্রত্যাপ্রাণ গায়, কলক ভঞ্জন গায়, মল মন রাধাকৃক পায়॥ ভাষ কলক ভঞ্জনাত্তে প্রাকৃক্তের শ্রীমতীর

कुरक्ष शमन। भग्नात। এখানেতে क्रिमजीत कलक पूर्वारत। जारहन वानम् यत्र वामिष्ठ रदा । सूर्या भाग वाहारत वाहेत त्रमनी । त्रिश इत्विष्ठ देशम अष्ट्र याष्ट्रमणि ।। निकार्शन भूत বাদী নিশি ঘোরতর । নিকুঞ্জ কাননে কুক্ চলিল সম্বর।। বানর সাজায়ে বসি রাবা বিনোদিনী। হেনকালে উপনীত टेन्ना ठक्रमानि । क्रूप्क प्रति कर्माननी डेठिया महत्त्र। नमा-দরে বসাইল সিংহাসনোপরে।। নানাবিধ মিট অনু কবি चारमध्यन । बीकूरकादव वर्षत्र कर्त्रान(डोबन ।। (डाबनारस ভাষুণ যোগায় স্থীগণ। মুখ শুদ্ধি করি হরি বলিলা তথ্ন वाम ভात्त विमानन वांधा वित्नामिनी। (भाष्टिक इहेना श्वत Cमर्घ (गोनामिनी।। जारी-मधि मधीलन वानिस्ठ रहा। द्रांधा রুষ্ণে সাজাইল নানা ফুল দিরে।। চারিদিকে সহচরি চামর ঢুলায়। ভাহাতে আননদ বড পাইয়া দোহায়।। ভবে হরি बीमजीटक कटहमबद्दम । आफि रेहरू रेहल जब कलक (माहम যতেক রমণী করে ভ্রক্তে বস্তিাসকলের মধ্যে ধন্যাভূমি ताक्षा गजी।। कह कह स्थितः स्माति सक्तभ वहन। अक्रानिक गरखाव स्टब्स्ट छव यन ॥ भूनित्रा कूटकात्र वानी करवन निमर्जी ভার কি ভাবনা নাথ ভূমি যার পতি।। ভূমিত্রজা ভূমি বিষ্ণু ভূমি, মহেশুর। তব দেহে নিবদরে যত চরাচর। তোমার माञ्चारक मुक्क अ किन मश्मात्र। छव एमा विटन दक्क ना एस छन्नात्र।। कर छनि तांशांकाख चन्न न वहन । कि कतिरम शांत्र खटव ও ब्रांका हरून।। कवि कटर व्ययक्षेत्र यनि उन रहा। क्यांन एक कर किहू रहेश मन्त्र।

काश भाषाट्यांत कथन।

भत्रात् । किर्णातीत कथा क्ष्म कतित्रा व्यवन । जुकै रस्त्र कहिर्द्यम क्रमलरनाहम ॥ श्वन श्लम श्वनवणी करत्र गांवधान । भौत्थरज्ञान प्रस्कृत ज्ञान्याम । जनस्मत्र कृत

CONTRACTOR OF COLORS CONTRACTOR CONTRACTOR AND ALL अवका श्राहण करिए वर्षे कर काम । बाना मुना इक करा भूतीरत म्हरम कि । अपि उन्ह लेखन करत थानी पूरत के सा छाट्य मा (माकि कर्त मानु बलि छात्र । विरम्प सूर्व पुरुष गम यात्र कान । म्यान भवम शाक भविक अधीम ।। क्षेत्रध्वरती महीरवंद्र द्वेश कालियान । जुक कवि स्थर मेरान क्ष्मेनिट्ड निर्माण वा अपिक्षानिवास कार्ट्ड करे देन र । माहा श्रुष्ट करने जर्म करते एसर ।। क्रिका नश्मात कान कि हुर बार । विद्या लोके बायात्र कवि करका। शिका मार्थी विश्व লাভ বছ হারা পুত্র। কেহ করে নয় সধ্ শোককির মুক্ত।। अक्षारमाटक जीव कक् मर्टा बक्क स्टा अभक्षाप्र छत जात गर निवाद तरहे । कर्ष कर्म कलिकान शूर्व घरत घरत । वर्षातर्श भारतवादेव दक्षा दक्षायावदेव ।। मतन मुक्ति गव अक्कार मत कामार्थ प्रदेश कार्ष नार्विक मध्या । मतिरम पुनन्त जमा क्वित्रा श्रेरण । श्रेष्टिवारण नामा द्वारण कत्रारा खनन् ॥ भूनवार अंको शूनई ६ है (बे अमम। मा वृत्तिश मर्क कर्म थार क आहर न শ্বীৰ বস্তু বৈমন ভালিয়া পুচাগৰে। মুডন বসন পরে জানত क्षिक मेर्टन ।। रमहे बाटल क्षमा मृद्य विश्वत विश्वता । धार िक्षंत्र का कि का बा क्षेत्र) (महरू धार्त । कुलाल हर्कित ना राज हा श्रीक करता । शूर्व लाक हेर्राट विश्वान खावि महन्। ज जात विकास माहे क्रांतियः निक्तत्र । विकारणादक स्मीकाम्हत्र कर्यन जा है। । किंद छाटन क्लिनिक नम करत के न । पूर्व पृथ्ये क्षेत्रकत जुना मानामामा गीउ छक तम जाव जारत स , कान । वंशो विधि है लिए एउन कर्दा क्यान ।। रन रूप भवन गौधु विका महाकन। क्राटम हेहेर्द शांखे जानात हेत्न । दिसदा काविक मन ना देश वाहात । अवः महस्राटव बाटक कानम काशाव ।। नगुरा दबन हिरमा त्वान करत्वकान दिन्दीक बेल टाइड कटर का नोना ।। शहरत अपूर दिन नो स्त्र कुइविक । हे व्हार्थिति देव क्लिन नेट्ट बान बिक । भाग श्रुका बर्काबका तब रकाज करता श्रिक लिकारत त्वार ना तार्थ अवद्या । क्यान जान कर्य चाट वान्यात । श्वराय महरू

ज्ञा मना मर्मा अपने ।

लश्रात्र । मारश्राः द्यान विवत् अभिन्ना अभिन्ते । क्रम कारह केहिए हम कित्रि मिमिका। कहिटल अभिन्नु माथ स्थान विव-त्रण। यमा गरमदात्र्य क्रम कर नात्रास्त्।। रहेत्स व्यम्रमञ् किया (भाष घ छ । किया कल्लामत इत माउद निकटि ।। शामता अवना नाती किছूरे ना कानि। अनुवार श्रेकानिता কং চক্রপাণি।। তোমার বদন বিনিশ্বিত বাক্সেগা। আর্ণে बुक्टित किन्न करतेव क्षा।। वाधिकात विमय बहन भूमि रवि कर्डन करूर्गमा नेर्वाक्षमा कति ॥ भून ब्रिट्स महामिदन नमा भएनक । विखातियां कहि कथा भूतान धनक ॥ सम भूका बिए। कर्त क्ष्यवंटन छाटक। निकास भागात सादि मध रहत बारक । जीर्थ भर्य हेन जीर्थ स्नान करत सूरव । मिथा कथा क्लामा कलामा माहि युद्ध ॥ अविधि त्नराक्ष अख्या अख्य রক্ত। বেব বিজ প্রাঞ্জর চরণে প্রিয়তক্ত। পিতা মাতা क्षि जोक बाद्य मानामान । क्रालंडर क्राजिनए क्रद्र कत्रमान ।। क्रमाच्य हिर्दे मन निवस्त रेड । नकरणत नरक ममकाय कावित्रत । शहरिश्मा शहनिका ना करत कथना अ मकुन क्य किएम मर्कत नकन् ।। मर्मक बारमरक बाकरम धर्म अक्ष । अटमूब अभिक्रे कह अगटका तम ।। हैशह असान

श्रक वेष्टिनंब करें। भटनांद्यांत कांत्र खन वापा वनमही ।। আছুয়ে অংকিপুর স্থবিধাতি গ্রাম। তথার বগতি বিজ হরি मुखानाना। रिन प्रव बाक्ती जातनि वित्र गरत। शक्तरन कर्द्वटक बुरुवाम करत ।। नर्कनाद्ध वियातम निद्रण विशा मान । द्वार्क कृष्टे पुत्र कारी शिकात नमाना। वानव माटमाक छात्र के निर्क छनत्। (बनाज्ञ निमद दनका अड़ा ना करता। পিতা ঘদি করে ভারে ভাতনা বিশুর। পুকাইয়া খাকে গিয়া বনের ভিতর বিশাকালে আইবে তার মারের সদনা পুঞ स्तर्र (पत्र माछा क्रिट्ड खावन ॥ उत्ररोडिव रहत्र क्रम नाहि कटा । प्रवद्य मादिया भक्ती बाट्यामत जात ।। अकट्य बिकास मिछा खाला कुमांता प्रशिक्षा क्षरण किय रहेल निर्वात ।। खाक्तीत श्राविक श्राद्यात कहिल। बमन प्रताका पूज (कन ना मित्रला। क्यार्ड श्रेश यद कानित्व निमाद् व्यक्त नाहि निया छात्र लाश्मू पिछ थाएँ। छनिया यामीत खाला जाना त्रमनी। वाकालाश ना कतिश दिश कर्मन।। क्ट्यट दिवन शंक मञ्जाकान इत। द्विकाटन छेननीक खांचा क्रमत ।। कारिया माट्यंत्र काटक काल्यिया करिट्छ । ভার দে মাথেতে ভাক ক্ষার দহিছে। চকে না দৈবিতে পাই কৰে নাছি ভান। ভোজন করারে প্রাণ রাখপো क्नमोना छट्दछ खाक्ती जन जानितार नाम । सामी जाका हिलू कि कू शारक मिन जांद्र ।। स्कथिता वरनम निक कि निरन थाहरू । बा करम कि महादमदा शारम् इम्र मिट्ड ॥ खाचनी करिए बोर्ड अन वाल्यन। लिटा आकावर्डि कति नारि व्यवात्रन । अकाद्रात एवं लिका दकाशाविक हिटल । व्यक्ता ক্রিলেন মোরে পাংশু ভোরে দিছে।। স্থামীর বচন आति लक्षि गांधा नाहे। ज क शांत्म किक्षिए निप्ताहि छाहे इन्हें।। अन्नावीय अन्य श्रुव जामोत्र बहुम। दश्या छाजि घटत का तिश्वन श्रेम । भूमि निष् धननीत्क किछू ना रिल्य । धन्त्र क्लिक धन छाजन करिन । अख्यात्म निष मारम बरने शारविषया। निरीष कानन मारव छिर्छातम विष ज्ञानदर केरिया अरिश मांबादांक । मत्वाद्वाद्य नक्तरन विशे

नोत को को वा श्रामक करेन निर्मा विषय केन्स् । वकः रेटक नामित्नक जान्त्र क्रमा १ श्रुक्षमृत्य ग्रह्त हिन श्रु क्रिमा कि पूर्व नेया रथेट अराज शास्त्र शास्त्र ।। हत्थान वर्गाल दन्धी हिंदित शांकी । क्रमा क्रांटि गांदिक हथाने कांकि ह'फां।। श्यमध्य देव कि का हैन उथात । त्मा कान्टन उक्क कटन कि करत कथाया। कल्मि। हशान अकटक विनशास्त्र। विक सूठ शिश् छेलेडिक छोत्र कारही जरल बक्क खूब प्राप्ति ह्यारलब न्तर्भा वृतिबादत आमि मिल छेखम आनम् ।। श्राम विश्व गर्व कटह म्याम्द्र । कि कात्रां व्यानम्म हथाल नगरह ।। विक बटन आमात तर्दमटक किर माहै। बदमटक खमन कर्तित्री किंदि छाडे।। भरी हेटन क था। ३८३ ছि अप्रिक्रा कि कि ভোজন দিয়া শীব্র কর শান্ত। শুনিয়া বিজের মুখে এতেক ভারতি। কাছে চণ্ডালগণ আক্ষণের প্রতি।। স্থাতিতে ह्यांन स्माता कटर गर्काक्य। दक्यांन खर्थात खर्थ रहेर्द (जाकन ।। खाक्कन करिन कात काशास्य हेव । अहेथारन हुर वान कतिया थाकिया। क्यां जित्यां अतिवात मारिक कामांत अक्टलट अंगिशाहि आनि कान हात ॥ अनिशं वर्धान श्र शहल त्रण्योष्ठ । दल कृ म बाम त्या हक शूरवारिक ।। यक्षमान इव एवं आया नकरन शक्रम आनंदन वान कर् €हें कुरण ।। आक्ष भावि किश कर्या खरानि शक्ति। मक्ति कब्रिट्य कृति यथः तिली नीति ॥ डेन क्वन इत्य कार्य केन कना विष मिकिना विलिश काव न्यादि कर किए। जीवता मकदन दिन ट्यामात विवाह। समाधारन प्रकृत इहरत क्रिकी । भामशा अन्त कथा विद्यात क्रमात । ह्यादन भूदता रिष्टा कृतिल मीकाइ ।। स्ट्रांग कृति। अक वाक्रिया प्रथाय। वर्षित हकार नर हुछ दलक दा म । हुकादल कर कर कर कर क्का भन्दमान द्वाराज लाका सकता हलात्त्र क्रिय कर्ता कांत्रवा मामन । हान काल कांत्रा अधि करत जेगा का मा atach fem die veloude bet begient mater ofece milan ingracie wifen at bish bishin willia and realism and seam il affents here

বিবাহ মোরা দিব। প্রাক্ষণের কন্য় আর কোথার পাইব।।
আমাদেব জাতিতে চঙালা একআছে। অপানালে তাহার
বৈধব্য ঘটিরাছে। জানিয়া তাহাকে দিব প্রাক্ষণের বিরা।
তই জনে সুথী হবে দোহারে দেখিরা। মন্ত্রণ করিয়া ছির
প্রাক্ষণে কাইল। মুক্তালভাবলী গ্রন্থ ছিল বিংচিল।।

अथ किल भू जात हुं जिली-गई विवाद। नेषु-जिल्हा। यटलक ह्लान, ह्रा शटमशन, करह भून **বিজপু**ত্র i বিবাহ ভোমার, দিব গারোদ্ধার, কংতেছি ভার ञ्चा। भूमि विश्वनत, कृश्टिष्ट नचुत्र, आरंशं कन कर गरन। स्भारी तिथा, क्या जाम शिया, তবেত বিবাহ হবে।। 4 कथा छनिया, हित्य हहेया, मिलिया हछालगन । जानित्यक कन्मा, विवादन्त कन्मा, किवा बश सूत्रकेन ॥ छाक किनि काणि, काष्ट्रेशांक इपि, यत्र कलोका क्षांत्र। अस्मत নৌয়ভ, কি কব গৌরব,পচাগন্ধ তারগায় 🕫 খাঁদা লৈ নাসিকা কর্কশ হাসিকা, গল্পভ নাসিকাধনী। অন্ধ্রুপ সমা, ৰূপ निवालमा, जिटम अञ्चकात मनि ॥ विजान नत्रना, त्लहक वनना মুল্। সম দন্ত পাতি । দুটিপাদেশিরে, গোদ শোভাকরে,গলে গল কণ্ড ভাতি। বিনাইয়া নেশ, বান্ধিয়াছে কেশ, কিবা থেঁপ। পরিপাট। তুলনা ভাহার, কিনে দিব আরু যেমন বংরী আটি। পৃষ্ঠে কুঁচখোনা, অতি মনোলোভা, গমনে রোধিক। হারে। কুমাও আকার। কুচ্যুগতার। লোলে আপ-নার ভারে ॥ চণ্ড লিনীগণ করিয়া ব্রণ, কন্যায় বরেতে লুইল। ব্ৰাক্ষণ নন্দনে, আনি ততকণে, খুডকণে বিভা নিল। खोकाह त जानि,कर्म यथाविधि, क्रिटलक चाद्रा यउ। भद्र क्सा बाब, यम देश वामरत, श्री कुक मिरलह कुला। को कुक स्थानकः नीन द्रम द्राप्तः शहिराम करत वरत । कर माल नोक रमेश कर्रम भाक, भन्नम ब्रहागा छट्ड ॥ ब्रह्मकर्भ गटन, महा-मह्हाएमत्व, हखान युवकीनत्व । वामत कानित्र', अज्ञादक किता, श्रांत जाता निटकंडरन । उपचरत विक, गरत तिथाता निक, शुट्ट की मुद्धि दिन । कमारित वृत्त्व, दश्विता उर्थन, क्षांत्राटक भागविन ।। बाक्रन नक्षत्र, व्यानिक ख्रेवन, वृतिक

तर्गत जा। हर्षा निकान, त्मेर विकान, तर्ण कालान, शांतित प्रथात महा। हर्षा भिनान, त्मेर विकान, तर्ण कालान, तर्ण कालान तर्ण । तिश्री क्षिण काला महा। त्मेर वात्र, त्मेरिक काला नहान, तरिन हर्णानी नरा। मन्त्रिक विकान, खोका महान, तरिन हर्णानी नरा। मन्त्रिक विकान, खोका महारा, मनी थारक मह त्मेर । नारिक विकान, तथा शतिराष्ट्रण, व्याप शतिराष्ट्रण, व्याप थारक महान। काला विवान, व्याप शतिराष्ट्रण, व्याप थारक मीन। काला विवान, व्याप निवास, काला क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र काला विवान, व्याप काला विवान, व्याप काला विवान, व्याप केला विवान, व्याप केला विवान, व्याप केला विवान।

व्यथ नाष्ट्रोक्टक्रांबटकार्भान।

পরার। 🕮 क्रवः कर्टन 😎न दांधा विस्तामिनो । विस्तिक खिक पूज नास हकानियो। विक्रुकान आंत्यादमा कतिन ্বঞ্চন। অভঃপরে উপস্থিত অপুর্ব্ধ ঘটন। একদিন চণ্ডালিনী ভালি লাজ ভয়। ধরিয়া পতির গলা অভিমানে কয়।। দেখ নাথ কেমন সুন্দরী হই আমি। অর্ণ অংকার কিছু নাছি দিলে তুমি।। এ হেন সোণার অজ্ঞেনাহি অভরণ । দেখিয়া ना प्रथ ज्ञि ध जात (कमन। नवीन शोवन मानु कन्मधि প্রায়। অলক্ষার বিনা কি ইহার শোভা পার।। রম্বীর রূপ णानि १ इंड योवन । योवन श्रामिश्व मात्री वनन कुरन ॥ अड़-এব সকাতরে বলি প্রাণনাথ। গংগা দিবার চেষ্টা কর অচি-अंख ॥ अर्थन नामिटन चातु भाष कि इट्टेंट । रथीवन वहिशा গেলে পরে বুঝি দিবে। শোণা কানা পরিব থাকিব সুথে বাসে। ভোমারে করেছি বিয়া এই অভিলাবে ।। ভূমি যদি ना नित्न शहना महनामक । उदर किन थाकि र छोमाव कर्य পত।। সূর্ব অলকার বিনা না রহিব ঘরে। তোমারে ছাড়িয়া व्यक्ति याव खानांखरव ।। ना इट्टेंद उर मरक विद्रांत विनास । व्यमार्था नहेंग्रा काँवर गृश्याम ॥ एग्हे माज बहेकथा ६छानी करिन। विकास अन्यस देवन (भन अदर्गिन ।। विद्रशीय করম্বা করেতে ধরিয়া ৷ কহিতে লাগিল ভারে সাস্কনা क्रिया। जूम भारत व्यक्तिया तम्गी तटन । मन क्रांव ट्यामाद्व कर्ताच नमर्गका स्टब्स्ट स्थामात साम त्याम

बाकावाकि। बहिल्ड क्यून ना इत्वहाकाकि। उद्य क्रि ছাত যদি হয়ে অভিমানী। মিক্চয় কহিছ আমি ত্যাজিব প্রাণী।বিধি মোরে লক্ষীছাড়া করিয়াছে তাই। নহিলেকি অৰ্থ ছুধা দিতে ইছো নাই।। যেমন ৰূপনী ভূমি যুবতী তেমন रमानात मह्शा विमा नाटक कि अमन । जूमि शिरा यशकाद्र প্রকাশিলে থেব। শুনিয়া আমার মর্ম ইইভেছে ভেব॥ শ্পথ করিয়া ধনী তব কাছে বলি। এই আমি স্বৰ্ণ আনিবার ভরে চলি।। এক মান চুপ করে বসে থাক ঘরে। क्षवन्ध कानिय कामि हैशेत किएति । माना एम्म (ममा-खरत कतिया खमन । किकारमर्ग करन निव सूवर्ग पूर्वा। ভোষার বাসনা পূর্ণ করিব নিশ্চা। ইহাতে না ভাবি কিছু थार्गत मः भग्र ॥ धःकना त्रहिल गृह मावधारन (धक। শ্বেমদাস বলে মোরে ।মনে মাত্র রেখ।। চলিলাম দুর্দেশে তোনার কারবে। প্রতিক্ষা ভোমার শুদ্ধ হর্ণ আনমনে।। अञ्ज्ञ विमानिमी विषय टिशाशिया। श्रीधान विमाश कर् অসরা হইরে। এতবলি রমণীর রাগ শান্ত করি। যাত্রা করে বিপ্রসূত শারিষা আহিরি॥ গৃহ তৈতে বাহির হটয়া চলে ষায়। ক্রমেতে চপ্তাল পাড়া পশ্চাতে এড়ায় ক্রাপাখুর ছাড়া ইয়া ভারনো পশিল। বিশাম কারণে রুক্তলায় বৃশিল।। চিন্তায় আকুল চিন্ত ভাবে কোথা যাব। কাহার নিকটে त्त्रात्त वर्ष रच्च भाव ।। (क अपन चार्ट त्यांत क्रियं चुनात काहात खेलरत आणि पिव अहे छात्र ।। छात्र इहेरव किरन স্থানের কামনা। সাত পাচ কত মত করিছে ভারনা।। উঠিয়া চলিল পুনঃ বন অভিন্থে। সম্ভাবেপ ভাপিত ভকু গাঢ় भरताहृह्य । निर्कत कामरम शिक्षा कृतिम श्राटमा वाञ्च छझ दकर छत्र मी मोटन विद्राम ।। हटन दयरछ शुर्थ काहे। ्याने कुटि शांत्र । त्रांक्षे बाह्या विक त्रक शटक छात्र ।। প্রভাকর করে করে অঞ্ব জালাতন। অশ্বরে আন্তিক বিজ্ঞা मट्ट् ममा अस ।। किथा त्नादम त्माना नाक करत कि छ कारत कारिया केलांब किंदू ठेरिदिटक मादव । कामदम जमदम जम नाकित विश्वन । सन्द्रमञ्जा गाउँ विश्वन । अकान्द्रन

शमन कि जिल कियों कर । मन्ना दर्श किथिन अक छेक छत्नवंद তমোমর নির্দি ছোর হইল যখন। ধীরে ধীরে ইক্লোপরে कें क्रिन क्थन ॥ विकियात्र छेन्यूक भाषा अक त्नारा । विनित्नन विक्रभुक त्यन किन करता। जिहे इटक थाटक वक माणी क्रम লাম। বেদ ভদ্র পুরাণে পণ্ডিত গুণধাম । পরম ধার্মিক বক धीत मान्र कानी। बकात मकात करह प्रतान क'हिनी। निका नित्रा बिक्कालाटक करह योन कथा। प्रव द्रम्म नद्य बका, खान नर्तथा ।। बनका जाकितक वः मात्र वाहेन । গাছেতে মনুষ্য আছে দেখিতে পাইল।। জিজাদিল কেবা ভূমি কছ मश्मात । कि करना चातरा अटल प्रश्न शति हत्र ।। मलूरवात গম্য নহে তুর্গম এ বন। মহিষ গণ্ডার ব্যান্ত চরে অগণন।। क्रम एक वत्न मत्न कतियां कि आभा। य ए एल वरमह ভাহা জামার দে বাসা।। দ্বিক কর প্রাণে ভয় নাহিক আমার আশ্রমে অভিথি আজি হয়েছি ভোমার।। কুধার ভৃষায় कात्र कामन खमर्त । विषय वाकूल बाका नः नरत वनरन ॥ ভক্ষ দ্রত্য দিয়া আবে কর ক্রধাক্ষা। শেষে কর আমার ৰুষান্ত সমুদয়।। শুনিয়া ছিজের কথা ভাবিতেছে পাথি। অভিথির দেবা ধর্ম কিব্রপেতে রাখি।।একে বন ভাবে ঘোর নিশি অন্ধকার। খাদ্য এব্য এছানে মিশিবে কি প্রকার। আল্লমে অভিথি যদি থাকে উপৰাসী। হইবে ছফ্ক ধৰ্মনাশ भाभ दानि ।। नद्रदक कदिएक वांग माध्य कांत्रि इत । मक्न জন্মের পুনা ঘুচে হাবে ভবে।। এত ভাবি সাধু বক নারি ছই পাধা।উত্তে তবে উৰ্ভ উঠে হইয়া আদেখা। কণমাত্ৰে হানি উত্তবিদ नमीकूटना हक्ष्रभूटि धतिटनक बृहद मकूटन। मदना नदम इर्व इत्त भावादम हानन्। किन कमदत्त्र कदत्र की कि शो विन ।। कार्यः चत्रियस अधिरमानं कत । পোश्राहेता थांड भरमा आमिशोहि ध्रा । इक शास कुछ बक (छाना आह कारहा कल्याम स्थात कतिया शिशा भारह ॥ अनि दिक र्क हरेल ब्रिटल माजिनाकां है कुष्रिया करम जनन लानिन नहेंता नकुन भीन वक्ष करते छात्र । आर्थनात्र मरनाम् रथ पति

ट्रिंदि थीत ।। जाश्वामद्य शाकामाह नाटन एक सुमारिमत इहेम भूर्व पूर्व कूर्व क था।। उत्तर भावित भारत सुन्नित इहेन ट्नकाल वक विश्वेष्ट्र किलानिन्।। दथनएक एव एवर् स्टाइट नी बन । जर्व जात विनाम कि किया जाट कना। বিশেষ করিয়া বল আমারে সবালে। কে ভুমি ভারণ্যে এলে কোনঅভিলাবে ৷৷ আভাতা এও বেশির যতেক বিবরণ ৷শুনিব नकत जामि भेरे निरंदनन विषयत्न बक्क कूरन सनम आमात অতি অভালন আমি পাপী ছুরাচার।। বিদ্যা শিকা েছু পিতা করিতেন রাগ। একারণে ঘর যাভি করিলান ত্যাগ বিবাহ করিয়া শেষেচগুলের বালা। স্বর্ণ আভরণ বিনা ঘটি त्राट्ट काना।। जाहे कानियाहि बटन कहिलाब नाटि। अख्दत विवाम অভি দেখে বুক काछ।।बाक्तरगत्न कथात वहकत हेइन হাস। কহিতে লাগিল দয়া করিয়া প্রকাশ।। শুন দ্বিক বলি আমি এক উপদেশ। যাহাতে প্রচুর সোনা পাইবে বিশেব আছেরে আমার স্থা যক অধিপতি। যদি তুমি যেতে পার ভারার বস্তি ।।বিনরে কহিবে তারে মোর নমকার । পাইবে সুবর্ণ রাশি অতি চমৎকার।। দ্বিজ বলে কোথা দেই যক্ষরাজ খাকে। কোন দিকে গেলে েখা পাইৰ ভাষাকে।। জীতুর্গা প্রসাদ ইউ চরণ ভাবিলা। মুক্তালভাবলী কহে ভাষার রচিয়া অথ ছিজ পুতের যক্ষালয়ে গ্রমন।

দীর্ঘ-ত্রিপদী। কহিছেন জলচর, শুন্থ ভিজ্বর, যে স্থ নে থাকরে মক্ষের। সে দিক উত্তর সটে, হিমালয় সলিকটে, গঙ্গাতটে স্থান মনোহর। কাঞ্চন নির্দ্যিত পুর, দর্পণের দর্প চুর, হীরক কপাট ভায় শোভোচারিভিতে কলবান, মুশীতল সমারণ, মধুত্রত ধায় মধুলোভো। সরোবর হুবিমল, পুরিত নির্দাল জল, টল টল করে মন্দ বায়। পুষ্প পুঞ্জ প্রক্ষ্ণ তিত, গঙ্গো করে আমোদিত, কোকিল পঞ্চম শ্বরে গায়। ছয় পাতু পরস্পার, বাজয়াছে নিরস্তর, সহিত নিজের দলবল ময়ুর ময়ুরী যত, নিতা নৃত্য করে কত, বিস্তারিয়া কি ক্রব সকল। যক্রাজ নিকেতনে, প্রতি দিন নিমন্ত্রণ, হয় লক্ষ্ ভালাণ ভোজন। স্থাণে র থালা বাটি, ঝারি ঘটি পরিপাটী,

দেয় নিতা করিতে দেবন।। এক্সদেবা ইঙা মাত্র, লইয়া উচ্ছিট পাত্রাপুরে ফেলে যেন মুন্ময়। ঘারে ভূমি সেই স্থানে यक्तराक विमामारम, स्मात माटम मिल পরিচয়।। ত! इट्टन ধনপতি, ভুফ হয়ে ভোমা প্রতি, সুধর্ন দইতে আজ্ঞা দিবে ! যত তব ইচ্ছা আছে, ভার বান্ধি লইও পাছে,তনন্তরে বিদায় হইবে।। বক মুখে দ্বিশেষ, জ্ঞাত হয়ে উপদেশ, ভ্রাহ্মণ কুমার মনে ভাবে। কভক্ষণে মুখ তারা, যামিনী করিয়া সার, ভপন উদ্ধা চলে যাবে।। বহিল ভাবনা ভরে, নিজা নাই রক্ষোপরে, সারা নিশি জাগিয়া কাটায়। প্রভাত হইলে পরি, রুক ইইতে বিজ্ঞাবর, নামিয়া উত্তর মূথে যায়।। নিশ্বাস ত্যজিয়া দড়, আখাল পাইয়া বছ, বিশ্বাস করিয়া শীপ্ত চলে পর্কত কানন কত, এড়াইল শত শত, বিশ্রাম না করে কোন ऋटल। मना वंशू विट्रा शांत्र, मन्नू व्ये तिथिए शान्त, यक महा श्राक्षांत ভवन। अर्डिशिका थटते थटत, १६८त मन पूर्व कटत, চৌদিরে বেষ্টিত উপরন। লক্ষলক শিবালয়, মন্দির মাণিক্য ময়, কনক কলদ তার কোলে। খেত রক্তবর্ণ নান', পতাকা উডিড র মানা, পবন হিলেলে হেলে দোলে।। প্রশস্ত সমস্ত বাট, কন্ত শত হাট ঘ:ট, গীত নাট হয় স্থানে স্থানে মাওঞ্ खुतक यल, ताजभाष ज:म कल, तथ तथी (यथारन कथारन क्रवाल कीवनांकात, यटक वाट्य प्रवृक्षात, वमएकात विकृष्टे বদন। দীর্ঘ তাল তরুবর, লম্বিত যুগল কর, ভয়ন্ধর ঘোর मत्रामा (कण कहे। हक्कु कहें।, मध्मम अम हहें।, धात पढ़ी क् लाकात (मह। कह माटि क्हे गात्र, कह छे छत्र थात्र, भूपन भूपत्र थ दी त्कर । (कर्वो स्ट्रेश व्यू क, करत अब मला वुक, (कह मटम्क नाष्ट्रिक शाहीक। (मार्थ विकसूत कार्य, मार्ट माठ এक इत्य, ब्रांज পথে शहेन चाहांछ।। दाति ভাবে ধরি ভোলে, ইন্সিডে জিজ দে ছলে, কেবা ভূমি কোথ कात भाषा (काब (ताब किया कांकि, कात श्रेंब कांत्र नांकि সভা বল নহে দিব শাপ।।মনে ভর অভশর, ভিজ কয় মহা न्यू , मधुम्ब शक्तिह करें। विक्षितः दम क्या ममन्मत्रापम प्याद तुम, चात्र कर्ताह चामा वह, खिमता चातक तम, चतत्

शहिंगा क्रम, व्यर्भित्य जार्गाह ज्यात्म । योक्षा बहे ध्रेग्नोत्ह या १ यक ताका कारह, ममाठात कव डाँव श्वादन ॥ धनि वादि मुद्रेशारम, कर्कें वहत्व खारम, वरल किर्त्त यां क्रिकाथी यांत्व बाक्यी हाक्। मरता पुश्रयं, पूर्ति वन क्लान मृर्थं, वक्त वाक नव मन भारत। दश्या जातिश्राष्ट्र त्यादत, त्क किन बनिशा ट्यादत वृत्ति छात्र श्राटन नाहि अप्र। भूनित्त रक्तित ताला, निद्यन উচিত সাজা, তবে ভোৱে কে দিবে আশ্রর।। অভএর পুন্ বলিতেছি ছিত্র শুন, সুশীব্র পলাও লয়ে প্রাণ। নতুবা শঙ্কট ছোর, উপায় না দেখি তোর, কি ৰূপে পাইবে পরিত্রাণ।। ভিজৰলে শুন ভারি, তর্ক না করিতে পারি, কেন ভুমি বশ বার বার। এত আমি নহি মুঢ় আছে কিছু কর্ম গঢ় কহি छ द्य भूल ममानात ।। नाष्ट्री कक्ष नाम थति, काटह वक धर्मानाति - সেই মোরে পাঠ।ইয়া দিল। সথা তার যক্ষ ভূপ, জানাইতে क्याँन बाल, श्रामण आंगाद्य कहिल।। खाति कटर वटि महा का बिनाम उदद उथा, (महे दक दि मृश मधी। कि शिष् দাভাও তুমি, জিজাসিয়া আসি আমি, আজা হৈলে পাবে व्यक्त (पथा ।। उपस्टात कांत्रि (४८१, म्रवाप किश्ल (४८१, यक পতি বনিয়া যে স্থানে। খুন নৃপ যক্ষেশ্বর, আদিবাছে ভিন্দ वत, हेम्हा जात चारम विमामारन ॥ माम वक मार्ज कक, जब প্রিয় অন্তর্জ, সেই ভারে করিল প্রেরণ। অসম্ভব কথা নয়, যদি অসুমতি হয়, ভবে ভারে আদি এইক্ষণ।। ছারীর বচন শুনি, যক্ষরাজ মনে প্রাণি, অনুচর প্রতি তবে কর। কোথা আছে দ্বিল নর, জান গিয়া শীঘ্রতর, সুধাইব স্থার বিষয়। ভুপতির আজা পায়, বারী বায়ুবেলে ধান, উপনীত হইল क्रशांद्य । कटक वन विश्व वत्, जाटक निन्न यटक वत्, गटक नद्य याहेटल ट्यामाटत ।।थम)पूर्म अन्य द्विया, अपृटकेत व्याटक-मथा कूटवर महिट्छ (नथा इटर । जाना कि इश्वे शव, भारत मटन म छ वत, मन इश्थ पु: । शांद जत्वाहात्रीत कथात विकाशम करतन भीखा, मरन मरन कामन्त्र कलात । अपूर्ती श्रान बरन জীকু:ফার পদতলে, শিশুর পুরাও বাঞ্চ যার।।

अथ किये भूट तत शकता जात गहि ।

পরার। অনন্তর বিজবর অনুচর সঙ্গে। কটক কটক मिशा हरल भरनांद्रव्य ॥ नश्रत्म नश्रद्ध भाक्षा निद्रीकेश करित । বলে একি অপৰূপ আহা মৰি মরি।।জনমিয়া হেন পুরী দেখি নাই চক্ষে। স্থপ্ন সম জ্ঞান হয় হেরিয়া প্রত্যক্ষে। প্রসাদ উপর নৰ নাগরী সুন্দরী। চমকিত চঞ্চল চিত্ত ছলে লয় হরি।। वाक भर्य यूर्थ पूर्थ यक नाही भरत। जनामद्य जन वामद्य করিছে গমনে। দেথিয়া ভালাণ পুত্র মোহিত হইল। চর সহ পুরীমারে গমন করিল।। বসিয়া আছেন যক মহারাজ যথা। দ্বিদ্ন নিয়া উপনীত হইলেন তথা।। প্রণাম করিয়া ভূপ করিল জিজানা। আমার নিকটে এলে কি মনে প্রাশা।। কহ শুনি বক বন্ধু আছেন কেমন। তোমারে পাঠারে তার কি লাভ এমন।। নিত্য তিনি প্রতাতে আদেন মোর পুরে। তবে কেন তোনাকে পাঠান এত ছুরে।। উত্তর करत्न विक कथात दकोणाला। एव गथा नाष्ट्रीकक चारहन कुणल । তिनि মোরে পাঠ। ইয়ে দিলেন এইখানে । কংলা চাहिटल माना পाव छव छोटन।। बहै ८२ जू कोना मिनु वाक्तिया যতনে। বহু কয়ে আসিয়াছি ভোমার সদনে।। ধর্মে মতি ধনপতি তুমি মহাশয়। তোমার করুণা হইলে আর কারে ভয়।। সম্পৃতি আমার হাণি নাহি কর কোধা বিশেষত ভোষার বলুর অনুরোধ।। ধকরাজা বলে আজি থাক ভিজ বর। নিয়মিত ত্রাকাণ ভোজন হলে পর । যত স্বর্ণ লইতে পার করিব প্রদান। প্রভাতে উঠিয়া কল্য করিছ পরান।। द्वान मका। भूजा निशो कद्र ध्येन । अष्ट्रांटन दिल (ज्ये क् নের নিমন্ত্রণ। দুভেরে কহিল ভূপ দেহ বাধাবর। ব্রক্তোজ্য কালে পুনঃ ভানিবে দন্ধর।। যে আজা করিয়া দৃত বিদায় इहेन। विक सूर्र्फ पिया अरु योगा योगी पिन ॥ नियुक्त इहेन আগাসি ভূতা ছুইজন। শীতল শলিল দিয়া ধোরায় চুর্ণাট নারার তৈল জানি অঙ্গেতে মাখার। গঙ্গামান করিবাংস **एट्ड गट्स यात्र ।। भद्रीत भार्क्जना श्रद्ध सान कदा**हेसा । श्रीती न अप्रतित त्याफ मिन भेदारेश।। छेन्डद्व न्दत तान दोबाद

गर्भात । सिमहिल विकाश विश्वा यथात्र ।। क्षित्र विश्व अगरिय अक गत्र। थाण सवा कार्निया (स्थाय जब सक।। ह्या ह्या त्त्रश्च (भन्न बाबा छेशशतः। विद्यात गटमा छक বিবিধ প্রকার।। কাঞ্চান গঠিত পত্র সকলের পাতে। यण्तरम खेलारम कृष्टिक अक मारल ॥ क्लांकनारख मकरन कब्रिशा चाहनन। कर्नु द छाञ्चु त्व करत्र गुरुषत्र त्यायन।। मिकिन। निरमन भटत यक नुभगति। गानिका सूर्व पूजा मनि शैता हिन्।। कानिकीन कुलात्न कित्रता विकत्तन। भवन्भत নিজালয় করিল লমন।। কেবল রহিল স্থা লোভী দ্বিপস্থত ভাবিহ ভাবনার ভাবে ভয়বুত।। ভদস্তরে ভূতাগণ আনিয়া তথায়। উক্ট মুৰণ পাত্ৰ ফেলিবারে যার।।দেথিয়। ত্রাক্ষণ कट्ड ड्रांब गर्स लाख। अहे ताना त्नर त्यादत यक महातांब সুব্ৰ প্ৰধান ধাকু উচ্ছিট না হয়। বেদ শাস্ত্ৰ পুরাণ ख्यादा (इस क्या अनिया देनिए शानि वान यदक्यत ।। नहेल शांत यक माना नह दिव्यत ।। यह माज यक्त्रीय অনুক্রা করিল। মহানদে ভিজার নাচিতে লাগিল।। সেই নিশি কটে প্রফে তথার ধারিয়া। প্রভাতে সুবর্ণ বোর। नहेशी वाश्विशा। अक्र इत चात नत्त्र कितन अमन। अत्यटक হইল ব্রাত্তি হোর দর্শন ।। হাতাড়িয়া যান বলে দেখিতে না পায়। উপনীত নাড়ী জঙ্গ বকের বাসায়। রুক্ষ নীচে ভার ব্যাখি উঠিয়' শাখায়। একালোক চৈতে বক আইল তথার। ৰিল বলে কত সুখে আছব চ ভাই। বছদিন উভারেতে দেখা শুনা নাই। তোমার সমান মোর বন্ধু নাহি কেহ। বেছিলাম ভব সন্নিকটে এই দেহ।। বক কণ অভিশয় পাই ब्राह्म करी। सर्गां (रज् कृके रशिह्म ग्रंथके।। बहे बर्ग মিন্টালাপ উভয়ে করিয়া। পুর্বা প্রায় বক মৎস্য আনিল थित्रा।। अर्थ कानि (शिक्षिश शहेन खाला। इत्कत भागात्र (में ८२ विश्वन छथन ।। वक वर्ण अर्क्क प्रांक निका साह তুমি। লাগরণ করি ধন রকা করি আমি।। পরে আমি ঘুমা हैंद अ श्रान काजिरव। तकनी श्रान देशल श्रहरू गहिरेव এक वित्र क्रिक्त को ति । ब्रिट्शकः म तो व विधारत क्रिके

इहेन।। भरत वक युपाहिन खाकान जानिन। बरन परन विरंव ह्या केंद्रिटक लाजिन।। अखाउ इहेटन निमि याव निक्रमादन बन मर्गा थामा खवा भाहेव किमरम ॥ वस्करत मातिया नह পৰে পোড়াইব। क्युधानता वह मारमयु थेट थाहिव।। बाह ভাবি উপকারি বকেরিনাশিল। সুবণ ভারের অত্যে বাঞ্জিয়া लहेन। लाशहेन यामिनी छेन्य निर्वाकत् । छात्रनत् श्रञ्जान कतिन विववत !। अशास्त्र शक्त निव कार्य निवयम् । दक बच्च दक्त ना चाहिन व उक्तर्य ।। चानियांत्र डाः नत्र नमात्र बदत्र याहेन। कि काउन गर्था भारत अर्थनमा आहिन।। विनवप्रकेट्ड বুকি করি অমুমান। তত্ত্বকরিবারে দূতগণেরেপাঠান।।উর্চ্চ चारम शैन वारम यक छत्र थात्र। कट पूरत विकरत प्रि বারে পার।। দেখে তার ভারে বান্ধা আছে মরা বক। বলে ওরে ছফ্ট ভিন্স ভূই বড় ঠক ।। যে অন করিল ভোর বড় উপ কার। বিনাশিলি তারে ভুই পাপী ছরাচার।। বিশ্বাসঘাতক ভোরে ঘুণা হয় ছুঁতে। ইহা বলি বান্দে তারে মকরা জ দুতে मुख कण्णा कतिहा मातिल वह्न । लहेशा हलिल सक तांकांत লোচর।। মৃত বক দেখিয়া যকের অধিকারী। শোকে সকা-ভর অতি চক্ষে বহে বারি।। জিজ্ঞানিল সমাচার কহ অফু-চর। ছত বলে বকেরে মারিল এই নর । শুনিরা ভূপতি অতি কাতর ২ইল। চণ্ডাশ দিজের প্রতি ভৎসিয়া কহিল।। কারণে যক্ষেরে মারিল ছুষ্টমাত। অপরাধি নহে ভোর কি করিল কভিন্দা তোরে বোণা দিতে মোরে করিল অহুরোধ। প্রাণ বিনাশিয়া ভুই দিলি ভার শোধ।। क्षिणाद विधित भाभ ना इस किश्वित । जूनिद नत्रक পাপ ঘেমন দঞ্চিত।। বলিতে বলিতে ক্লোধে যক ক্ষি-পতি। ব্যতি ভিজের প্র'ণ দিল অনুমতি।। দূতগণ শত পুর হইয়া ঘেরিল। বিপ্রস্তে একবারে প্রাণেতে মারিল।। (१था अकलाक अका चामि (मरमरन) विकास (मधिया मा वक जानमान ।। शामार्याटन कामिया मकन विवद्रण। हिन्दिन यक अधिश्वित खरने॥ दर्शियन मता दक तुरम्भार प्रक्रिया कमअनु वन कार्ट्स विन इक्षेत्रया थान

मान ल्लास दक ऐडिया विनित्त। (मर्वर्शन अवन् अनीमकदिन তে মরা সকলে প্রাণ বাগালে আমার। যে মেরের বধিব क्षियो तारे ह्वाच्या ।। यक्तां व कट्ड खाद्त कतिशः निथम । ফেলিয়া দিয়াছে মুরে ভক্তরগণ।। বক বলে হার সথ। কি कर्मा कर्त्वाला । जामात लानिया कम खामात विधाला। थापीरंका रहेन कामात महत्यातम। क्रिकेट वहेन त्यात এই পাপ ভোগে।। অভএব ভার প্রায়শ্চিত্রের কারণ। নাহিক সংশয় আমি তাজিব জীবন। এত বলি প্রতিজ্ঞা করিল বক্বীর। শুনিরা সকল দেব হইল অন্থির ।। কহিলেন চতুর্ম খন যক্ষপতি। কোখা তার লবদেহ আন শীঘ্রপতি ष्ट्रकरें। মৃত্रেह उथित कानिन। मक्षिक्तीमः अ खना विष्य ব চাইল।। প্রাণদানে চেতন পাইয়া ততক।। एवंशन कर्त्विन मर्भम ।। **अख्र**ति । शास्त्र भाश्य खाँद गांडेल अख्रति । বোধভাতু প্রবেশিল গুনয় অন্তরে। বিশুরকবিল স্তব দেবতা সকলে। সামার সমান পাপী নাহি ভূমওলে। বিপ্র কুলে আমার যে হইয়াছে জন্ম। পরিত্যাগকরিয়াছি নিজ ধর্মকর্ম চঞালের প্রায় আছি চঞালি লইয়া। তারুত হইগ্রাছি আমি বকেরে মারিয়া।। এতবল ছজ সূত বিংবকি ২ইয়া। আর্ভ করিল তপ বনে প্রবেশিয়া।। অভঃপর দেবগণ বদে সঙ্গে করি। চলিয়া গেলেন সাব অমর নগরী।। এ ক্রিক कदरन कमिनी उदय अना कि दिश्य मना मर तक दनाव खन বিপ্রবংশে জনমিয়া ত্র ক্ষণ সন্তংন । চপ্তালের সহবাদে হারা ইব জ্ঞান।। এক রাত্র ভার সহ কবিয়া নিবাস। ধর্মাঞ্চাতী खनाइत इहेल विमाम्।। यम। लिख तक कटत ছिन छिलकाता। ভথাচ অসৎ ভারে করিল সংখার।। হউলে অসং নঙ্গ এই দশা ঘটে । সহায়তা করিলেও এেলায় সক্ষ ট ।। দেখি প্রির मद्भारत कि लाग हमक्कात । व्याग मान करत्हिल खानान কুমার।। তথাপিও বক ভার বাচাইল প্রাণ। নাধ্যক সহ बादन देशल किया कान ।। भूनिता अम शे कांच श्विंश श्रेंग। बुक्शन ठावनी छान्न निक विवृति ॥न

अर्थ (भीत्रवृथं श्रुनित श्रञ्ज ।

পরার। এতেক কহিল যদিশ্যাস তপোধন। শুনি জানিশিত িত্ত হয়ে যত থাৰিগণ।। তবে পুনঃ গৌরমুখ মুনি মহাল मर्थ। व्यादमते निकट्डे कन कतिशा विनय ॥ अहू व इत्स्वत कथा (यन सूर्यायात्र । अवदन् अवदन् क्या वाटक् क्रानिवात् ॥ শুনা আছে সুধাপানে কুখা নিবারয় বিস্থাপানেতে কুখা ক্ষধিক বাড়য়।। যক পায় তত গায় ক্ষান্ত নহে মন। এ বড় আশ্চর্যা প্রস্থ অভূত কথন।। হইয়াছি কুণাভূর অভান্ত এখন কৃষ্ণ কথা সুধানানে তৃপ্প কর মন।। পূর্ণবন্ধ পরাৎপর প্রস্ নিরাঞ্জন ভাষার ইচ্ছার সৃষ্টি হয় ত্রিপুবন।। দেপ্রভূর নিজ थाम शारमांकं (कमन। दिशानक्षणधादी मह विकृतनाउन।। गाकांत्र कि निताकांत्र शारमाक और्रात । किर्द्यु वा शाकृत्म ইনা খব হরি।।একাংশেত খবতার কিবা পুণ্যতম। প্রকা শিষ্কা কণ প্রভু প্রভুর নিয়ম।। ভার তাঁর প্রাণাধিকা প্রধানা कामिनी। शत्रमामा शूर्वमञ्जा (तालाक वानिनी। ताई एव खीम औ न को कि रनत कातरन। छात्र निमनी इर्ध करना इन्स बरन ।। कान रह्लू काशांत्मत त्रभी हहेल । कुकारश्वारत किन कनक परिन।। ध नव विखात कति केर भराभात्र। ि देशक त्रे क्या के व्या के कि विकास के स्था শুন অতঃপর। সে বছ নিগুড় কথা কংখ ছিজ্বর।।

ष्य शांताक धारमत विवत्।।

যথা ব্রহ্মবৈবর্তে। তেলোকপঞ্চ যতুকা ধারতে যোনিতা হানঞ্চ তেতেলো মন্তলাকরে মুর্ন্যকোটি বন প্রতে ।
নিতা হানঞ্চ প্রচ্ছারং গোলোক ভেবিমোর চা। বিকোটি
যোকনারাম বিভীর্ণং মন্তলাকতং। তেলং সক্রপং সমহন্তর্ত্তু প্রাক্ষারং পরং । উদ্বিস্থিত থাকিব কুণাং পঞ্চাশংকোটি যোকনং
পোরোপ গোপীসংযুক্তং কম্পারক গণানিতং। কাম্যেক্
ভরাকবিং রাশ্মপ্রপমন্তিতং। র্কারেনাং বনাচ্ছারং বির্জা
বেন্তিতং মুনে। সভাং শৃক্ষ শৃত্যু কং সুদীপ্রমীপ্রিতং। অন্
দৃশাং ধার্মিকঃ স্বর্থে দৃশ্বং গ্রমাঞ্জ বৈক্টবৈং। যোগেন প্রত

क्रमा खंदा।

্পুরার। পরং ব্রক্ষ পরাৎপর পূর্ণ তেজোময়। যোগীগণে যোগ সভা যেরূপ ধেছার।। যে ভেলো মগুলাকার অভিশয় (भारता। काहि सूर्या नम यात श्रेशाह अजा।। जिल लख স্থান সে প্রভূর নিভা ধাম। গোলাকার এই হেতু গোলোক ভার নাম। ত্রিকোট যোজন স্থান ভতি পরিপাকটি। মৃত্তিকা নাতিক তথা রত্ন ভার মাটি।। যোজন পঞ্চ,শ কোটি বৈকৃষ্ঠ উপরে। ঈশ্বরের যোগ পুত আছে শুন্তভরে।। विवका मार्गट ननी रशारलाक विकेत। श्रमांट्ड कहित त विवक्त विवर्गा। (तार्लाटकत सर्थाः भाव कण्णात्कर्भगः। - রুক্দাবন বন সচ্ন অপুর কানন।। রোপ গোপীগণ আছে আছেরে বোপালে কামধের আছে কভ তাহার মিশালে। শত শৃক্ষ নামে তথা শোভয়ে ভূধর। শত শৃক্ষ ধরে সে পর্বত তেকে। রাসমঞ্জাতে তথা অনেক প্রকারে ভাহার শোভার দীমা নাহিক সংদারে ৷৷ এরপ গোলোকে অতি গোপনীয় স্থান।। স্বপ্নেতেও যোগীগণে দেখিতে না পান। বৈষ্ণবগণের মাত্র দৃশ্য গম্য হয়। রুক্তভক্ত হেতু রুপা করে কুপাময় ।

শ্লোক। লককোট পরিমিতৈরাশ্রমৈঃ সুমনোছরে।
রল্পেনার নির্মাণে গোপী নামার্তং সদা। শত মন্দির সংবুজমাশ্রমং সুননোহরং। রজুবিনির্মাণ লক্ষ্ মন্দির স্থলাও
আনং চ ভুরত্রঞ্জ চল্র কিয়া কুতং শুভং। গোলোক মধ্যদেশস্থমতীর সুমনোহরং। প্রকার পরিগাযুক্তং পারিজাত
বনাস্থিতং। কৌস্তভেজেন মণিনা নির্মাণ কল্যাজ্জলং।।
হিরাসার বিনির্মণ পোপান জন্তমুক্ষরং। মণীশ্রমারে
নির্মাণ কপ ট দর্পণাস্থিতং। নানাচিত্র বিচিত্র চুনরশ্রমভাঞ্জ
সংকৃত্রং। শোজ্যভার সংযুক্ত সুনীপ্তং রজুনীপ্তিরঃ। ত্র বিংগারনক্ষা চামুলো রজুনির্মিতে। ন নাচিত্র বিধিত্রাচা
ব্যন্তগীশ্বর বরং।
আসা তার্যা।

পরার। এই গে লোলোক ধান ছাতি কছুপম। গোপী দের লক্ষকোটি জাতামে জাতাল।। বিভাগার ভাগোতে মুংক্ सूर्विषिष । किवा (माञा मरनाव्त हो। निक् व्वष्टिका अकर আগ্রমে মন্দির শত শত। রত্নয় প্রকার পথি। শত্তিত 🕕 গোলোকের মধ্যবর্ত্তি প্রভুর আগ্রম। কি কব ভাহার শোতা অতি মনোরম। প্রকার পারখামুক পারিজাত বন।। শো-ভিতেছে কি সুকরে পুস্পের কানন । চতুস্কোণে সে অংশ্রম চন্দ্র কিন্তাকার। শোভিত মন্দির লক্ষ মধ্যেতে ভাহার।। অমুশ্য রতনে সুনিখিত সে দকল। কৌস্তভ মণিতে তার मकन छेड्डल ॥ कर्षा मकन भार मार् मार्ग यहिए। कि সুন্দণ রতন দপ্র সমান্ত । কিবা সে সোপান বদ্ধ দিয়া হিরা সার। ইেরিলে হরের চিক্র স্থুনীপ্ত তাহার।। মধ্যভাগে প্রধান মন্দির মনোহর। বোলভারে স্থুসংযুক্ত আশ্রম স্থন্দর হত্ময় প্রদীপেতে করে তথা আৰু। নানাবিধ মণি মুক্তা মাণিক প্রবাল ।। তার মধ্যে রমণীর রত্ন সিংহাসনে । বিচিত্র চিত্রিত নানা মণি বিভূষণে ।। তাহে বিরাজিত কুঞ্চ গোলো-কের পতি। বাক্যমনে অবোচর অপূর্কামুরভি।। বাক্য মনে ধাান বাহা ধরিতে না পায়। কি কপে দে ৰূপ আমি কৃহিব ভোমায়।। ভবে যে কিঞ্ছিৎ কৃহি শুন ভপোধন। नांत्रम कटर्न यांशे दन्द शक्षानन।।

खथ (शांलांक मार्थंत स्वापवर्वन।

লোক। নবীন নীরদশ্যাম কিশোর বয়দং শুভংশরশাধার রাজীব প্রভা মোচন লোচনং।। শর্ম পার্বণ পূর্ণেন্দু শোভা চ্ছাদন মামনং। কোটিকন্দপ্রলোবণা লীলা নিন্দিত স্থাবংকাটিচন্দ্র প্রভাগ প্রায়ুক্ত বিপ্রহং। সায়তং য়্বলীংক্ত স্প্রায়ুং প্রায়ুক্ত বিপ্রহং। সায়তং য়্বলীংক্ত স্প্রায়ুং কৌজভেন বিরাজিভং।। অলাস্থ মালভীমালা বন্মালা বিভ্রত্তিং। ক্রিভ্রত্ত ভিল্পা বিরাজিভং।। অলাস্থ মালভীমালা বন্মালা বিভ্রত্তিং। ক্রিভ্রত্ত স্কুলা বিশ্বাধার ক্রিল্বা ক্রেল্বা ক্রিল্বা ক্রিল্ব ক্রিল্বা ক্রিলা ক্রিল্বা ক্রিল্ব ক্রিল্বা ক্রিল্ব ক্রিল্বা ক্রিল্বা ক্রিল্বা ক্রিল্ব ক্রিল্বা ক্রিল্বা ক্রিল্বা ক্রিল্বা ক্রিল

मुक्काण्डि मिनार्डाक्तमान्तः। भूविडानिक मळ्य निर्मान भूगर्ग न छ।। सुरत्राख्यक भूने देखक मञ्जाबमान्द्रस्य देखा खका विकू निवानान्छ खका निविच विक्रिष्टः। छिकिथितः कक्तमाथः इन्हर्णाद्यक्षेत्रका वार्यभ्यतः स्वतिकर द्वारा चक्रस्य स्टिटः। ध्वार क्ष्मम्बल्खः वार्याद्रस्य देवस्या-ग्रामः।

অসা ভ'বা।

প্রার। নবীন নীরদ নিশিদ শোভা কলেবর। পঞ্চদশ বৎসর জিনিয়া শোভাকর।। শরৎপার্বণীর পুর্ণশলীশোভা छोको। इद्युद्ध के ब्लाक ही थए मुथ उनका।। काहि कम-পের নিশ্দি লাবণ্য স্থমর। কোটাচন্দ্র জিনিয়া এপুট বপু वतं।। कानायुक्त सूधनव वनन मधन। (मारन पूर्वी क्छ জগত মঞ্ল।। বহি সংকৃত পীংবস্ত পরিধান। চন্দনে চ্চিত্ত অঞ্জতি শোভমান।। অজাত্ত স্থিত কিবা মালতীর मोर्टन। यममाना (भारक शतन को छक मिनारन।। विकन ভক্তিমা কিবা অঙ্গ সূগঠন। দকাঙ্গে ভূষিত মণি মাণিকা রতন।। চুড়ার ময়ুবপুচছ শোভিত নির্মাল। রত্তময় মুকুটেতে আধিক উত্তল ।। রতন সুপুরে যুগ্ম চরণ রঞ্জিত। রত্বকেয়ুর ৰলয়াতে ভূক বিভূষিত।। রংন কুগুলে গগুস্থল স্থাপাতন। মুক্তাপুংক্তি নিশ্দ। করি স্থশ্দর দশন । পকু বিশ্ব বিনিশ্দিয়া क्षध्तः ई ्माचा। देवव बागाट किया क्रम प्रतादमांचा।। অপক্প ক্ষ অভি চমৎকার। সর্কাকেতে ভূষিত রত্ন জলকার।। সুস্থির ঘৌৰনা গোপী সুহাস্য বদ্ন। চারিদিকে 🗐 রুষ্ণের আছরে বেষ্টন।। বিধি বিষ্ণু শিব আর অনস্ত প্রভৃতি। सूरवस्य मनीस्यमञ् मानदासकृषि । खरनवस्यन करत করি বেক্ত্রত। সিংখাসনোপরি স্থিত গোলোকের নাথ। ভক্ত অনুগ্রহ কারী পুরুষ রতন্য ভাক্তপ্রিয় ভক্ত নাথ বিভূ সনাতন ৷৷ বাসেশ্ব স্বসিক বাধিকার কান্ত ৷ রাধাবকস্থল क्षिक करेश नाहि खरा। अहेतर्श नाइरमद करि महत्यत পুনরপি মহাদেব করেন উত্তর । यगांश অবলী হন প্রস্থ अवाद शत ।। जरक र जार में ८२५ क्रम्य श्रेषत । क्रम्य वह

ख्य शारनाक्नारथत्र विश्व ।

त्यं कः । अक्षा त्राधात्रा मर्कः भारतारक और्दत स्वरः ।
विकरां प्रमादिन निर्वाद त्रामम् १९ । त्राधिक। स्थ मास्त्रानाष्ट्र वृद्ध न स्वरः १९३०। कृषा विहादः अकृष्ण छाष्ट्र शिंदि हत ।। भारतीकः विद्यका मान्याः मृक्षातार्थः कनामार् हिन्द हत ।। भारतीकः विद्यका मान्याः मृक्षातार्थः कनामार् हिन्दा विद्या । भारतीकः भारति । वृद्धाः । इक्षां निर्दात्र छतामर भूष्णवाद महात्रा निर्वाद । वृद्धाः वृद्धाः । एवामकः ।

ভাষা ।

भशात। त्नात्मात्मण महावत्म त्रांगमत्काभरतः। अकनी
त्रांधिका गर्र श्रीहति विहरत्।। त्रांधिका विहारत्र मृत्य हरत्र
स्मान्याः। भागतिमा स्नाभमारत भत्र कि स्वाभमाः।। श्रीमधी
स्मानि सूर्य हात्रहिमा स्नाम। विहातात्म स्नाम कित्रमा
स्मानाः। त्रांधिकारत् मा विनामा श्रीम अस्न त्रांधिकात्म कित्रमा
विवस्ता कर्णता नामा। विनाम। वितसा त्र्ष्मानाः। विवसात्म भित्र। होनित्म विद्या भागति। हिन्दिन विहिंश भाग क्वांधि महहत्र।। हन्नकात्म
भागति । विसारत हित्र हेत्र हत् स्व मम। व्यव्म भूग किं।
रक्षात्म विद्या विद्या विद्या । विस्व मम। व्यव्म भूग किं।
रक्षात्म विद्या विद्या विद्या । विस्व विद्या विद्या भूग किं।

करता वित्रका गहिए श्रीत व्यानिका विशेषता । जारा क्रिक्ष ताबिकात श्रित्र गथील व्यानिता ताबिका भारम करत निर्द मन ॥ श्रीत क्रमलिनि रेशना विद्यानिक मन। क्रम क्रात क्रात नोत नगरन कथन ॥

अथ विद्राक्षात कुः अ जीमजीत शमरगरम्गा ।

শ্লোকঃ। তাশক বচনং শ্রুষা সুষ্'রেচরুরোদচ। উব'চ তাশ্চনাদেরী মান্তং দাশায়িতুৎক্ষমা।। যদি সতীপ্রত্যুবং স্থা সার্ছং প্রস্কৃত্ত। তামুচঃ পুরত স্থিতা আর্ষাঞ্জব প্রিয়াসতীং বস্তংদর্শায়িবামেনীবির্জাসংস্থিতংগ্রুং। তাসান্তরচনংশ্রুষা রখামার্ক্ সুন্দ্রী।। জগাম সার্দ্ধি গোপীতি প্রিস্থা শত কোটিভিঃ।

ভাস্যভাষা |

পরার। স্থীগণ মুথে খুলি এগেব বচন। শ্যাগত হরে
প্যারী কবেন রোদন।। তবে কতক্ষণে রাধা স্থাগণে কয়।
সভা কি দেখেছ হরি বিরক্ষা আলয়।। দেখাইতে পারিবে
কি তথা প্রাণেশরে। সভ্য যদি দেখে থাক লয়ে চল মোরে
স্থী সবে বলে গাধে দেখেছি নিশ্চত। বিরাজিত রাধাকাস্ক বিরক্ষা সহিত।। অবশ্য ভোমারে মোরা দেখাইতে পারি দেখিতে যদাপি চাহ চল জ্রাকরি।। এতেক খুনিয়া রাধা
রথ আরোহণে। স্থী সহ চলিলেন বিরক্ষা ভবনে।।
তিন সপ্ত শতকোটী স্থী সক্ষে চলে। রথের বর্ণনি শুন

व्यथं बिहाशांत तथ वन ना।

श्लोकः। तर्ज्ञ मात्र विविध् काणि मूर्गा मम श्लेख मर्स्याशमानानाक अर्छः वाग्र ठवः भवः ॥ काणि घणा मना युक्तःमद्मानाक अर्छः वाग्र ठवः भवः ॥ काणि घणा मना युक्तःमद्मानाक विकात कालि कालि विकास कालि कालि विकास कालि विकास कालि विकास कालि विकास कालि

মাধুরীনাং সুগ জ্বনাং।। কদস্থানাঞ্চ মালানাং কদস্থেক্ট বিরা জিতং। সংস্তাপলপ অনাংমালা পথে বিজ্বতিং। শ্বেতামর কোটাভি বজ্রমৃষ্টি ভিরম্বিকাং। পারিজ্ঞাত প্রস্থানাং বোটা কল্প বিলাজিতং রভুশ্যা কোটাভিক্ট নিজবজ্ঞ পরিচ্ছবৈঃ। পুল্পোপ্রান ঘুক্তাভিঃ শৃক্ষাভি রক্ষিতং।। জাস্যভাষা।

भीर्च जिल्ली। अनुद्ध त्रथ्व त्यां । काणी सूर्या नम क्षञ्चा, त्याई उजुनादेव विनिर्मात । कि कव ब्रद्धि कथा। यजब्ध আছে যথা, এ রথের না হয় সমান।। লক্ষচন্দ্র আছে যোড়া র্থেতে নাহিক ঘোড়া। বায়ু ভরে করয়ে গমন।মনোহর দীপ্ত অতি,চলেন মনের গতি, ঘোড়া তার আপনি প্রন। কোটী? পতাকায়, রথধ্বত্ব শোভা পায়, কোটা ঘণ্টা বাজে একে-बादत ।। মণিহারে বিভূপিত, কোটী ভ্রম্ভ স্থাপিত, রবের উপরে চারিধারে।। মধ্যেতে অপুর্কস্থান, রত্বাসারে সুনির্মাণ সূর্ভি মন্দির লক্ষ ভাষ্ট রভুরে সর্পণ কত, লক্ষ লক্ষ শতং, সমন্ত্রিত কিবা শোভা পার।। তার মধ্যে দ্রব্য কত, গৃহ বাব হার মত, খাদ্য দ্রব্য কত পরিপাটি। পারিজাত পুষ্পা ভার, कार्षि म्या (माछ) পाय, व्यूमया (मार्ड कार्षिर। काष्ट्री কোটা পরিমিত, বজমুষ্টি দমনিত, খেত চামরেতে শোভা वटव । मानाविभ पूष्ण मारन, विक्रुविक स ऋ तिर, कि सुमात त्रत्थव छे भट्व ।। कवृबीत दक्शाभाष्टि, मिलको मानिष्ठ खार्टि, भाषवो कन्य हैं। लाकून। नार्तिश्र वापि कति, शुक्रामाना মাহিহ, ধুনক্ষেতে করে সমাকুল।। কেটী পারিজ।ত মালে, दिक्त करत्रह जारन, शयमधा। शब क्लमान। कड कर ভার শোভা, ব্রক্ষাদির মনোলোভা, কিসুক্ষর হয়েছে উজ্জালা अ ब्रत्थत तककार्व, स्वांक्रण विद्या नाती, नाति नाति आहर व्यक्तन । क्रिक्त व्यक्ता क्ष्मिन हिन्द इत्थ ताथा बागी, छेठिदनन द्राय्युक्त मन ।

শ্রীরাধিকার বিরক্ষা ভর্নে গমন ও বিরক্ষার । নদীরূপ ইওন।

(माक्ष । ध्रेनमञ्जूणीयाथा जून नवस्य इतिथिता। जनाम महना द्विती एर्डेच मखना स्टूल। सादत नियुक्तर महन्स्रीतान- त्वालार महमारवर । लक्तां भाग भावत् छर त्वामान महावाल र ।
त्वाभार विभाग मार्थानर विक्रमां का कि कहर एम्वाइन या । कि विक्रमां का भाग महावाल है। एक शक्त प्रकृति वार्षिक ।
विभाग महावाल । एक भाग महावाल । विक्रमां का विभाग महावाल ।। एक का विकार का विकार महावाल ।। एक का विकार का विकार महावाल ।। एक का विकार का विकार । विकार का विकार । विकार का विकार । का प्रवाह (का लाइ र भाग सहित्र । विव्राह्म वार्षिक ।। एक वार्षिक वार्षिक ।। एक वार्षिक वार्षिक ।। विव्राह्म वार्षिक ।। एक वार्षिक वार्षिक ।। एक वार्षिक वार्षिक ।। एक वार्षिक वार्ष

क्रमाडाया।

পরার। হেন রথে হরিপ্রিয়া করি আবোচণ। চচ্চুর निमित्य भिन्न वित्रका खबन।। बाद्यटळ याहेटळ छथा दमस्य ছাপরাল। লক গোপ পরিবৃত 🕮 দাম রাগাল ।। হান যুক্ত মুখে তার সরোকহ সম। কুঞ্জের কিন্ধর সেই অভিপ্রিয়ত্তম ভাহারে দেখিয়া দেবী ভারক্ত লোচন। ক্রোধিত ক স্পিতা इत्त कर्दन वहन।। भून भून बद्ध विक क्ष्मां कि क्षत । पूर्व হও দুর হও ছাড় ভার বর ।। ভোমার প্রভুর ভাছে মদন্য। कामिनी। उपरिष् छ। शादत कामि कि बल ता धनी ।। ताधि-कात वाका खिन बात ना छाछिन। त्वळ इटेन्ड मश्रवनी कट्डा में का हिना ति थिकारत अर्दामा के मोहि सम पुरत । निम्मा क व्यक्तिम बार्ट कांत्र क्रांच करते।। जांका दर्शन वाधिवरहे गढ স্থীপণ। ক্রে:ধে কম্পামান তছ্মুণিত লোচন।। একরে व्यवस्था नेथी कारभट बाह्यात लक रताभ मह कर्त विषादम रहे निया। वानटक विषादम रहे नि हटन नक करें। महा क्लानारम अने देश्न त्रहेकन । अवस्थात वाकि नेम क्षमि मोद्रोप्तन । अञ्चर्यामि ज्ञानीम कानिले कार्यन ।। अप्रदेला बिम्छी गछी गरी गरत कति। सक्का रुख बरुक न श्रेर्तन

হরি।। তবেও সভর চিত বিরক্ষা সুরন্দী। মনে মনে ভাবে ধনী উপায় কি করি।। অন্তর্জান হইলেন আগনি শীপতি। নিকটে আইলা রাধা অনিকোপবতী রাধিকার সঙ্গে আমি বলে না পারিব। এখনি তাহার কাছে অপমান হইব। এতেক ভাবি। ধনী ভরেতে অন্তর। যোগেতে ছাভিল প্রাণ গলিল শরীর।। দ্রব হরে অঙ্গু তার প্রাবিত হইল। মহানদী বলে দেবী গোলক বেভিল।। বলয়া আকারে করে গোলোকে বেন্টুন। এক কোটি যোজন প্রস্তুতে নির্পণ।। নিমেতে গভীর ভার স্মান দিব্য। বিরক্ষার নদীরপ ভিজবর কয়।।

ভাগ শ্রীনতীর বির্লার গৃহ হইতে নিজালয়ে গমন।
শ্রেকঃ। রাধা রতি গৃহং গত্বান দদর্শ হরাং মুনে।বির্ল্জান্ত সরিক্রপংদৃষ্টাং গেহং জগামসা। শ্রীক্রমাবিরজা দৃষ্টা সহিজ্ঞাং প্রিয়ংসতা। উতৈ ক্ররোদ বিরজাতীরে মনো হরে।। নমান্তিকংরমাগাছ প্রেরসীনাং পরেবরে। পুরাতমঃ শাররস্তে স্বিক্রপ যভুত সতী।। দ্বাত্থেয়া চাগাছবিহায় স্ত্রনাংহত্রং। আজগানহবেবগ্রংসাক্ষা শ্রীধেবসুন্দরী।। তাঞ্চর্বাহয়র্পরির ভূমিন ভূমি প্রেরমান কং জগৎপতিঃ। চকালিক্রমং ভন্মং চুচুম্বচমু ভূমি।। কান্তে ন ত ত্রুত্বস্থ ন মার্গনিষ্ঠামি নিশ্বিতং। তথা রাধা তৎসমাত্বং ভাব ভবিশ্যামি প্রিরাংমম।
ইত্যুক্তবন্তং শ্রীকৃষ্ণ বসন্তং বিরজান্তিকে। দৃষ্টা রাধা রাম্ব্রাচ্চকথারাম স্প্রেম্বরী।।

অভাৱা ।

हरक तर्द कल कर्दन द्वानन उक्तिकश्य व विवक्ताद छोटकन दशन ।। देकाथा दह विद्रक्षा मम खोटनई खिश्नी । कल देक्ट छिठि भी छ दिया दिह आति ॥ श्रतांचन एक छव । इत्राट्ड বারি। ধরিয়া কুডন ততু আইন হে ফুম্বরী।। 🔊 হরির বাকা শুনি বিরক্ষা সুনদ্রী। জল হৈতে উঠিলেন দি । দেহ ধরি।। द्राधा मना जुनवजी इरेश एथन। न एथत निकार कानि किन भित्रभन ।। निक्रमादी विद्रकाटत (पिश्व क्षेत्र दी। (धामकाटव क्षिलम शास्तारकत পতि । हुन्न कोलिकम माम मुल्मू छ कति । एके श्रम विवक्षाति बलन छोश्वि ॥ छन छिर्छ मछ। সভ্য বলিহে ভোমায়ানিতা নিত্য তব স্থানে আসিব ৫২থায় রাধার সমান ভূমি প্রিয়সী আমার। ইংার অন্যথা কিছু নাহি ভাব আর।। এত বলি কোনে লয়ে বিরকা সুপরী। বিরজার ভীরে সুখে বসিলেন খড়ি।। ভাষা দেখি রাধিকার প্রিয়দখী যত। পুনরপি রাধিকারে করাইল জ্ঞাত। এত্রগা প্রসাদ কয় জীক্ষ চরণে। চূচ ভক্তি দেং প্রভূমিতর মননে कथ त्राधिकात निकटि । शारमाक नार्थत काश्यम छ

श्रीवर्गिक रेत मान।

শ্লেবিঃ শ্রাক্রেরির সা দেবী সুস্থাপ ক্রের মন্দিরে।
ভাষ্টবক্রং সামতঞ্চ বিষকুদ্ধ পরোমুখং। মদাশ্রুং সমাণদ্ধং
বুবং দাসোনদাস্থা। এন মান্দ্রের ক্রেণা ও গাম রাজিবা
ভিকং। প্রতস্থা রাধিকা ছারে শ্রীনাসহ নার্দ।। রাজেশ্রী
হরিং দৃতী বিকৌবাচ প্রিংপুঃ। বিরুল্গা প্রিয়নী কালা
স্ত্রণাব ভুবং।। দেহৎ তাক্রা মম ভাষ্ট্রখান্দিরা সিতাং প্রতি
হে নদাকান্ত দেবশ নদীং সংভাক্তা সিচ্ছালা। তত্তীরে
মন্দিরং ক্রন্থা তির্দ্ধ তির্দ্ধ ত্রাসহ। নদী বভুব সান্ধ্রক নদো
ভাব ভু মহ্ব। নদস্যানাদাস ক্রিক সঙ্গনোঞ্বনভাবে ।
সভাত পরমা প্রীতিঃশঙ্গনেভোকনে সুখা ভুমিশ্বান্ত ব্যোপি
ক্রেরী বিরন্ধাম ক্র্যান্ত। নৌতুশ্বা ভুমিশ্বান্ত ব্যোপি

भारत । जुली बुल्य क्योंनियो छनिया वहन । द्वाध छत्तः । द्वापात्रादत कविता भन्नत्। यथीत्रद्य छाकि वदल कारिक्ट

कान्मित्छ। मा निवा कांधाव घटत क्रिक्ट कांनि छ।।विषवुष्ठ छात (१न मुर्थ हुक तम्। अस्ट्र वक्का जात मूर्थ हाना जर ।। बहैक्टल कुट्र ताथा अभीत महिल । इसकाटन ताथा कां ख जाति देशनी है। जीना (म.त्रश्री ल दा जीकृष दर्शन । ताधिकात छाटत आणि दिला पद्रमान। ताथिका आभन काख प्रिविधा मन्त्राद्ध । क्रिकेवानी क्रम्लिबी क्रम् मुदन प्रश्या। भारती कम छट्ट माथ निरंदमन कृति । एडोमोत खिल्मो छ ग्रा बिद्रका सुन्द्रों। सम कर्म मनी बना करन तम धनी। उथानि खाशांत क रह यां अ अन्यनि ।। अरह नमीकां स क्रिय (मरवर् केशत । मनीत माछ श हेण्हा कत निवस्त ।। अक्ता (म मनी छोत मन्द्रिक तिया। थाक थाक छथा महै ननी कि नहेंग्रा मनी यनि देश उर्व श्रियुक्तभा नावी। छेहिल इहेटल नेन लाभात भुवादि।। मनीमह मदमद मक्रम मभुवित । भवदन ভाकरम भूथ স্কৃত্যতি সহিত।। এতবলি ততক্ষণে নির্ব হইল। ক্রোধে कर्मालनी जूमिन्या ना लाजिल।। नक लाभी निक्दिल আছিল एथन। काष्ट्र। जलूबर्ख स्टा तट्स मर्कायन। य ভাবেতে গোপীগণ আছয়ে তথায়। শুন সবে এক ভাবে ভিজ বর কয়।। রাধিকার সদা দ্রব্য তত্তেতে করিয়া। চারিদিকে ঘেরি সবে বুছে দাওাইয়া। আঞ্চামাত্র আনিয়া যোগায় ख उक्त । आका विना काङ्ग पूर्य ना गत्त वहन ।।

অথ প্রীমন্তীর সেবাধিকারী গোপাদিগের হর্ণন।
স্কোবঃ। কাশিচ্চী মহরন্তঃশ্চ কাশ্চিক্র মুক্রাংশ্চ রাধিকা
কাশিচন্তমূল হস্তাশ্চ কাশ্চিকালা বলী করাঃ। বাসিডোদ
করাঃ কাশ্চিৎ কাশিচ্ছ পদ্মা বলী করা। কাশ্চিৎ সিন্দুর
ইস্তাশ্চ মণি হস্তাশ্চ কাশ্চিম। রত্বাগস্কার হস্তাশ্চ কাশ্চিম
প্রমানের্থা। বেলুবীণা করাঃ কাশ্চিৎ কশ্চাদ্যন্ত্র করঃ পরা
স্কীত নিপুণঃ কাশিচ্ছ কাশ্চিমন্তন তৎপরা। ক্রীদাবন্ত
করি কাশ্চিমধৃহস্তাশ্চ কশ্চিন। মুধাপত্র করাঃ কাশিচ্দন্তির
পিঠকরাঃ পরা। বেশবন্ত করা কাশ্চিৎ কাশ্চিক্রন সোৰকা
প্রাঞ্জালি করাঃ কাশ্চিৎ কাশ্চিক্তাত পরা বরা। এবংক্তি
বিধাং মন্তিরাধিকা পুরতো মুন্যে। বহিদ্দেশিস্তা কাশ্চিক

काहि शोषुणा मना। काण्डिकात नियुक्ता वधम (वण-

ভাষ্য ভাষা !

পয়ার। কোন গোপী আছে করে ধরিয়া চামর। কারু করে সুক্ষা বস্ত্র অতি শোভাকর ।। ঝারি ভরা সুবাসিত বারী কার করে। প্রাক্ত টিও প্রসূপ্প কার ২ তপরে। কেহবা ভাষ্ণ হত্তে আছে দাঁড়াইয়া। অপুর্ব পুজ্পের মালা কেহ वा में हैं।। शून्मत्र भिन्तुत हत्त्व बाद्य कान कान कान र হস্তে মণি সাণিকারতন।। কেহ কেহ ধরিয়াছে রক্ত জলকার कथन कि बाइश इब्र अभिक्षी बाद्यात ।। वीना वासी काक करत ষষ্ট্ৰ স্থবাজনী। সঙ্গীতে নিপুণা কেহ কেহ বা নাচিনী। आका देश्ल भारत निका भी के वाचा करता । ध रहकू नत्रा थ ভার। आहर धांक करत । धननीय यस नत्य कारक कान জন। কি খেলিতে মনে ইচ্ছা হয় বা কথন।। মধুহত্তে করি তথা কেহ কেহ খাছে। সুধাপর্ণ পাত্র লয়ে কেহ রহিয়াছে मांनाविध दिण बञ्ज (कहवा महैना। कह चाटह लामशीर्ट ংতেতে করিয়া।। কেংবা দীড়ায়ে আছে পদ দেবা ভাশে। কেছ কেছ স্তাতি পাঠ করে চারি পাশে।। এই ক্রপে জক গোপী রহিরাছে কাছে। ইহা ভিন্ন অন্য কত দিকে আছে বহিন্ধারে কোটী কোটি আছে গোপ্নারী। শ্রীমতীর পুরের ইইয়া রক্ষাকারী। ষোড়শবধীয়ি গোপী সবে मत्यात्रमाः मत्यान्त त्यमश्राती माहिक छेलमा।। विक कदहे मामाना (खबना लाली नरन । एष्टिकोटन ताथा कंटक करम गर्वज्ञान।।

ভাগ এরাধার পুরে প্রবেশিতে এক্তফকে বারণ একুফের স্থানান্তরে গমন।

श्चीक है। क्ष्ममा छ दर गहर माह्यात मर्श्विष्ट । भूति छ छ द द श्वीर भारत है। भूति छ द द श्वीर भारत है। एवं के प्रति के विद्र शक्ति छ । श्वीर स्था है। हिंदी है। हिंदी श्वीर स्था है। स्थित है। दिंदी श्वीर स्था है। दिंदी है। हिंदी है। हिंदी है।

বিনরং সারং যথ সভরেণচিত্য। কাশ্চি ছাচরিতি হরে গছত তানান্তরং কাবে। রাধা কোপানয়নে গমরিষা মরা বরং। কাশ্চিচ চুরিতি পীত্যাক্ষরং গছত গৃহান্তরং। ছরৈর বিশ্বিতা তং বিনামঞ্চ বজাতি।। কাশ্চিচ চুরিতি প্রেমা রাধিকারা হরিং মুনে।। কাশ্চিম চুরিতি প্রেমা রাধিকারা হরিং মুনে।। কাশ্চিম সরং বর্চ।। মানাপানারমং তাশিচিদিত চুগানগুল পরিহাস পরং বর্চ।। মানাপানারমং তাশি মানিনাঃ কৃশকামুকঃ। কাশ্চি মে চুরিতি হরিং সাম্ভিং পুরুঙ দ্বিতা গল্মীপ মুর্থপা পানাপরং কুরু।। কাশ্চিমিববিথা মন্ত্রাধ্বঃ প্রমানোত্তঃ। ক্ষিত্রকা প্রাণিকার

कत्रा जाशा।

मीर्घामभी। ध ब्राट्गांड : तांभी तन, यथा हिल यडकमं, রাধা বাকা করিতে পালন। মাইতে রাধার ঘার, মানা देकल महेरदा, खनि कुछ ब्रहिला ज्थेम ॥ स्वाद ब्रह्म श्राप-পতি, তাহা দেখি রাধাসতী, পুনরপি বলেন বচন! हেরুঞ विवकाकास, आभाव खाँचिव खड, माँखाइंड मा कवह शमन ece गर्थि मनीकरन, भषवधी रह भूगीरनः माध्यि तो क्षित महत्ति। निवादक अधुर्खिटक, कि कार्या आशाव घरतः आमि নহি বির্জাসুক্রি।। এত যদি রাধা কয়, তবেত সে স্থি চয়, কুষ্ণে করে করিয়া বিনয়। হিত কথা নিতি গার, সময় উচিত আর, যাহাতে ক্রেধের সাম্য হয়।। কেহ বলে ওঁহে हति, कारणक छालका कति, ज्ञानाषुत कत्र शमन। यूहित्व রাধার মান, আমি গিলা তব স্থান, ভাকিয়া আনিব ততক্ষ क्रिवल श्री कि कवि, क्रमकान गाइ इति। शृश्वास्त क्रिट्ह अश्वन । (एक्साइ वाधिका श्वादि, कामा वित्न एक मुकाबी, कादमु जार्र बांनाच रहन । ध्याम करह दकान सन, अन याइ जुन्मावनः मानास व्यवधि न छेवत्। (कड् श्रांतहाटन कम्, अन दह काबूक द्वारा, एक्डिबार्ट श्रोत छत्र कर ।। दकर वी बना द्रश्र कानि, करह पन शामिश, मानिनीत निकरिट यां व्यक्तिक केव कामि, यं बारवटक शांत खुनि, मान क्रम कारका प्रेंग । (इसकारन कार्ति श्रम) श्रिक्त मेरि कार्त

मांबदनत करत निवातन। महत्व काउलांक, मनानाम मेष्ट्र-महि, क्वि भ जीन मंशना वेक्रम्।। भूनिया मधित वानि, म्हि कर्त्व प्रक्रमानि, भृशेखदन करतन नमन। विक्रवंत कर्ड्स् भूनह, उत्तरस्थ मकरण स्थान, श्रीनारम लहेश्री विवतन।।

अथ जीकृत्कात शृशास्त्रत शमात्म जीमात्मत त्कांध स

শ্রীণানের প্রতি জীমতীর অভিশাপ।

. 🔆 শ্লোকঃ। জোপীভিব ঘা মামেচ জগত বারণ করিংগ। मनाक त्काल क्रीमामा इटब्रो (भश्यवर भट्छ।। (कालप्रवाह विमामा श्रां विकार शरुरमध्यीर। अक्लभट्य कर्ग इन्छेर बक्क-शक्क (माठन । कथः वर्गात गाउत्थः करूवांकाः मनीचंदः। का जातामः शूर्वकामः करतानि छः विषय्निः।। साबीः व्यवत्रोडक निर्दाधःकगारमवत्र । कगा भागकिमारेनव गर्कवा श्रीषद्भिश्वार ॥ क्रशंशलीम ाक् क्रुक्कर्योर मञ्ज्ञम छिष्रार । दकाछिमा दकाछिटमा (सवीखः नाकावि निक् नः।। देवकृष्टि 🔊 হরেরস্য চরণায়ুক মার্জন। করোভি কেশ্রে শহঃশ্রহ बनः ভ कि श्रुक्तकः ॥ मञ्जन जीह खबरेनः कर्नशिषुष सुन्मदेवः ॥ मुड्डर खोल्बिश। ख्कान कानर्शन क्यीच्दर। किथाद्वीय প্রিভাঙ্গা ভরস্কুত্রং হরে। জ্বীদাত্মে। বচনং শ্রুড়া কেবলং কটু মুলনং।। সদাশ্চকোপদ্য অজ্ञ থারস মনাদহ। রাসেশানী বহির্গাতা ভর্বাচহ নির্ভুৱত। স্কুবদোটি মৃক্তোকেশী अक् छेक् लाइन ॥ तार्मावाइटक द्वीका वामस पूर् मृत् नप्पछ किन्नत्। प्रश्न कानानि मसाथ न कानानि प्रभीश्रत् चनिषद्राञ्चत अकृत्यम नशामाकः खेजाधमना कानानि खनकर (खानि नमा निमर्ति माड्रा । यथानूतामा जिममा -बिकार मिनिन मखन्दा ज्या निन्मिन मार बूक् ज्या ज्या-सूरता वर्ते। त्यां ११ वर्षा स्तीरत्यानिः त्या त्या कर वरिक्त मशाना भारतामुख्य कथा एवं कि कुभी खंद्रश्री। वारमधाती अभि-कु। का मूचाल विवहान है। बहुनाः त्नेवा मालन्द्राम्देवद्रक मुडि जिहे ।।

ত্যা ভাষা।

প্রার । বারিভ হইর। ক্ষ গোপীর বারণে। গৃহান্তরে গমন কবেন ভভক্ষণ।। इस्प्रिश्न शम्ब ভবে জীদাম क्रिय শ্রীমতীর প্রতি কিছু কৃতিতে লাগিল।। ক্রেণধেতে কি.লারী हिल आंद्रकर्ताहमी । जीनाम आंद्रकहरक त्कार्थकरस्वांनी क्निद्धा अन्नी कृषि आशांश अञ्चदत । करू वाका कर किहू না ভাবে অম্বরে ।। আআরোম পূর্ণকাম যেই ভগবান। বিভ্ ষ্বনা কর ভূমি এ কে। ন বিধান। জাননা কাহারপাদপ্রসূত্র कति । इहेशांदर जालनि क्षा जिल्ल केनदी ।। एमरीट खेनहा षुमि शुका कति काता ना कानिया निक्रमत्न कत कहन्नाता। व्यवनीनाकः म क्रम हारि क्षचं क्रट । उर ममी (काष्ठी (काष्ठी পারেন স্থিতে।। বৈকুপ্তে বিষ্ণুরপ প্রভু বে আপুনি। कमना कतरह रमवा निवमत्रक्रमी।। किकाद राद्या राधी श्रम এক মন। কেশেতে মার্জনা করে যুগল চরণ। কর্ণ পীযুষের खदर मिर्यो मदयशी। ভক্তি করি যেই জনে সদা করে স্তুদ্ধি এংখন প্রভুবিভূমি কহ কটুত্রাজাননা যে কুষ্ণ চল্ল তোমার ঈথর। রোধ তাজি শীঘ্র উঠ শুনহ বচন। তাকিভাবে ভঙ্গ পিয়া এ-রি চরণ।। এ ভাতমর এবপ শুনিরা বটুবাণী। শুনিরা ক্রোধিতা হৈল রাধা ঠাকুরাণী॥বাহিরে আইল। দেবী कारधरं अमनि। क्रूबरमाष्टि म् क्रिक्मो चावक लोहनी। वीगदमदाकदर दमवी निर्मुत छेष्ठवाखदत ज्ञाना मराम्हनम्भेडे किन्नत ।। जुमि कि क्वल बान छामात निश्रत । जामि किन्न नाहि कानि एक तिह अकटत ।। (ए। मात्र क्रिये क्रिये कामारमत नय । भेरेकि जापन मान कात्म किन्छ । अद खजाधन ভূমি आगेन शीन अভि। कननो निक्तिश कत कनरकत छाउि।। अञ्चरत्रत्रा निष्मा एवन कर्य प्रविद्यादत् । (महेमक निष्मा कृषि कत्र आमात् ॥ आसूती प्रकार তात अत् गुएमां । असूत इहेमा शिवा क्या रस्य हो। त्रानाक इहेट छूमि कवह शमन ছামি তোরে অভিশাপ দিলাম এখন।। কে তোরে রাখিতে भारत करत इंद्रामह । कवार्थ कामात वाका का निरु निम्हें । अवर्गल तारमञ्जी श्रट् अत्यभिना। कोनजादन शुमत्रि

भारत करिया। निकटिएक जाहित गएक मधीन। विक कट्ट करत जाता हो मन नामन।।

ष्य जीमरीत श्राष्ट्र जीगारमत किनान।

শ্লোকঃ। শ্রুভাচ বচনং ত্যা। কোপেন ক্রুবিতাধরঃ
স্পাপতাঞ্চ শ্রীদামা ব্রুঘানিং ব্রুদ্রাস। মন্ত্রাইব
কোপত্তে তন্মত্তং মানুষীভূবিঃ।। ভবিষাদিন দন্দের মরা নপ্ত
দ্বাধিকে।। মূঢ়ারারণ পাত্রং দ্বং বল্যান্তি জগতি তলে।
রারণঃশ্রীহরের শোবৈশ্যা রুদ্যাবনেবনেঃ।। গোকুলে প্রাপ্য
দ্বংক্ষ বিহাত্যরর কাননে। ভবিতাতে বর্ষশহং বিচেচ্নে।
হরিনা সহ।! পুনঃ প্রাপা তমীশঞ্চ গোলোকো মার্গনিঘাদি
তামি ভূক্তোচ্যাদ্বাচ সজ্গমেহরেঃ পুরঃ। গাল্বাননাম শ্রীকৃষ্ণ
শাপাখ্যানমুবার্চ। আনুপ্রবাত্ত তংসর্বাং কারাদ্রচ ভূশং
ব্রুদ্রা। উবাচ বং ক্রুদন্তঞ্জ গছেইং ধরণীতলং। নজে তাতে
ক্রিভুবনো হামুরেক্রা ভবিষাদি।। কালে শক্ষর শুলেন দেহং
তাজামুনান্তিকং। আর্গমিষাসিপঞ্চাশং যুগাভিত মুনানিষা
শ্রীকৃষ্ণসা বচঃপ্রান্থাতমুবাচ। ম্যানিতা ওম্ভক্তিবহিতং মঞ্চি
ক্রাচিম কর্ষ্যাস।। ইত্যুক্তা শ্রীহ্বিং নত্ন জ্গীমস শ্রুমদ্বিং। এব শন্তাচ্ন্ত্র বভূব তুলনী প্রিঃ।

अगुडाया।

পয়ার। শুনিয়া রাধার বাণী জীদাম কুপিল। ক্রোধন্তরে প্রশ্ন ধর কাঁপিতে লাগিল।। মহাক্রোধে জীমতীরে অভিশাপ করে। ব্রগ্রেমানী প্রাপ্ত তুমি হবে ব্রজপুরে।। মাল্লগী সমান কোপ ভোমার দেহেতে। মালুনী হইবে তুমি আমার শাপেতে।। একথার কদাচিত নাহিক সংশ্যাত্তরশ্য অস্থিকে হবে মালুনী নিশ্চয়।। মুদুমতি বৈশ্য জাতি আয়ান নামেতে জীকুকের অংশজাত হইবে ব্রহেতে।। পুপ রূপে বাতে সেই হবে বৃক্ষাবনে। ভোমাকে জায়ান পড়ী বলিবে পুর্বনে।। জায়ানের রাণী রূপে সেন্থানে বৃহিনে। পুনর্বাপ রুক্ষাবনে প্রায়ানের রাণী রূপে সেন্থানে বৃহিনে। পুনর্বাপ রুক্ষাবনে প্রায়ান প্রায়ানিক প্রায়ানিক প্রায়ানিক করিবে বিহার। ভুরু জরে বিচ্ছেন্ প্রতিবে জারবার । শতর্কাবনি কুক্ষ যিচ্ছেদে হিয়া। গোপোকে জায়িবে বৃহত্ত জীকুকে পাইয়া।।এতবলি

व्यवस्थित ताथां व हत्रद्र । कृटकृत निकटि लाला विकारिकम्पन क्रीनाम खोकुक शरम खनाम कृतिशा। वक ममानात करह कान्तिया कान्तिया। श्रवांभव भागांमानि गकन कहिल। वाधिकार मह जीत ए बल इहेन । कहिया मकन कथा करदेश दोषन । छुट्ट हरक द्य घन वादि विदिष्ण ॥ खीलारमद द्योपन দেশিয়া নারায়ণ। আশাসিशা কন তারে মধুর বচন।। খেদ नाहि क्र यार धरनी छेलता अपरत्त बाका स्टब अमिदन সত্তর ।। ত্রিভুবনে না পারিবে কিনিতে ,ভোমারে । অজয় হইয়া মুখ ভুঞ্জিবে সংদারে ॥ পঞ্চশত যুগাতিতে উদয় কা-ला । एडिंदर ता त्मर छव मृत्मरक मिरवर ।। कारित्व का गांव कारह कामीरवं कामांत यांश्कृषि कृमखल व्य माहि আৰু ।। ক্লাঞ্চর মূখেতে শুনি এতেক বচন। ক্লাঞ্জলি হয়ে किছू करत निरवनन।। जासूतीक (१८६ जामि तव वहनिन। ना कति । तात अनु उद जिल्होन ॥ अउ रान क्रक्शित क्तिया क्षराम । जाक्षरमत वाहित्त्व तात्नम क्षीमाम ॥ तिहे म अञ्चलक ओमाम सम्बद्धा मध्यपूष नात्म खर जूननीत পভি।। दिक कटर क्षाच्या करूनांगांगत्। ভक्तान त्रमा হেতু সদত কাভর ।।

অথ জাদামের শাপে ভীতা হইয়া জামতির জীক্তকের নিকটে গমন ও জীরাখাক্তকের অবতার।

श्लोकः। १८७ खीमामिनारमयो क्यारम्य सिंधः छोठ खीमाममाशादमा खोक्रकः मस्ताहकः।। प्रशादिमा कथमदः धरि खामिन्नकीवितः। कर्म मस्मिक्शिकामाथ प्रशादिमा एमाक्रक्यिकाः क्रस्का विध्यामास श्लिमो । प्रशामार्कः श्रीमग्रामि द्वार्थदः धर्मीक्षः।। स्राधा क्याम धर्मः नदारः इति। मह । स्वास गृट क्यानकरिताकृत्वस्य । जट्या-एका क्यामाथ खाक्याममहीकनः। विकश्रकशामिः र्गाण विधित्रम्य । खोक्या सार्थिक क्रकः क्रियाम महीक्तः क्याम्यकारः। खोक्या सार्थिक क्रकः क्रियाम महीक्तः

प्रकामश्यमी ।

জ হাভাষা।

लेखीत । अनिटमंत्र शमदनदे अपनी उपन । विषय भौदेशत राष्ट्र वियोगित असे।। जाविशा कि दशा (मरोदेकिशा नद्यत । बोक्स निकटियान गडा अखा। कत्मत्व भारता कथा तक्त करिया। सामन करतन (मदी म्माटकटक स्माविद्या।। कार्ट्र कटटन तांचा कृत्यकी इंटर्ना मास्यो १ है यो यान कार्याव चूर्वान । देशां विमा कि कारशरहरे विवि श्रवान । करनक विट्रष्ट्र माथ यूत्र भठ छ। म। এ । वित्र क्यनिमी कदत्र द्रा-मन्। खोइक करका उरव आधाम वहना। (भाकाउता (मधि क्रम श्रीमरी ताबादत । मधुत वहत्म श्राष्ट्र वृद्धान उँ हादत ॥ विश्व्यात कर्य क्षित्र मा ग्र कालत। उत्तर यात आधि कार्मी जिल्हा। क्षीकृष्क कर्रम यपि अर्छक वर्षा मामिन्छ रिक्न उरव खीनकीत मन।। खीक्रक गहिए ताथा गानिक इ मत्म । इहेर्दन अवडात अर्ित इन्यावरन ॥ वृष्णं यू घरत्र জ্মিলা ক্মলিনী। জীলামের শাপ হেছু আয়ান গৃহিনী।। রাধা হেছ কুফচন্দ্র হন জবতার। গোপ বেশে রাধানহ ক. রেন বিহার।। জ্বিকস্ত বিধাতার প্রার্থনা আছিল। ভারাব-छोत्र (इक् छोहाड २हेन ॥ ध नकन कर्या करम नमाभन कर्ति भूमः (बार्लाटकर् याम (बार्लाटकंत श्रि।।

ख्य इस्तारन बिशामा कू:स्वत विशत है नमा बिहरण्टक क्रिंग नहें। जा कीत वरन रश होत्रन करतेन।

भाषात । अके जिन तृशायान ने ने महाभव । कार्टिक लहेंग्रा मृत्य क्रिक एनत्। वृत्तावन छे भवत स्थित कानत्न र्ताधन ठाउँ। कवि चानिष्ठ मे न। उन्छद्य महत्रावद्य तिश्री भिक्तिमान । क्रे हेशा (न। वृह्दनद्व ख कुल्ल भाना।वालद्व জন্পান করাইল পরে। ভাপনি করিয়া পান স্বত্ত অন্তরে व ग्रेलन बहेबुल जिलाम को तम । इंग्लिटल एमर्थ उथी जा-ৰ্ভৰ্য ঘটনৰ মাগ্ৰবী-মাতুৰ কুণ বঁৰুয়া কোলেছে। পাতিশা বিষম মারা দেবিভেঃ। আচ্য্নিতে আকাশেতে মেঘে। উন্ম वाश्वावाङ बर्कावाङ स्थात अप इसाजून जून करन स्थय कन्द्र शक्तन । कुलाकात वाति धाता दश्च वित्रवा । इक्तान किल्लिक रहेन कराक: छ। वड़ वड़ वृक्ष माना **डग्न र**ात পড़ে ।। दर्शियो मरमात्र मरन वड़ छत्र भाता कि कतिव कि श्रेरव छारवन छेलाञ्च। नन्त दरन धी नमस्य स्तावर्ग छा जिल्ला। श्रहरू याहैव जामि कमन करिया।। शृद्ध यनि माहि याहै वालाक कि इहेटन । फेला मक्कि देशन क्यान मुहिदन ।। धरेकारी নক্ষ ঘোষ ভাবিরা আকুল। কোন মতে কোন দিকে নাহি भाग कृत। दश्मकात कृष्णात्म मात्रा वाक्षित। मिष्क छद्य-শ্ব হরে ছবেতে ভাদিন।। ছইহাতে জড়ায়ে ধরি পিতার গ্রেলতে মহাভয়ে নরহরি লাগিল কাপিভোতাহা দেখিনন্দ-द्याय छाट्यन कलात । बाह्य कट्ड एमस्ट्र ख्वार्थ क्षात्र ।। রোকুলেতে আছিলেন রাধা ঠাকুরাণী। অকসাৎ হৈল कांत्र काकृत शहानी।। मुक्त कर्खनीय द्रांश कांत्रिम कांद्रन। हुन्छन मिन्द्र किन एककन ।। এटएक छ।विद्या छटन भूकी क्र करि। तार्नाक एकरण क्रिया राष्ट्रिक श्रीव ।। रश्ह्यारन चारहर सम दर्शाला किश्री । दिस तर हितान किश्री इपादी ।।

কাথ ভাওীর বনে জীমতীর জাধ্যম। শুয়ার ভ্রন্তরে হরির নিকটে হরিজিয়া। উত্তরিশ ধীরে বিবেশমন পাইয়া। নিজেনে ভাষাবে হেরে নাম মহাশ্য।

व्यक्तिश मिनिश देश शहम विकाश । अवटीत करल मर्गानक प्यारना करत । बी भरमत एउटक कांग्रिक्स एक हरता केंच्री कानिया औरत जीनम् उथमाञ्चित्र डार्गाम्या करत निर्व-मन । शर्तमूनि मुर्थ आमि जानियां हित । कमना अधिक कृषि थिया बिर्दित ।। धरे रा रानक सम विक् कावडात । প্রম নিঞ্গাচাত অচিত্তা আকার।।লানিয়া সকল তত্ত্ব নাহি थांदक प्राप्त । आमि व मानव विक् माना विद्याहित। এত বলি ব্রজরাত করে বহু জ্ঞতি। সুনিয়া ভাগার বাণী ব-लिन क्रिम्डी ।। अने अनुशावधारन अर्थ महामग्र। रमय स्मन बहै कथा क्षकार्भ मा इत्रां। ब्रह्म अलक्ष्य ब ख्र मखरन। পोहै ल मर्भन जूनि वह भूगाकला। विकत न। एत्र कडू मर्भन আনার। অভএব বর মাগ বে বাঞ্চা ভোমার। রাধার त्रकृत छनि बिज्ञ पिछ करा महा कवि वर यकि किरवरना निम्छ्य ব্দুনা কোন বরে মম নাহি প্ররোজন। ভোমাদের উভয়ের প্रदेश तटह मन ।। উভा চরণে ভক্তি দৃঢ় করি অংশ । উভরের बिक छिट एन सम वाना। हेश जिल्ल बना किছू वर्त नाहि कारे। अभिना ज्यास वानी बनिटनम बारे।। बारे बटन बन कांत्रि क्लिंग अकत्। इहेटव यदव पृष्ट खेंखा द्वामात मनदन পরেতে মানবী দেহ তালিবে যখন। অনায়াসে গোলো-क्टिंड क्रिया अम्म ।। विक कटश द्रारमध्ये नशा क्षेका निश्च। পুরাও শিশুর আশা অপাঞ্চে হেরিয়া।।

व्यथ बिमटी बिक्टक गहेता शमन द ताममक नर्मन।

बार्श कर क्रांत गांडार गांडार । कामानिक देश अन क्रक भवनिर्ण ।। तक्षिम भरत गढ़ी निष्ण भिंछ भारे हा जानिकन हरत यम योच क्ष्मादिए ।। भूनकिल गर्स क्षेत्र कृत्र का निकटन (पांत्नाटकत दाममक रहेल भावत्त्र।। भारत कतिया दास (मर्ब काठिश्व । ब्रह्मत दीनमक नम्म तथ छनिक ।। कि कर डाइन्द्र त्यांका श्रक्षा सूथाना। यह मेंड बंच कनरवाट गर्म-कार्गा नानाविध विভूषिण वट्य विभूषण। উভিছে পতाका ভাহে অতি सुर्गासन ॥ यान गुका या विकासि साना यरव थर्द्ध। उष्ट्रमञ्ज नर्भरनरक किया मीख कर्द्ध ।। मखरमाना स्रवि धान मरक विवाक्ति । कृष्णुम आकात मनिननरगठ मिछ मद्भव वार्ट्र अंट्रियामान मद्रवाहत। श्रम्कुष्टि अंग्रिया क्कारत जमता । व नकल प्रतिश्वा भारती रुतत देविक । मटकत ভিতরে বিয়া প্রবেশে ছবিত।। তথায় আছয়ে থাদাত্রব্য সমূ मत्र। नानाविध পরিপূর্ণ নান। স্থানে রয়।। রয় কুডে স্ক निक स्निम्न कन । स्थामभूर्व दिव एथ स्न वन । वासून প্রস্তুত আছে কপুর বাসিত। পরিপাটি বাটি সুগন্ধ পু-निछ। प्रथियो दार्शत मत्न क्षेत्रम क्ष्योत्र। विक कटर जनरस अनर मगानात ।

ख्य क्रिमजी क्रिक्ट्यन नवट्योपन क्रम मन्द्रन कट्यन।

भवात्र। मरक्षत्र ज्ञिष्टत भारो द्रात्त ज्यन। श्रुष्णभवाभरत्र विज भूकव तक्ष्म। नग्नान ज्ञाहन सुर्थ नर्स सुध
लग्न। कि कव रन बाभ काश्रुका नाहि इस।। किरमांत वज्ञन
किवा क्ष्म मरनाहत। ज्ञिज्ञा केमित भाग करलवत।।
काणि कम्मर्लित नम नावना स्वाद । एमरन ज्ञिष्ण ज्ञाक ज्ञिज्ञा भाजा कवा। भोजवज्ञ भित्रधान क्ष्मान नम्भन । स्वाधुत होक्क वृक्ष स्थारत वक्षन। नवीन स्थायन क्ष्म भूक्ष ज्ञानित्त कार्याटल बाकक नाहे दिश्य जमहात्र।। नहस्त माजि स्वाम रन त्रांश श्रेक्शी। ज्यांनि विद्यावानन कवित्य क्ष जानदात राश्व जीकृष्य बर्धानकथन।

लघू-दिल-१ ८: तिश्रो सुन्ततः, क्षण मानास्त, क्षण कश क्युलाम । छ हुत हरिका, २३३। स्थारिक, लालमा मानग्रहम अक्षा कृष्य मात्र अकृष्य ठात्र निम्द शात्र वाथि। भूषे हला सूथा, शिरत मार्थ कृथा, हकू म हरकांत शाथि।। त्राथ ते नजन, मूरांगा वनन, श्रापुल कमल स्थाय। ८०ति नाता-वदा करून एथन, मधुत दहरन जाता। जूमि नम श्रिता. कहि बिट्निवित', व्यानाधिका त्थमाधिनी। चामिस त्यमन, कूम ৪ তেমন, এক আ অভেদ জানি। नर्क क्ली आर्थि, नर्क निशा कृषिः अ तथा क्याथा नग्ना लालादक कार्रिनी, ब রাজ নিজনী, মনেতে ভোমার হয়।। সুরগণ মাবে, ভব श्चिम काटक, की कांत्र करतिक याहा। कांक्रि बूहकन, देहरम बिलम अर्थिक कतिव छाशा। श्वमिश्रा अ वं नी, ताना ठे कू-बानी, भूनक पूर्विङ स्व । क्रूड क्ष्मि : इत्य, बिक्रक हार्विष्य, सर्वत वहरम क्रम ।। । १११८ मांक कथन, जांकरश स्वतन, विस्ततन किन देव। के हिला (य कारण) स्मात नर्क करण, (जामात দেশের বর্।। সম্পৃতি নাথ (*) তোমার বির**ে** , পতিছে कामात मन। मित्र वक्ष्यल, चिश्रिम मखला, त्र खद জীচরণ।। শুনিয়া বচন, হাহিয়। তখন, কংহন পুরুষে তম। হিত তথ্য নার, আতি আতি আরু, ব্যবহার যে নিয়ম।। এ ভাবে বুঝিলে, विव'ह ना इहेटल, विहात छिडि न मा। अह रहकू हाँत, अदनटक विष्ठाति, किटमातीत श्राति क्या । क्रिके ভাত্ৰকৰ, কাল শুভকৰ, ইইয়াছে আগমন। তৰ বংগ্ৰা পুৰ कतित ८१ जुन , विश्वत कट्ट भून।।

क्य किरकात है क्टांट उकात कार्यमा

लंघ जिलाने। क्रांत्रक वेष्ट्रांत, विभाजा उथात, छेलानेड देश्य थाति। कुछन् माना, करन देख छक्ता, हकुर्यूर्य मुष्-राति। वार्षिया प्रदाय, जीकृत्यवय शांध, विशाहा अनाम कृति को तदमान खिल्कित मा स्माज मुन्द्रभामिता इति ॥ वांचाव कारहरण, शरिश इतिरण, अन्य भारत्व शाहाकतित्रा छक्नाड

चार श्रीताधाकुटकात विवाद।

প्रांत । दिन विधिमा उटन विश्वां का उदन । कुम किको क-विशे ज्ञानिम इंडानन।। आर्या मध्कात कति कवित्तन (श्रीम (मड़े मड विशंदिश्ट विश्कि नियम । एत्व पूक्त नेवा देवेद्छ উঠি নারারণ। অগ্নির নিকটে আসি বসি ওভক্ষ।। বি ধর দশিত বিধি আচর্ণ করি। ক্রিনেন হোম কর্ম সমার্পন হবি।। সে বিবাহে বিধাতা যে লন সর্বা ভার। কন্যাকর্ত্তা বর कर्डा (भोदिश्य) बात ।। डिन कर्म्य ममाधा करान इश्मानन । कनोकिर्द। करण कना चरिनन उर्यन ।। उन्हों व चरिनर उरद चांत्रिया 🗐 गरी। 🗬 कृत्कत हत्र (एंट कर्त्रन श्रव्हि।) त्रश्च-বার প্রদক্ষিণ করি তদমরে। পুররপি প্রশাম করিখা ক্রফ करता वाननारत कर्याननी रेकनी गम्नाना वाननि काशन मारन सूकन विधान।। एटन विधि नत्र कना। किंग्रिय क्र जन विद्वत क्रमान क्रमा क्रमा क्रमा পাণি এহৰ করান। বেদেকতে দপ্ত মন্ত্র বরুরে পড়ান।। 'छम्खद कमान रख वर कर्म थुरत्र। वर रख कमा अर्छदर भिटल त्रांशिदत्त ।। जिनमञ्ज कमादिक পड़ान क्षेत्रां मिल । खोत शद्द माना वन्दनंत्र अञ्चम् ।। श्रीतिकां के पूर्णमाना लहें।। ज्या क्या शास्त्र का अध्य कर्दन अर्थ न ।। भूनद भावत शटक माना गटनाक्त्र । दक्षशाहिना कना। शटन दक्ष्मन निह्नम क्रारित बरेबर बरिय ब्रांबि भार बात । वह शक् क्रजाक्षान क्यार्स क्यार्त । चुनालक श्रुष्ट श्रुष्ट श्रुष्ट करा प्रायान्ति

करतम बच्चा विश्विष विश्वाम । जिला रमन कना करव करत ममार्लन । विधाना तांधीरक करव कृत्यक्षेत्र खर्न । छान्छ छ दि श्रमांभवि क्दान खन्न। देनकादन प्रति याकि यह मुत्राना। जारमक प्रमृत्ति जात ग्रहण श्रष्ट्रि । बाग कर्रेत অনিনার আনন্দিত মতি।। পারিকাত পুস্প রৃষ্টি করে পুর पात । नव्यत्विटक ती क शांत्र मान्द्रत व्यथनव ।। अञ्चादमण्ड विक् खिं कतिशा विश्वत । प्रक्रिया याद्यत बाधा कृदक्त रमकित ।। विधि बरने धनकछि किছू नाहि होई। উक्रदात्रभटन रयन पृष्ठ अक्टि शाहै।। (कामार्टनत छेडरत्र त्रु तृश्न प्रदेश)। **जान्ता २ हे** शा कि शा क मम मत्न ।। छनिशा विधित वानी জীহুরি তথ্য। তথান্ত বলিয়া পরে বলেন বচন। মনীর চর-भाषा मुक्त जक्ति। कहना भारेत बद खन श्रकां भति।। टब करन्त्र जाहेला छोड़ा करत नमाधान। अक्तर्ग अञ्चादन कृति कर्ड श्राम ।। श्रीन विधि वाधाक्रक्षण ए व्यन्मितः। स्वादन शक्त करतम स्त्रविष्ठ स्ट्रेरहा। वाजिकम ताथाकृतः विवाद क्येन खांक जोरवे तिहे कन कत्र द्वा धावन ।। शुनर्कात जरव जादत जानिएक ना इंग्रा जिन्न करह भूनं कर्त्र निश्वत जानात्र ॥

अस विवाहाट छ क्रीनाभाक्तरकत विदात।

श्वात । विश्वां विवां विद्या करिया श्वाम । जामत्म एउ जीमधीत महागा वस्त । वक् क्रिक मृथ १६ ति वात वात । लक्किं इहें । यूप कार्क जानमात । कामवार श्रीकिं हैं। श्रूमकिं करित । जिल्लार श्रूप्त जीम जिल्ला भारत । श्रीकिं श्रीरत भगा कार्क करिता अमन । क्ष्मुमान क्ष्म आक करित त्रभा । श्रुण्यक श्रूप्त निता क्रूप्त क्ष्मार । श्री मधुभून भाव (प्रम क्षूण्य जीमपुर्वन ।। ज्या निता स्वां श्रीक क्ष्मुमान करित श्रुष्ट जीमपुर्वन ।। ज्या त्रापा स्वां श्रीक क्ष्मुमान करित श्रुष्ट जीमपुर्वन ।। ज्या त्रापा स्वां श्रीक क्ष्मुमान करित श्रीक श्रीक जाम जिल्ला हुव । जोश क्ष्मुमान करित श्रीक श्रीक जाम । जीम क्षा श्रीक जिल्ला हुव । जोश क्ष्मुमान करित श्रीक श्रीक जाम । जीम क्षा श्रीक जिल्ला हुव । जोश क्ष्मुमान करित । क्ष्मुस्त स्वां त्रापा जाम जिल्ला हुव । जोश वर विश्व कतिना कूजूर्गा। विक कर्र अधिक्ष प्रति। युग्ता । मक्रत कामात मन मधु शान हता।

ख्य विश्वतारस्य श्रीकृत्यत्र वालक्षण थाउन अ श्रीमधी । श्रीकृष्णदक कारल लहेशा यरमा मात्र निकटि एन ।

প্রার। বিহারাস্থে যুবা দেহ ত্যাজি ততক্ষণ। পুনরপি मिष्काणी देश्या नातायन।। ताधिका त्रत्थेन नन्ति नित्यन य ৰূপ। ক্ৰন্ধিভ কুধিভ রীভ বালক সে কপ।। ভবেভ শ্রীমভী तिहे भिष् कृत्यः नर्त्त । हिन्तिन क्रांडिन निम्म क्रांनिहा। क्रायाद्व छेल्नी उनत्कत खरन। यत्मानात क्रांटन मिन् करंत्रन अर्भ ।।। यथन बिक्र त्यः (मन यरमानात्र कारने। बीमजी वटलन किছू समध्व त्वादन ।। अनत्या यत्याना छव यामी মহাশয়। গোষ্ঠেতে দিলেন মোরে তেংমার তন্য়। আনিতে পথেতে বড় ছঃখ পাইয়াছি। কহিতে নাপারি ভাহা যেৰূপে এনেছি।। স্বাশিশু ভারি বড় কোমার নন্দন। স্কুণাতে कार्ड इत्य करते कांक नन।। रमघोष्ट्र व्याद श्रथ शिहनि इष्टिटा आमि किटा भादि निख वहिता आमिटा। अहे দেখ র্ষ্টিতে বসন^{*} ভজে গেছে। না পারি কহিতে পথে य इश्य म्दत्र हा। बहै लह भिन्न खन मित्रा मास्य करा। देश त्शा बरणामा जानि याहेत नच्छत । शृंबरेहर् कानियाहि जानि बङ्कन। शुट्ड गाँड देवन नहीं महेश सप्तन । এত विन कमिनी निक शृह्द तिना। यत्माना धाहेता कृत्य (कारनाट नहेना।। कृति कट्ट नम्बानी छन निमृत्य । शिर्देत म द्वत েকিল ব্যালন মুখে।

मोध-जिल्मो। वान कम मुनिश्रांत, धमवी जुलांवरन, वाश्राह्म कहें मिनन। छेंडाइटि श्रियोदाल, निष्ण कीला मबद्धान, कड़ कब डाइाव कथन।। किश्रिष्ट ठाव, प्राव्यांट वाहि गाव, धाव कि छिन्छ दोष्ट्रा कवा। मूनि मुनिश्रांत कथा, धा के हिन मश्रांत बख्त । कि कि मिन्न क्रियांत कथा, धा के हिन मश्रांत बख्त । कि कि मिन्न क्रियांत क्रियांत क्रियांत क्रियांत क्रियांत क्रियांत क्रियांत क्रियांत क्रियांत क्रियां क्रियांत क्रियांत्र क्रियांत क्रियांत

हर्या । यात कमा अधावको, इत्यहिन वाश्रमाह, क्रक करु मात्रा (न्याहेन। कर कर छ प्राथम, कि रहेन त्म वन, शूनः किया छ इ. इ. क्यूने।।

व्यथ मुक्तावरनत विवदम् ह शिक्षहोत मान।

দীর্য-তিপানী । হাসিরী কংখন ব্যাস, খুনহ ভারার ভার स्कारनी कथा स्थापार । अक निन (भौगेंगांगी, निमिट्ड खेनत मनी, कृष्ण वनि कुट्काटक व्यापात ।। वाधिक। वनिया कांत्र, ह दिनिद्दक्षेत्री बाह्य, मत्त्र त्थ्रम ब्रह्मट्ड व्यक्तिम । (इसकाटल नज़श्री, दाधादत आमा कति, निक शांटक कदत त्वन (वन्द्रेश कांडिएश क्ला कांन, त्वरण (पर्न नन्मनांन, निन्द् त नीमस करंद्र कारना। शर्द नद्य वास्त्रवाः शत्रहेन नार्त । इत् क क रामन मारक कारना।। एत भरत कार्त वीत्रं शास्त्र भारत मुकाश्त्र, जुटन निया वाधिकात भटन। नाकारत स्माहिकी नाल, जानीन विज्ञ ताक, निव्यक्ति काल काल दरन । पुरुष्टाशंत शताहेत्व, पुरुष्टावन काहिश्वत्व, छिति वादाव मान क्रेन। मानव मानव य हा। श्रकाम ना करत डाई', डिडियनि हिडिया किनना। छन्नित श्रीड श्रुथ, मनिन रहेत पूर्ण, मानाक्ति ভागित खो बक्का ए। कि আভরণ মনি, ভূতলে পজিল ধনী, ভাব দেখি ভাবেন ক্রিডক किंदिलन मझ मा, मानाउ । देन छत्। खीमधीत भूका मान अति। खीहर्गा धन न वाम, इत्रांत प्रित्माम, भिन दारम (बह भन्डांत ।।

च्या की मंदीत मान चक्करम जी कृदक व दहकी।

প্রার। বেখিয়া বাধার মান রাজীরলোচন। মনেতে ভাবেন তবে কি করি এখন। চন্দ্রাবদীর কুন্তে বঞ্চি বে দিন যামিনী। এই বপে হরেছিল সে কিন মাজিনী। কুঞ্জ কৈতে আমারে কাহির করে দিন। রুন্ধা আদ সংগী ভাতে, কজ-বুরাইল। আনিও সা বস্তুকত ধরিয়া চর্বা। ভ্যাপি বিহল ভক্ত সে মান ভ্রম। প্রবেজ্ঞানি নিজ মানে ভাত্র।

विद्यान । अधिवस कृत्मात महेशा छ लटेम भा देशांशी देश सद्य एटवं मान क्य कवि । भूर हर्बि (नहें नमा घड़ाटन किट्नारी ८४ (वर्षि मोझन मान जाहा इहै एक बाजा। इहेटव किंकिन बज अहे मान ছाए।।। कुछ् कथा (रकु कछ टे र स अलगान। अड निन मुका द्वान ना निनाम द्वान ।। आर्निश अर्थुक मि घटनादत विनाहे। क्वण कति एक भाग भारत है थे वाहे ।। অপরাধ দিতে নারি আছি অপরাধি। না পাঁই উপায় এবে कि कार्शिटक माथि।। शार्य धर्व माथित नहिर्द मन्। मिथि म थिया किथिए। भरेंब्राड करिव उर्दा (य इस्र डेिड এত ভাবি র'ধাকান্ত রাধা কাছে গিয়া।। সাধেন অনেক মছ বিনয় করিয়া।। ভাছাতে রাধার আর বেছে গেল মান নয়নের ভলে ভাসে কমল বর:ন।। কিছুতে না কন কথা क्विन द्वानन। आधान क्वाचाल क्लाल आलन।। ভাষা দেখি নরহরি ভাবেন অপার। কেমনে করিব ভঙ্গ এ मान ताथ तथा करत क्रम मदन मदन कविशा हिन्दू। (की-শকে কংকে পাারী ভ্ল আর্বার ।। সাধিল্য বছ্টত কংশ-ना अर्निट्न। निटास स्मादक यकि वेच्छन कौत्रलेश एटन चांव किया कल थाकिया डवाटन। सूट्य याक मान लाख घार यथा छ। ८ व वर्षा राधा का छ। छ। जिल्हामन । कु ঞ্জের ছুয়ারে পিথা বলিলা ত্থন ॥ তিয়াদিত ভাবেতে বলিয়া मादाश्व । कालमात कहरकार्कि कटरम मर्भम ।। कलकारन दह ছরি হেরিয়া আপেন। इनस्टिंग ডাকিয়া কিছু ক হেন বছন।। डेशनक मार्ब इन्हें छनान दाशाहा विक कटर मिन् रायन नां का कुरा भारता

चय किए करन बित्र थात्र मान क्श्नन त दहन।

नव जिल्लो। उट्न इन कति। नट्टन श्रीत, तक कति नथीनाम। भून महत्वी। अम्बन्त (इती, कत्रकार्षि स्टम्प्टन। उतीन्य नवम, नभारत नभाम, चंद्रित कार्ब माटन। ज नभाम एन। कर नथी भून, धन मान आन नोटन । अन्यास कि (क्षेम श्रीहर्ण्ड्न, गाँडी करत अलगान। क्ष्मम क्ष्मात, वळ (कांच आत, रमर्दर काम्स क्षान।। आगि (महे क्ष्मा) चिन गहेमा, कत हिस्क कहे रहींचे।। देखनी क्षेडार ज, गाँउत निक्टर क्ष्मर कांनिय गथी।। यथन क्ष वानी, क्ष्म हक्रशारि, गर्या-वित्रा मदीनर । छनित्रा किरमाती, छिनि बीहर्ति, अखित हहेता मरन । कृष्म अम्मन, खगरा विक्रम, हर्क्स स्मान क्षम बरत । कृर्त राल मान, हरत विव्यान, छिन्न कांक छन्द वादत । कृर्त राल मान, हरत विव्यान, छिन्न कांक छन्द वाह्मा आगित्रा, बीक्रस्क हाहिया, करहन मधुत खरत। आहि कांनि कहे, रम्बर्ट कुन्मत, रमित राथि नहेन्दत।। करहक वित्रा, कांक्या हहेता, धरिन कुरक्षत कता। रमित्र गथीनन, हांगर कथन, विक्र करह उपस्त ।

व्यथ मान उक्षनात्य इन्ता श्रीशंधादक वृक्षान।

শ্বার। তবে পারী কৃষ্ণ কর করিয়া ধারণ। একে একে कर्त हिरू करतन मर्गन ।। नर्दा नुमक्त चार्ट क्रमक्त नाई ! रिश्विया वित्यम हिन्त स्टेलिन दारे।। दुक्तिलन मान छक्र कदि वात हन। कतिना ठाजूती हति निहा जमकन।। 45 छ।वि বিধুমুখী অধোমুখী হয়। হানিয়া বলেন তবে প্রভু দরাময় कई थिए कि त्विटन कई विट्निष्ठा। कि कातरन दहछे ছুথে বহিলা বলিয়া।। বাই কন কে বুকিবে চাতুরী তোমার बिहा हत्न मान छक्र किंद्रल जामाता। अमेक्न किंहू नाहे স্কল মক্ষর। শঠশিরোমণি ভূমি জান কভ ছব।। কার नाक्षा एवं हक वृत्वावादत शादत । द्वा-मान कति मान शादा-वात जाता। अञ्चलि द्रांशा मधी नित्र हरेला। शामि इन्हा-नथी ज्द करिएक नाविना ॥ कि कांत्रदन बांद्र वांत्र इड বিল্লমান। আপনি হারালে ভূমি আপনার মান।। কহ দেবি मकिनी (कम्दन कुलिएन। औक्रास्त्र अमक्न कि कार्य वृ काल ॥ बनाइब कर्छ। त्यहे बनाए कूमन । छोत्र कि क्थन পারী আছে অনুস্প । ক্লের মরণ করা করিলে বিশাস द्वाथा मूड्रा मृड्राणि इस यात्र श्रीम ।। स्त्रि मादम मृड्रा स्ट्र क्र नाट्य क्रम । क्रिकटल वृचिटक क्रम क्रांशा मत्र ।। (य (शक त्य दर्शक कांत्र नाइन कार्का नाई) बिक्टकंत्र वार्का जीवन

रेनम अर्था बाह्य। बर्धिक शिक्षणी है शिक्षण परिश्वा। बन-हेला श्रिक क्षेत्र बाट्यटल महेशा।। विक करह हिन्द हित वन मुक्किन। मानक्ष्म कथा अर्थ है हैन नमालन।।

ज्य द्वारा कृटकृत युक्तावटन शमन।

मीर्च जिल्ली। उदर इदि द्वांश मदन, बनिटलन बक्नांगदन पूद्ध त्तन छेज्दबन इश्य । मधीनन मन्त्र कट्न, त्मर्व कदन अकमत्न, किथकेल बारक जारक सूथ।। शद्र अने विवत्ने, जनकद्र নারায়ণ, পুনঃ সেই মুক্তাবন স্মরি। কারে কিছু না বলিয়া, মনে विष्टातिया, উঠि लिन दाथा १८७ धति ॥ माम नर्षेत्र शन, खनन करिका वन, क्रांचर राना गुळावरन । छारा प्राचि वाधा मदी, अधिवसु मानवकी, श्रीत काहा सामित्वन मदन ॥ द्वाषात्र धतिहा होत्र, कृषिशा कात्मक लोख, मान लांब करियो ভঞ্জন ৷ মুক্তাময় অল্ভার, মুক্তার গাথিয়া হার, জীমতীরে পরান তথন।। यह गरहतीयर्ग, मूलुमत आजतर्ग, गांका-हैया पिता (महेकट्या वाश्यान माजिया तस्क) तांचाद्व लहेस्। नत्य, विनिद्यन तृषु निःशानत्न।। सति कि सूनान क्ल, बिचू-वतन अनुबन, किवाबान अधि मरनाहत । य बन प्रथिष्ठ गटन, महानदन्त मटहाद्भादन, मुख्यादन छिन्नि समद्वी। बीहर्मा अनाम बतन, ताथाक्ष्य भवंडतन, व्यथितनदेव तनई बहे बत ! निश मम श्रतकृषः हाश्ति। कक्रवा पृक्तः कुनात्न तार्थश् नितंखत् ॥

अब क्तीत प्रशं कृतित भू ३ अभू।

পরার। এত শুনি মুনিগণ হয়ে ছাইমন। ব্যাদের নিকটে কিছু করজোজে কন।। মুজালভাবলী কথা অমৃত সমান। আবণে প্রবণ অবণ স্পৃহা নহে সমাধান।। অভএন করি প্রভু এক নিবেগন। অমুগ্রহ করি কর সন্দেহ ভয়ান। কচিলা কুটিলা ছুই নভী কি অস্ভী। কি কারণে গাইলেক এতেক ছুর্গজি।। কোন হেভু প্রীক্ষায় ছুক্তনে ঠেকিল। কেশ সেভু ছুর্গজি কেন ভলেতে পভিষা।। লোক মানে অপমান সম্মাহি ভাগ। এ ভাগ পাইজা দোহে করি কোন পাল।।

বাস কর মুনির্মণ শুন সে ভারতী। ভটিনা কৃটি সম ল নাহি ভেছ সভী। শুনীসাধী বাল মনে বাজে জগলার। সেই ভেছু ভুক্ত করে জগত সংসার। ব্রিজ্বন মধ্যে নারী জাছে শুন্ত করে জগত সংসার। ব্রিজ্বন মধ্যে নারী জাছে শুন্ত করে জাতিশ কুর্মাত। জাগিলের পতি রুক্ত ভাবে উপপতি। ক্রুক্ত পরিবাদ দিয়া ব্রহলাগণে। রুক্তে ভক্তে উপহাস করে প্রতিশ শে। অবিবস্তু রাধারক জেশ অভিলয়। এই হেডু মহাপাপ জন্মিল হৃদয়। পাপ হৈলে প্রিভাপ পার মহাজন। বেদের বচন এই না বাল বগুন। মর্প জার জেশ জন্য জটিলা কৃটিনা। মহাপাপ জন্মি ভাপ এতেক পাইলা।। এত্যদি কৃতিনা। মহাপাপ জন্মি ভাপ এতেক পাইলা।। এত্যদি কৃতিনা। মহাপাপ জন্মি ভাপ সাল্ভোব হৈলা যত মুনিগণ।। আছুর্মা প্রসাদ কহে জ্বিক্তিন চরণে

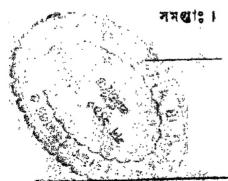
ज्यथं क्रिद्राधाक्रदकत सूत्रल क्रि वर्गन ।

टोशबी। कि मुख्य सुम्बद्ध, किटमाड़ी किटमाइ, दिश्हा-श्राताश्रत, विश्वल (सार्व । सिया चनाकति, नांक गहन्त्री, क महापि थाँद्र में न निर्धार्श । बार्श महनार्द्र नाम करन-बार मन कन्धरं, हांडक लाका। जीयकी वर्ष, छाटह सुर्वातन, শীমুতে যেমন, বিজুলি শোভা।। শ্যাম শিরোপরে, শিখি भूष्ट्र थट्ड, कड माड कट्ड, छात्र इतित्र । तथामिट्ड दवनी, रक्त वर्ण कनि, कुर्खणनी मनि, जूनिङा जात्र ॥ एत्पर नि-म्पूर्व अञ्चल रेन्त्र, कशांटन विन्ध्रा. केंगक खद्र। किटम त कशादना, कतिहार बाला, अ.म डाल डाल, जिलाक बद्र । जीमृथमधन, डेर्गा डेक्कन, दक्क डेट्शन, किमिना हो। सर्म यूर्णन, छाट्ड स्थारन, नम मंड मन, क्यून घंडे।। क्यान नमान, कारमत क्लान, करोटक रन वान, खाकन श्रीम र्यम मूल वस, अतिहा काल्यू, स्माट्ट स्माश ल्यू, श्रीनटह कांत्र । अधानम् काम, कामदत बुकान, एका करत नाम, उछिड र्वाम । गुलाभन्न हात, बाना चलकात, बदलद दिंगहात स्थित प्रांत । श्रांत्रधान बाटन, अधिनिकारन, श्रीख्यारम सुन्दर नाटक किया दम सम्मन, कृष्टिक पुन व अधुत स्थाय, शदर विक्री जा।

शामश्यासन, (मेरित अवन, सूत्रक छर्नन, उद्भन कात्र। মরি কি পুরুষ, হেরিয়ে সে বৃষ্ণ ভক্ত মনোভঙ্গ শুঞ্জরে ভার मुक्तायन मार्यः अकाल विवादक (प्रवीदम्य मारक, रप्रवाहा मार विधि कामि छव वक्कन वामन अद्भागक एमव काइन करन ॥ আদি মুক্তর্বন, বিধাতা ভখন,। হেরিয়া ররণ। নয়ন ভরি। गर सूर्वनातः, जुनगी हन्मत्म, अंचि गर्यातम, श्रुवन कृति। युका नम र्शित्व, कुडाक्कलि देश्या, खबन कविश्य, करिल कड । ब्रा-प'कूष उत्र, इहे । तन्य, दिन खनाख्य, मन वाञ्चित । वाह्र (मब कम, खन मुमिशन, देश्ल मुख्यावन, विश्व मुमि। शुरु इक्टामत, इक्टा यटन व्य, गर भशीहत, एथात यान।। निद् পাদি বন, নিকুঞ্জানন, বির্ক্তের স্থ ন ক্রেকর যত। ভা-श्टि ध्रभान, श्रेल शनन, श्रांन मुख्यावन, मरनत मंड।। विह यत हि, शिला मधुशुत्री, त्म वन मःशावि, कृतिना वन। এতেক বচন, खिनिया **७४न, य**ठ आ विश्व, म:खाय प्रन ।। এই অগ্রসার, মুক্তির আধার, যে শুনে ভাহার, কল্শ নাশে। ধন পুত্ৰ জয়, ইংকালে হয়, অন্তে নিবসয়, বিষ্ণুৰ বালে ।। যদি कानकन, बधित कांत्रन, कतिष्ठ खन्न, खन्छ इत्र । क्तिश यजन, शृंदर् याखन, क्रिल (म जन, পতি পার।। वक्का আদি নারो, দুঢ় । জ করি, তিন পক ধরি, প্রবণ করে। পুত্র বতী হয়, সৌভাগ্য উদয়, হারা পতি পায়, হরির বরে।। बिहुनी श्राटन, मदन्त बाइलाटन, व्राधाक्रक श्रदन, यांहदन मात्र। निश्ची श्वरुती, श्हेश काञाबी, छवट्यात वाति, कत्र श्रीत । उर कुषा वरण, ममस्मत मरण, याहे आमि हरण, छा-मात वाम । निख्वाम मारम, कित सूर्य वारम ताबिवा छलारम श्रांड वार्ष ।

অথ গ্রন্থকারে পরিচয়া।

कलिकोडा इक्रिकां निविधिक महमात्र । शहनार (मणना) किएन छोडात । तामकेट्य नृत् नाटम खाम स्विधा छ। शक्ति वाहिनी पूर्व जार्म अपूत्र । त्रहे आदम निवर्गाङ बङ्गिन इसे । जीवाम मक्त वाहम्मिक महानस । गर्वामार সুপারণ স্পতিত অতি। প্রতিগাঞ্চান বিজ তাহার সন্ততি वर्यमाञ्च बावमाइ किति अक्शरें । श्रेतान धमक करतन ভত্তেব निकटि।। मश्कृत वृक्तित्त मकत्न रह छ। द। भार ছেতু নিজ্মনে, করিয়া বিচার ।। বছবিধ বুখনত মন্ত্রা করিয়া माधादन समगटन्द्र हिटलत नातिशा। मुख्यान डोवली कावा कतिच प्रवन् । व्यनीशारम जूत्यत्व भातित्व गर्वक्रम् ॥ भाव-তের বোধ থেডু কোন্হ স্থান। যত্ন করি লিখিগ্রছি মুদের প্রমাণ । বিশ্বভাগে ভাষা তার আছবে বিভার। ক্ষ হয়ে Cक्षिद्वन एवं बागमा यात ॥ এই किका हारि खन्तर मान-शर्देश । बहुदेश यमालि दमाय थाटक दकाल ऋदिन ।। दम दमाय ভাজিয়া কর ওণের গ্রহণ। ২ংসসম নীর তাজি কীরের ভক্ষণ व्यास्त्रक भामभट्या अभ्या अभ्या किया किया किवा पूर्व कर মনক্ষাম।। শিশুরাম হতেক্ষেশ্যাম। চরণেরে। নিরাপদ क्रिया बांधर निबन्धरव ।। अक्रिशक्षमाम वाटक खिक्ष हवन । इब्रिइति वन मत्य श्रन्थ ममालन।।



क्षिकांको कि भूत रवा छ अपायन बनाएकड रनात ३५ नम्ब छ वरन क्षिकांकभूकत सट्ट अक्षिकांकत करके के साथ कार्य मुख्यित